ऐसा मेरा विनीत निवेदन और सुझाव है। इन शब्दों को मैं बिना किसी तरह की हिचकिचाहट के, शुद्ध हृदय से निवेदन करने का साहस करता हूँ। अब जमाना पल्टा खा रहा है। जनता अन्धकार में रहना पसन्द नहीं करती। नकली साधुओं को सावधानी से काम करना ही उचित होगा।

इस महान् उपयोगी ग्रन्थ रत्न का संग्रह मेरे स्वर्गीय पूज्य पिताजी ने ही किया था। आप की उत्कट अभिलाषा थी कि इस ग्रन्थ को प्रकाशित करा कर अमूल्य वितरण करके सर्व साधारण की सेवा करें। इस तरह की उच्च भावना दैव संयोग से कार्य रूप में परिणत न कर सके और मेरी तरफ संकेत करते हुये स्वर्गवासी हो गये। अतः मैं अपना मुख्य कर्त्तव्य समझ कर श्री स्वामीजी के रहस्यमय परोपकारी पद्यों को, प्रकाशित करके अपने पूज्य पिताजी की आत्मा को शान्ति पहुचाने के निमित्त, और सर्वसाधारण की सेवा के लिये यथाशक्ति स्वल्प मूल्य में त्याग भावसे अर्पण करना चाहता हूँ। आशा है आत्म कल्याणार्थ विज्ञ जन इसको स्वीकार करेंगे और इन पद्यों को कंठाभरण बनाकर निष्पक्ष और निःस्वार्थ भाव से आत्म कल्याण का साधन समझ कर मेरे इस प्रचार कार्य में सहायक सिद्ध होंगे, और कृपा करके अपनी अपनी सम्मतियों को भी भेजें ताकि मैं इस ग्रन्थ रत्न को और भी लोकोपयोगी बनाने का प्रयत्न करूं और इसी तरह की और भी अनेक धार्मिक पुस्तकें गुप्त रूप से रखी हुई हैं, जिनका प्रकाशन होना श्रावकों की भलाई के लिये परमावश्यक है। अगर भारतीय विद्वानों की तरफ से मुझे इस कार्य में प्रोत्साहन मिलेगा तो, इसके बाद दूसरा उपहार लेकर जल्दी ही उपस्थित होने की इच्छा है।

यद्यपि मेरी समझ से यह पुण्य कार्य अत्यन्त उपयोगी है, तथापि कई सज्जनों का मत है कि इस ग्रन्थ को इस वक्त प्रकाशित करना कर्ण कटु होने के कारण असामयिक है। विचारणीय विषय है कि, जिस तरह से कड़वी औषधि शारीरिक रोगों को दूर करने में सहायक समझी जाती है, उसी तरह मानसिक रोगों को दूर करने में मनोहर शब्द हितकर नहीं होते। इसकी पुष्टि अनेकानेक स्थानों पर नीतिकारों ने की है। मैं दावे के साथ कहता हूँ कि इस पुस्तक को पढ़ने से समस्त शिक्षित श्रावक समाज मे एक तरह की हलचल पैदा हो सकती है, और वर्त्तमान शिथिलाचारी महात्माओं को भी करवट बदलनी पड़ेगी, नहीं तो उदर निमित्त भेष के अस्तित्व को कायम रखने मे किंचित् दुःख होने की अवश्य संभावना है और स्वार्थी तथा अन्ध विश्वासी आचारहीन साधुओ तथा श्रावकोंसे मैं बार-बार प्रार्थना करूंगा कि वे इन अमूल्य गुणमयी गाथाओं को विचार पूर्वक पढ़ें, मनन करें और सबसे पहिले अपने आप मे घटावें, फिर दूसरों के गुणदोषो की तरफ संकेत करने की इच्छा कर सकते हैं। संसार मे गुरु और कुगुरु दो शब्द ऐसे हैं जो सदा विद्यमान रहते हैं और रहेंगे। इसीलिये पूज्यपाद आचार्य भीषणजी ने बिना संकोच के निडर होकर कुगुरुओ की करतूत का विस्तार पूर्वक पांचवीं और छठी ढालो में वर्णन किया है।

इन २३ ढालों को विचार पूर्वक पढ़ने और मनन करने पर पाठकों को प्रत्येक ढाल मे नवीनता प्राप्त होगी, और शान्ति मिलेगी। जैसे प्रथम, द्वितीय ढाल में आचार्य श्री भीषणजी ने साधुओं के आचार, विचार, कार्य, अकार्यादि दिनचर्या, और तीसरी में यह विशेषता है कि आज कल के साधु महात्माओं में किस तरह पाखंड फैला है और बुद्धिमानो को भी इनके प्रपंच का पता लगाना कठिन हो रहा है। चौथी ढाल में आप ने मुख्य कर दान, दया, आहारादि आवश्यक कार्यों का विवेचन सूत्रों और सिद्धान्तों में वर्णित आस्तिकता को साकार उपस्थित किया है। पाठकों को पढकर अवश्य लाभ लेना चाहिये। पांचवीं से लेकर सातवीं ढाल तक साधु भेषधारी पाखंडियों ने क्या २ अन्याय और घृणित कार्य किया है इत्यादि बातों को श्री स्वामीजी ने निर्भीकता के साथ स्थानक, मठ, उपासरा आदिक स्थानों के बारे में भी अपना मत प्रकट किया है। आठवीं ढाल मे एक शहर एक ग्राम में साधु साधवियां किस तरह निवास कर सकते हैं, आहार पांणी गोचरी तथा गृहस्थियों के साथ सम्बन्ध, पुस्तकों का संग्रह, इत्यादि विषयों पर बारीकी के साथ लिख कर समझाया है। पाठक आलोचनात्मक दृष्टि से पढ़ें। दशवीं, इग्यारहवीं ढाल में श्रावकों के साधुओं के प्रति कर्त्तव्याकर्त्तव्य कार्यों पर प्रकाश डालते हुये अनेकानेक उदाहरणो द्वारा समझाया है कि, गृहस्थो को किस तरह से आहार पांनी वगैरह वस्तुएं देनी चाहियें। इत्यादि बातों का दिग्दर्शन है। बारहवीं मे साधुओं का मुख्य आचार, गुरू चेला का सम्बन्ध, और उनके गुण, दोष, सांच, झूठ, प्रायश्चित्तादि को व्यक्त किया है पाठक इन से लाभ उठावें। तेरहवीं और चौदहवीं ढाल मे "चोर चोर मौसेरे भाइ" वाली कहावत को चरितार्थ करते हुवे, भारी कर्मी जीवों का परिचय गुरु, कुगुरु, के लक्षण और गुरू किसको करना चाहिये इत्यादि विषयों को सावधानी के साथ अनेक उदाहरण जैसे गोशाला, जयमाली, सुखदेव सन्यासी, सुदर्शन सेठ वगैरह का देकर समझाया है। पन्द्रहवीं और सोलहवीं ढाल में साधुओं श्रावकों को उपदेश द्वारा भारी कर्मों से बचने का उपाय तथा दान, दया, देश, काल, पात्र इत्यादि विषयों की ज्ञातव्य बातें तथा पाप पुण्य की परिभाषा पर प्रकाश डाला है। सत्रहवीं ढाल में श्रावको को उपदेश, साधुओं के प्रति श्रावकों का मुख्य कर्त्तव्य, आर्त दानादि से स्थानको का निर्माण, कुगुरुओ के कपट वगैरह २ अकार्य कार्यों का खुलासा किया है। अठारहवीं ढाल मे वस्त्र, ग्रन्थ, पाट, बाजोट, कपटी साधुओ की करतूत, कुगुरुओं की पहिचान, पडिलेहणादि क्रिया का जिक्र है। पाठक गण पढ़कर ज्ञान प्राप्त करें। उन्नीसवीं और बीसवीं ढाल में आधाकर्मी आहारो का परिचय, शुद्ध साधुओका लक्षण, उनकी विशेष दिनचर्या, खाना, पीना, सोना, उठना, बैठना, वगैरह २ मुख्य कार्यों का सम्पादन किया है। इक्कीसवीं और बाईसवीं ढाल में साधुओ को, आहार कैसा देना चाहिये, किन कार्यों से साधुपना नष्ट हो जाता है। अर्थ, अनर्थ, श्रद्धा, भक्ति का विस्तार पूर्वक वर्णन है और सबसे अन्त की २३ वीं ढाल मे, जीव, अजीव, पाप, पुण्य, बन्ध, मोक्ष इत्यादि गहन विषयों का सुचारु रूप से श्री आचार्य भीखणजी

स्वामीजी ने बहुत ही उत्तमता के साथ वर्णन किया है। आशा है पाठक गण, इसको पढकर समझ कर अपने आत्मा का कल्याण करेंगे।

इस "सरधा आचार की चौपाई" के अलावा श्रीमान् आचार्य श्री भीखण जी के द्वारा लिखित कई ग्रन्थरत्न हैं जैसे अनुकम्पादान, जिन आज्ञा समकित, श्रद्धा आचार, बारह व्रत, एकसौ इक्यासी बोल की हुंडी, इत्यादि। तथा तेरापंथी भाइयों के काम के और कई धर्म ग्रन्थों का प्रकाशित होना बहुत जरूरी है। मैं उन्हें भी प्रकाश में लाकर पाठकों की सेवा करूंगा। स्वामीजी ने परोपकारार्थ, एक से एक अमूल्य ग्रन्थों को लिखा है। सो प्रकाशित होने पर पाठकों को सुलभ होगा।

अन्त में मैं उन महानुभावों को कोटिशः धन्यवाद देता हूँ जिन्होंने मुझे इस पुस्तक के संकलन में सहायता प्रदान की है। शीघ्रता और मेरी इस विषय में अनभिज्ञता तथा प्रथम प्रयास के कारण अनेक त्रुटियां रह गई हैं अत: इसके लिये मैं विद्वानों के सन्मुख करबद्ध क्षमाप्रार्थी हूँ कि वे विद्वान् पाठक इन भूलों से मुझे भी सूचित करने की कृपा करें। जिससे अगले सस्करण में वे भूलें न रहने पावें। त्रुटियों को सुधारने का मौका मिलेगा तथा उन विद्वानों का मैं सदा आभारी रहूँगा जो मुझे इस कार्य में पथ प्रदर्शक बनकर सहायता करेंगे।

आज कल दुनियां की स्थिति डावांडोल है। बाजारों में इच्छानुकूल वस्तुएं नहीं प्राप्त होतीं। प्रेसों की असुविधाओं का सामना करते हुये भी मैंने साहस पूर्वक इस परोपकारी कार्य को यथाशक्ति शीघ्रता से ही किया है। अतः फिर भी प्रार्थना है कि प्रेस सम्बन्धी त्रुटियों को भी पाठक क्षमा करें। द्वितियावृत्ति में इसका सुधार करने की अवश्य ही अभिलाषा है।

समस्त तेरापंथी भाइयों से सादर प्रार्थना है कि इस उपरोक्त पुस्तक की जितनी भी मूल प्रतियां मुझे उपलब्ध हुई हैं उनमे अशुद्धियों की भरमार है, अगर किसी भाई के पास इस ग्रन्थ की शुद्ध प्रति हो तो, कृपा करके मुझे सूचित करें. मैं दूसरे एडीशन मे उस प्रतिसे सहायता लेकर टिप्पणी के साथ, संशोधन पूर्वक प्रकाशित करके उसकी कापी उनकी सेवा मे अर्पण करूंगा।

मैं आखीर में चन्द्र प्रिंटिंग प्रेस के प्रबन्धकर्ता का बहुत आभारी हूँ जिनके अथक परिश्रम व तत्परता से पुस्तक का प्रकाशन ठीक समय पर हो सका।

सं० २००२
विजयदशमी

भवदीय—कृपाकांक्षी—
सुमेरमल कोठारी
चुरु

श्री हंसराज बच्छराज नाहटा
सरदारशहर निवासी
द्वारा
जैन विश्व भारती, लाडनू
को सप्रेम भेंट —

* सरधा आचार की चौपाई *

॥ अथ श्री भीषण जी स्वामी कृत सरधा आचार की चौपाई लिख्यते ॥

॥ दोहा ॥

पहिला अरिहन्त नमू, ज्यां सारच्या आत्म काम ।
चले विशेपे वीर नें ते शासण नायक साम ॥१॥
पिण कारज साजी आपणां पहुंता छै निर्वाण ।
सिद्धांने वन्दणां करूं, ज्यां मेटचा आवण जांण ॥२॥
आचारज सहु सारपा गुण रतनांरी खांण ।
उपाध्यायनें सर्व साधु जी, ए पांचुं पद वपांण ॥३॥
वन्दिजे नित तेहिने, नीचो शीश नवाय ।
ते गुण ओलख वन्दणा करो ज्यं भव २ रा दुख जाय॥४॥
सुगुरू कुगुरू दोनूं तणी गुण विना खबर न काय ।
प्रथम कुगुरू नें ओलपो, सुणो सूत्ररो न्याय ॥५॥
सूत्र साख दियां विना, लोक न माने वात ।
सांभल नें नर नारियां, छोड़ो मूल मिथ्यात ॥६॥
कुगुरू चरित्र अनन्त छै, ते पूरा केम कहाय ।
थोड़ा सा प्रकट करूं, ते सुणज्यो चित लाय ॥७॥

❀ ढाल पहिली ❀

(ऊंधी सरधा कोई मत राखो—ए देशी)

ओलखणां दोरी भव जीवां, कुगुरू चरित्र अनन्त जी।
कहतां छेह न आवे तिनरो, इम भाख्यो भगवंत जी॥
साधु मत जांणों इण चलगत सुं॥१॥
आधा कर्मी थानक में रहे तो पड्यो चारित्र में भेद जी।
निशीथ रे दशमें उद्देशे चार मास रो छेद जी॥साधु०॥२॥
अठारे ठाणां कहा जुवा जुवा, एक विराधे कोय जी।
बाल कह्यो श्री वीर जिनेश्वर, साध न जाणों सोय जी॥सा०॥३॥
आहार शय्या ने वस्त्र पातर, अशुद्ध लियां नहीं संत जी।
दशवैकालिक छठे अध्ययने, भ्रष्ट कह्यो भगवन्त जी॥सा०॥४॥
अचित वस्तुनें मोल लिरावे, तो सुमत गुपत हुवे खंड जी।
माह व्रत पांचो ही भांगें, तिनरो चौमासी दंड जी॥सा०॥५॥
ए तो भाव निशीथ में चाल्या उगणीस में उद्देशे जी।
शुद्ध साधु बिण कूण सुनावे, सूत्र नी ऊंढी रहस्य जी॥सा०॥६॥
पुस्तक पात्रा उपासरादिक, लिरावे ले ले नाम जी।
आछा भूंडा कई मोल बतावे, करै गृहस्थ रो काम जी॥सा०॥७॥
ग्राहक नें तो कह यों कहिजे, कुगुरू बिचे दलाल जी।
बेचण वालो कह्यो बांणियां, तीन्यां रो एक हवाल जी॥सा०॥८॥
कृय विकृय मांहीं वरते ते तो, महा दोष छै एह जी।
पैंतीसमां उत्तराध्ययन में, साधु न कह्यो तेह जी॥सा०॥९॥
नित को बहिरे एकण घर को चार्यां में एक आहार जी।
दशवैकालिक तीजे ध्ययनें, साधु ने कह्यो अणाचार जी॥सा०॥१०॥

जो लावे नित धोवण पांणी, तिण लोप्यो सूत्र रो न्याय जी।
बतलायां बोले नहीं सीधा, दूपण देवे छिपाय जी ॥सा०॥११॥
नहिं कल्पे ते वस्तु वहिरे, तिण में मोटी खोड़ जी।
आचारांग पहिले श्रुत खंडे, कह दियो भगवंत चोर जी ॥सा०॥१२॥
पहलो व्रत तो पूरो पड़ियो, जब आड़ा जड़े किवाड़ जी।
कूंटा आंगल होड़ा अटकावे, ते निश्चय नहीं अणगार जी ॥स०॥१३॥
पोते हाथे जड़े उघाड़े, करे जीवां रा जान जी।
गृहस्थ उघार ने आहार वहिरावे जब करे अणहुन्ता फेल जी॥सा०१४॥
साधवियां ने जड़नो चाल्यो, तिणरी मे करो तांण जी।
यां लारे कोई साधु जड़े तो, भागलां रा अहनांण जी ॥सा०॥१५॥
मन करने जो जड़नो वंछै, तिण नहीं जांणी पर पीड़ जी।
पैंतीसमां उत्तराध्ययन में, वरज गया महावीर जी ॥सा०॥१६॥
पर निन्दा में राता माता, चित में नहीं संतोप जी।
वीर कह्यो दशमां अंग मांहे, तिण में तेरह दोप जी ॥सा०॥१७॥
दीक्षा ले तो मो आगल लीजे, ओर कने दे पाल जी।
कुगुरू एवा सूंस करावे, आचौड़े ऊंधी चाल जी ॥सा०॥१८॥
इण धंधा थी ममता लागे, गृहस्थ सुं भेलप थाये जी।
निशीथ रे चौथे उद्देशे, दंड कह्यो जिन राय जी ॥सा०॥१९॥
जीमणवार में वहिरण जावे, आ साधांरी नहीं रीत जी।
बरज्यो आचारांग वृहत्कल्प में, वले उत्तराध्ययन निशीथ जी॥सा०॥२०
आलस नहीं आरा में जातां, बेठी पांत विशेष जी।
सरस आहार लावे भर पातर, ज्यां लज्जा छोड़ी ले भेष जी॥सा०॥२१
चेला करने की चलगत ऊंधी, चाला वहुत चलाये जी।
लिया फिरे गृहस्थ ने साथे, रोकड़ दाम दिराये जी ॥सा०॥२२॥

बिवेक बिकल ने सांग पहिरावे, भेलो करे आहार जी ।
सामगिरी में जाये वहरावे, फिर २ हुवे खुवार जी ।।सा०।।२३।।
अयोग्य ने दित्ता दियां ते, भगवन्तरी आज्ञा बाहर जी ।
निशीथ रो दंड मूल न मान्यो, ते बिटल हुवा विकार जी ।।सा०।।२४।।
बिण परलेह्यां पुस्तक राखे, तो जमें जीवां रा जाल जी ।
पड़े कन्थवा उपजे माकड़, जिण बांधी भांगी पाल जी ।।सा०।।२५।।
जावे वर्ष छमास निकल थां, तो पहलो व्रत मुवे खंड जी ।
विण परलेहां मेले तिनने, एकमास रो दंड जी ।।सा० ।।२६।।
गृहस्थ साथे कहे सन्देसो तो, भेलो हुवो संभोग जी ।
तिणने साधु किम सरधीजे, लाग्यो जोग ने रोगजी ।।सा०।।२७
समाचार विवरासुद कहि कहि, सानी कर गृहस्थ बोलाए जी ।
कागद लिखावा करे आमना, परहाथ देवे चलाए जी ।।सा० ।।२८।।
आवण जावण बैसण उठण री, जाग्यां देवे बताय जी ।
इत्यादिक साधु कहे गृहस्थ ने तो, बेहुं बराबर थाए जी।।सा०।।२९।।
गहस्थ ने देवे लोट पातरा, पूठा पड़त विशेष जी ।
रजो हरण ने पूंजणी देवे, तो भ्रष्ट हुवा लेई भेष जी।।सा० ।।३०।।
पूंछे तो कहे परठ दिया में, कूड़ कपट मन मांय जी ।
काम पड़े जद जाय उराले, न मिटी अन्तर चाहि जी।।सा० ।।३१।।
कहे परठ्यां गृहस्थ ने देई, बोले वले अन्याय जी ।
कह्यो आचारांग उत्तराध्ययन में, साधु परठे एकन्त जायजी।।स०।।३२।।
करे गृहस्थ सूं अदलो बदलो, पण्डित नाम धराय जी ।
पूरी पड़ी सगला बरतां री, भेष ले भूला जाय जी ।।सा० ।।३३।।
थोड़ो सो उपकरण देवे गृहस्थ ने, तो व्रत रहे नहीं एक जी ।
चौमासी दण्ड निशीथ में गूंथ्यो, तिण छोड़ी जिन धर्म टेकजी।।सा०।।३४।।

बिन अंकुश जिम हांथी चाले घोड़ो बिना लगाम जी।
एहिवी चाल कुगुरां री जांणो, कहिवा ने साधु नाम जी॥सा० ॥३५॥
अनुकम्पा नहीं छहूं पाननी, गुण बिन कहे हमें साध जी॥
आचर्चा अनुयोगद्वार में, बिरला परमार्थ लाध जी ॥सा० ॥३६॥
कह्यो आचारांग उत्तराध्ययन में, साधु करे चालतां बात जी।
ऊंची तिरछी दृष्टि जोवे, तो हुवे छकायां रो घात जी ॥सा० ॥३७॥
सरस आहार ले बिनां मर्यादा, तो बंधे लोही री लोथ जी।
काच मणि प्रकाश करे ज्यूं, कुगुरू माया थोथ जी ॥स०। ॥३८॥
दबक दबक उतावला चाले, त्रसथावर मार्‌या जाय जी।
इरज्या सुमत जोयां बिन चाले ते किम साधू थाय जी ॥सा० ॥३९॥
कपड़ा में लोपी मर्यादा, लांबा पहना लगाय जी।
इधका राखे दोपट ओढे, वले बोले मूसा लाय जी ॥सा० ॥४०॥
हृष्ट पुष्ट कर मांस बधारे, करे वगेरा पूर जी।
माठा परिणामा नारियां निरखे, तो साधु पणां थी दूर जी॥सा०॥४१॥
उपकरण जो अधि का राखे, तिण मोटो कियो अन्याय जी।
निशीथ रे सोलमें उद्देशे, चौमासी चारित्र जाय जी॥सा० ॥४२॥
मूरख ने गुरू एहवा मिलिया, ते लेई डूबसी लार जी।
सांचो मारग साधू बतावे, तो लड़वा ने होवे त्यार जी ॥सा०॥४३॥
एहवा गुरू साचा करि माने, ते अन्ध अज्ञानी बाल जी।
फोड़ा पड़े उत्कृष्ट्या तिण में, तो रूले अनन्तो कालजी ॥सा०॥४४॥
हलु कर्मी जीव सुण सुण हरपे, करे भारी कर्मा द्वेष जी।
सूत्र रो न्याय निन्दा कर जाणे, तो डूबे वले विशेष जी ॥सा०॥४५॥

*　　*　　*

॥ दोहा ॥

समदृष्टि आरे पांचमे, थोडी रीध अल्प रहमान ।
मिथ्या दृष्टि बोला हुसी, बहु रीध बहु सनमान ॥१॥
समण थोड़ा ने मूढ़ घणा, पांच में आरा ना चेन ।
भेष लेई साधू तणो, करसी कूड़ा फेन ॥२॥
साधू अलप पूजावसी, डाणांग अंग में साख ।
असाधु री महिमां अति घणी, श्री बीर गया छै भाप ॥३॥
साधू मारग सांकड़ो, भोला ने खबर न काय ।
जिम दीपक में परे पतंगीयो, तिम पडे पगां में जाय ॥४
घणां साधु ने साधवी श्रावक श्राविकां लार ।
उलटा पड़े जिन धर्म थी पड़े नरक मंझार ॥५॥
महा निशीथ में इम कहृयो, गुण विना धारे भेष ।
लाखां कोडां गमां सामठा, नरक पडंता देख ॥६॥
लीध्या व्रत नहीं पालसी, खोटी दिष्ट अयांण ।
तिणनें कहि छै नारकी, कोई आप में मति लीज्यो तांण ॥७॥
आगम थी अवला बहे, साधू नाम धरावे ।
शुद्ध करनी थी बेगला, ते कहयो कठे लग जाये ॥८॥

॥ ढाल दूजी ॥

(चन्द्रगुप्त राजा सुणो-ए देशी)

सीधा घर आपे साधने, बले ओर करावे आधारे ।
एहवो उपासरो भोगवे तिणने, बज्र क्रिया लागे रे ।
तिणनें साधू किम जांणिये ॥ति०॥१॥
आचारांग दूजे में कहृयो, महादुष्ट दूषण छे तिणमें रे
जो बीर बचन संवलो करो तो, साधू पणों नहि तिणमें रे ॥ति०॥२॥

साधू अर्थे करावे उपासरो छायो लीप्यो गृहस्थ वाल रागीरे ।
तिण थानक में रहे तिणनें महा सावज क्रिया लागी रे ॥ति०॥३॥
त्याने भावे तो गृहस्थ कहै, दियो आचारांग साखी रे ।
भेष धारी कह्या सिद्धान्त में, भगवन्त कांण न राखी रे ॥ति०॥४॥
सेज्या तर पिण्ड भोगवे, वले कुबुद्ध के लवे कपटी रे ।
धणीं छोड आज्ञा ले ओरनी
सरस आहारादिक रा लम्पटी रे ॥ ति०॥५॥
संवलो दोष न लागे तेहनें, वले निशीथ में दंड भारी रे ।
अणाचारी कह्यो दशवैकालिकै,
तिण भगवंत री सीख न धारी रे ॥ ति०॥६॥
अनुकम्पा आण श्रावकां तणी द्रव्य दिरावण लाग्या रे ।
दूजे करण खंड हुवो व्रत पांचों,
तीजे करण पांचूही भांगा रे॥ ति०॥७॥

गृहस्थ जीमावण रो करे आमना, वले करे साधु दलाली रे ।
चौमासी दण्ड निशी थमें व्रत भांगी हुवो खाली रे ॥ ति०॥८॥
करे वांसादिक नो वांधवो, वले किया भीतांरा चेजा रे ।
छायो लीप्यो तेह ने कहिये, सारी करम साजारे ॥ ति०॥९॥
ए कदा वस्तु भोगवे, ते साधू नहीं लवलेसो रे ।
मासिक दंड कह्यो तेहने, निशीथ रे पंचमे उद्देशो रे ॥ ति०॥१०॥
वांधे परदा परेच कनात में, वलेचन्दवा सिरकी ने ताटा रे ।
साधू अरथे करावे ते भोगवे, त्यांरा ज्ञानादिक गुणनाठा रे ॥ति॥११॥
थापी तो थानक भोगवे, त्यां दिया महाव्रत भांगी रे ।
भावे साधू पणां थी वगुला,
त्यां ने गुण विना जांणो सांगी रे ॥ ति०॥१२॥

काच चश्मो बरज्यो ते राखणो, जांणे दोषण छै थोड़ो रे ।
पांचमो व्रत पूरो पड्यो, बले जिण आज्ञा राचोरो रे ॥ ति०॥१३॥
गृहस्थ आयो देखी मोट को, हाव भाव सूं हर्षित हूवा रे ।
बिछावन री करे आमना, ते साध पणां थी जूवा रे ॥ ति०॥१४॥
गृहस्थ तेड़न आयो साधू ने, कपड़ादिक बहिरावण ले जावे रे ।
इण विधि करैछै तेहिमें, चारित्र किण विधि पावेरे ॥ ति०॥१५॥
सांम्हो आंणो ले जावे तेड़ियो, ए दूषण दोनूं ही भारी रे ।
यां ने टाले केरायत वीर ना,
सेव्या नहीं साध आचारो रे ॥ ति०॥१६॥
धोवणादिक में नीलोतरी बले, जीवां सहित कण भीन्यां रे ।
एहिवा बहेर सके नहीं, ते परभव सूं नहिं बीना रे ॥ ति०॥१७॥
एहिवो अन्न पांणी भोगवे, त्यांने साधु केम थापी जे रे ।
जो सूत्रमें सांचा करे तो, चोरां री पांत घातीजे रे ॥ ति०॥१८॥
गृहस्थ रा सिझाय बोल थोकड़ा, साधू लिखावे तो दूषण लागे रे ।
लिखायां ने अनुमोदियां, दोय करण ऊपरला भांगे रे ॥ ति०॥१६॥
पहिले करण लिखायां में पाप छै तो, लिख्यां दूषण उघाड़ो रे ।
पांच महाव्रत मूल का, त्थां सगला में परिया बधारो रे ॥ ति०॥२०
उपकरण भुलावे गृहस्थ नें, ओ नहीं साधु आचारो रे ।
प्रवचन न्याय न मानियो,
लियो मुगत सूं मारग न्यारो रे ॥ ति०॥२१॥
गृहस्थ रे उपघरां करे जावतां, किया व्रत चक चूरो रे ।
सेवक हुवो संसारियो, साधु पणां थी दूरो रे ॥ ति०॥२२॥
साता पूछे पूछावे अवतर गृहस्थ ने, अव्रत सेवण लाग्या रे ।
अणाचारी कह्या दशवैकालिके,
बले पांचू ही महाव्रत भांगा रे ॥ ति०॥२३॥

श्रावक नें वले श्राविका, करे महो मांही अकार्य रे ।
साता पूंछे विना विया वच करे, तिण में धर्म प्ररूपे अनार्य रे ॥ति०॥२४॥

अणाचार पूरा नवि ओलख्यां, ते नव भांगा किण विध टाले रे ।
गृहस्थ ने सिखावे सेवणां, लीधा व्रत नहीं संभाले रे ॥ ति०॥२५॥

कारण पड़ियां लेणो कहे साधनें, करे अशुद्ध वहरण री थापो रे ।
दातार कहे निर्जरा घणी, वले थोड़ो बतावे पापो रे ॥ ति०॥२६॥

एहवी ऊंधी करे प्ररूपणा, घणां जीवानें उल्टा न्हाखे रे
अण विचारी भाषा बोलतां, भारी कर्मा जीव न शंके रे ॥ ति०॥२७॥

करे भ्रष्ट आचार नी थापणा, कहि कहि दुःखम कालो रे ।
हिवड़ा आचार छै एहिवो, घणां दूषण को न हुवे टालो रे ॥ ति०॥२८

एक पोते तो पाले नहीं, वले पाले जिण सूं द्वेषो रे ।
दोय मूर्ख कह्या तेहिने पहिलो, आचारांग देखो रे ॥ ति०॥२९॥

पाठ बाजोट आणे गृहस्थरा, पाछा देवण री नहीं नीतो रे ।
मर्यादा लोपी नें भोगवे, तिण छोड़ी जिन धर्म री रीतो रे ॥ ति०॥३०॥

तिण नें दण्ड कह्यो एक मास नो, निशीथ रे उद्देशे बीजे रे ।
ये न्याय मार्ग प्रगट कह्यो, भारी कर्मा सुण २ खीझे रे ॥ ति०॥३१॥

॥ दोहा ॥

घणां असाधु जिन कह्या, ते लोकां में साधु कहाय ।
शंसय हुवे तो देख ल्यो, दशवैकालिक मांय ॥१॥

ते भेष सगलां रो सारखो, ते भोला नें खबर न कांय ।
ब्यवरो वीर बतावियो, बीजे गाथा मांय ॥२॥

ज्ञान दर्शन चारित्र तप, ए चार्‌यां में रक्त अपार ।
एहवा गुण सहित छै, ते मोटा—अणगार ॥३॥

इण विध साध ने ओलखे, ते तो विरला जांण ।
ए न्याय मार्ग जांण्यां विना, करे अज्ञानी तांण ॥४॥
चोथे आरे अरिहन्तथकां, इम हिज खांचा तांण ।
पाखण्ड में पड़ता घणां, कर्मावश लोग अजांण ॥५॥
झगड़ा राड़ हुंता घणां, चोथा आरा मांय ।
पांच माह रो कहिवो किसो, ते सुणज्यो चित लाय ॥६॥

❀ ढाल तीजी ❀

(आहुखो टूटी ने सांधे को नहीं रे—ए देशी)

स्वार्थी नगरी वीर पधारिया रे, गोशालो झगड़्यो छै तिहां आय रे ।
लोक मूंढा सुं वांणी इम वधे रे, कुण सांचो कुण झूंठो थाय रे ॥
पाखण्ड वधसी आरे पांचमें रे ॥१॥
घणां लोकां रे मन इम मानियो रे, गोशालो भाषे ते सत वाय रे ।
वीर जिनन्द नहीं चौबीस मां रे, अणहूंता बोले मूसा वाय रे ॥ पा०॥२॥
कई एक तो उत्तम था ते इम कहै रे, गोशालो जिण ने भी करे अन्याय रे ।
ए सत्यबादी वीर जिनन्द चोवीसमांरे, ए कदही न वोले मूसा वायरे ॥पा०३॥
कितरां एक रो शंसय तो मिट्यो नहीं, म्हानें तो समझ पडे नवि काय रे ।
जिण दिन पिण सगला ही समझा नहीं रे, भोलप घणीं थी लोकां मांयरे ॥
श्रावक गोशाले रे सुणियां अतिघणा रे, इग्यारह लाख इकसठ हजार रे ।
वीर नें एक लाख वले ऊपरै रे, गुणसठ सहस्र अधिक विचार रे ॥पा०॥५॥
जद पिण पाखण्डी था अति घणां रे, तो हिवडा पाखण्डियां रो जोर रे ।
वीर जिनन्द मुगत गयां पीछे रे, भरत में हुवो अंधारो घोर रे ॥पा०॥६॥
तिण में पिण धर्म रहसी जिण राज रो रे, थोड़ो सो आगियांनु चमत्कार रे ।
भब को पड़ी ने वले मिट जायसी रे,
पिण निरंतर नहीं इकवीस हजार रे ॥ पा० ॥ ७ ॥

अल्प पूजा होसी शुद्ध साधरी रे,
आंकुच वीर गया छै भाष रे।
असाधु री पूजा महिमां, अति घणी रे,
ठाणांग मांही तिणरी साख रे ॥ पा० ॥ ८ ॥
ऊग ऊग ने वलि ऊगीयो रे,
ते आथमियां विना किम उगाय रे।
इन न्याय नहीं भवियण धर्म सास्तो रे,
होय २ झट पट बुझ जाय रे ॥ पा० ॥ ६ ॥
लिंगड़ा लिंगड़ी वधसी अति घणां रे,
मांह मांही करसी झगड़ा राड़ रे।
जे कोई काढे तिण में खूंचणो,
तो क्रोध कर लड़वा ने छे तैयार रे ॥ पा० ॥ १० ॥
चेला चेली करण रा लोभिया रे,
एकन्त मत बांधण काम रे।
बिकला नें मूंड २ भेला किया रे,
दिराया गृहस्थ नें रोकड़ दाम रे ॥ पा० ॥ ११ ॥
पूजरी पदवी नाम धरावसी रे,
म्हे छां शासण नायक स्याम रे।
पिण आचार में ढीला सुध नवि पालसी रे,
नहीं कोई आत्म साधन रो काम रे ॥ पा० ॥ १२ ॥
आचारज नाम धरायसी गुण विनां रे,
पेट भरसी सारो परिवार रे।
लंपटी तो हुसी इन्द्री पोखवा रे,
कपट कर ल्यासी सरस आहार रे ॥ पा० ॥ १३ ॥

तकसी देखी आरा टेमलो रे, रिगसी जांणी ने जमिणवार रे।
पांत जिमे त्यां जासी पाधरा रे, आज्ञा लोपी होसी बेकार रे ॥पा० ॥१४॥

* दोहा *

दावानल लाग्यो अधिक बलि, बाजे बाय अथाय।
अटवी मोटी ईंधन घणो, ते किम आग बुझाय ॥ १ ॥
आगी सू ईंधन अलगो करे रे, बले हि बाजतो बाय।
ऊपर जल सूं छांटियां, दोवानल बुझ जाय ॥ २ ॥
तिम भर जोबन व्रत आदऱ्या, बले डीलां में पुष्ट काय।
अति सरस आहार नित भोगवे, तो बिषय बधतो जाय ॥ ३ ॥
अति सरस आहार नित भोगवे, बले खींण पड़ी काय।
बुझावे खेरूं अग्नि ने, सुमति रस पांणी ल्याय ॥ ४ ॥
विषय बधे तिम आहार ने भोगवे, हृष्ट पुष्ट राखण काय।
भिन्न २ कर नेनखे दियो, सूत्र सिद्धान्त रे मांय ॥ ५ ॥
आ भोलप पड़ी मोटी घणी, तिहां जिह्वादिक मुकलाय।
खाणो पहिरणो चित दियो, इण संबले सरणे आय ॥ ६ ॥
भेष लेई भगवान रो, खाद्या लोकां रा माल।
लज्जा संयम बाहरा, कुंदावण रह्यो लाल ॥ ७ ॥
छदमस्त अदला नें ओलखे, ऐ भेष ले भूल्या जाय।
तिणरी खबर किण बिध पड़े, ते सुणज्यो चित ल्याय ॥ ८॥

❀ ढाल चौथी ❀

(थे तो जीव दया व्रत पालो रे—ए देशी)

रस गिरधि हिलियां गटकै रे, सरस आहार कारण भटकै।
भेष लेई आत्म नहीं हटकै रे, त्यांरे चहुंदिशि फंदा लटकै ॥ १ ॥

रंगा चंगा ने डील सतूरा रे, लोही मांस बधावण रूड़ा रे।
लिया व्रत न पाले पूरा रे, ते शिव रमणी सूं दूरा ॥ २ ॥
चांपी चांपी ने करे अहारो रे, डील फटे ने वधे विकारो रे।
त्यांरी देही वधे आडी ने ऊभी रे, साथल पिंड्यां पड़ जाये जाड़ी रे ॥ ३ ॥
घृत दूध दही मीठो भावे रे, कारण विन मांगी ल्यावे।
क्षुदा ल्यावे तसु जणाई रे, ए तो पेट भरण रो उपायो ॥ ४ ॥
कोरो घृत पीवे विधारी रे, आ जुगत नहीं ब्रह्मचारी।
मर्यादा विन करो आहारो रे, तिण लोपी भगवन्त कारो ॥ ५ ॥
ताक ताक जावे घर ताजा रे, साधु भेष लियो नवि लाजै।
घर घर जाये पड़घो मांडे रे, नहीं दियां भाण जिम भांडै ॥ ६ ॥
दातांरां करे गुण ग्रामो रे, पाड़ नहीं दे तिणरी मामो।
करे गृहस्थ आगे वातो रे, नहीं देवे वहरावे त्यारी करे वातो ॥ ७ ॥
श्रावक श्राविकां ऊपर ममता रे, शिष्य शिष्यणी री नहीं समता।
मूंड़े बले काल दुकाल, त्यासूं व्रत न जावे पाल्या ॥ ८ ॥
बान्ध्या थानक पकड़ा ठिकाना रे, गृहस्था सुं मोह बंधानां।
सुख सिलिया साता कारी रे, डूब्या साध रो भेष धारी ॥ ६ ॥
ए लक्षण कुगुरुआंरा जाणो रे, उत्तम नर हृदय पिछानो।
देव गुरु में खोटा जिम धारथ रे, तिणरे छे संसार ज्यादा ॥१०॥
एवा नें गुरु करने पूजे रे, समकित विन संवलो न सूझे।
तिणरो छे भारी कर्मों रे, ते किम ओलखे जिन धर्मो ॥११॥
कुगुरां री झाली पषपातो रे, त्यां ने न्याय री न गमें वातो।
बुध उलटी न मूठ मिठाती रे, साधु वचन सुन्यां बले छाती ॥१२॥
धनावो सेठ बेटी ने खायो रे, कुशले राजगिरी आयो।
इम करसी साधु आहारो रे, तो पहुंचसी मुक्त मंझारो ॥१३॥

॥ दोहा ॥

खोटो नाणो न सांतरो, एकण नोली मांय ।
ते भोलां रे हांथे दियो, जुदो कियो किम जाय ॥१॥
साधु असाधू लोक में, दोयां रो एक आकार ।
भोला भेद नवि लेखवे, ते जांणे नहीं आचार ॥२॥
जिणरी बुद्ध छै निर्मली, ते देखे दोनां री चाल ।
कुगुरां नें नाके करे, साध बांधे पग झाल ॥३॥
जे भारी करमां जिवड़ा, ते रह्या कुड़ी पप झाल ।
पिण छिपाया छिपे नहीं, ते सुणज्यो कुगुरू री चाल ॥४॥

❀ ढाल पांचमी ❀

(बात सुनो एक म्हांयरी रे—ए देशी)

गृहस्थ लीध्यो साधु कारणे, वले ऊपर छावे छान ।
मुनिवर तिणरी करे अनुमोदना, ए कपट बुगला ज्यूं ध्यान ।
मु० ते किम तिरसी संसार मैं ॥१॥

थानक भाड़े लियो भोगवे, ते विटला रा छे काम । मु० ॥
गच्छ वासी मेला रहे, बले काचो पाणी तिण ठाम ॥ मु० ते० ॥२॥
मिनख आतरयां ऊपरे, धन उदक थानक रे काजे । मुं० ॥
मोल लिराये मांही बसे, त्यां छोड़ी लोकांरी लाज ॥ मु० ॥ ते० ॥ ३ ॥
बले जाग्यां बांधण रे कारणे, बले लेवे आउत्तरो माल । मु० ॥
तिण जाग्य मांहि रह्यां, ओ खांफंण वालो ख्याल ॥ मु० ॥ ते० ॥ ४ ॥
लिंगडा लिंगड्यां कारणे, जाग्यां बांधी मठ जेम ॥ मु० ।
मठ वासी ज्यूं माहिं बसे, त्यांने साधु कहीजे केम ॥ मु० ॥ ते० ॥ ५ ॥
ए चालां तो पोते चलावियां, काम पड्यां हुवे दूर । मु० ॥
थानक भायां निमते कहे, कपटी बोले कूड़ ॥ मु० ॥ ते० ॥ ॥ ६ ॥

गृहस्थ वेलादिक तप करयां, तिण पासे घाले दण्ड । मु० ॥
भोला ने पाड्या भ्रम में ते हणे जीवांरा भंड ॥ मु० ॥ ते० ॥ ७ ॥
लाडू करावे कर कर आमना, सामग्री देय दिराय । मु० ॥
ते रस गिरधी चेड़ पड़ा, ते-आंणी २ खाय ॥ मु० ॥ ते० ॥ ८ ॥
कई भेष धारी भूला। कहे, पोखे धरम के नाम । मु० ॥
श्रावक ने श्राविका भणी, दया पालण रे काम ॥ मु० ॥ ते० ॥९॥
पछे गृहस्थ साध श्रावकतणो, भेलो बांधे तुमार । मु० ॥
मोल ल्यावे त्यां रे कारणे, के घर नी पावे आहार ॥ मु० ॥ ते० ॥ १०॥
तिण घर जाय तेड़िया, जूठ्यो रो ताण्यो श्वान । मु० ॥
भारी आहार टूंटा पड़े, ओ पेट भरण रो काम ॥ मु० ॥ ते० ॥ ११ ॥
ए जीमण रो नाम दे दियो, ज्यूं प्रत्यक्ष दीसे गोठ । मु० ॥
काबू करवा आपणो, ऐ चौड़े चलायो खोट ॥ मु० ॥ ते० ॥ १२ ॥
गुरू चेला एक समुदाय में, ते सगलां री एकण पांत । मु० ॥
आहार पांणी भेलो करे, तिण में क्या जांणे भांत ॥ मु० ॥ ते० ॥ १३ ॥
कई चेलां ने जाणे कुशीलिया, त्यां सूं तो तोड़े समभोग । मु० ॥
गुरू सुं न तोड़े संकता, ए तो वात अजोग ॥ मु० ॥ ते० ॥ १४ ॥
श्री वीर जिनेश्वर इम कह्यो, भेलो राखे भागल जांण । मु० ॥
तिण गच्छ सुं भेलाप करे, ए डूबण रा अहनाण ॥ मु० ॥ ते० ॥ १५ ॥
कुशीलिया भागल भेला रहे, तिण रो तोने काडे निकाल । मु० ॥
कूड कपट करता फिरे, वले साधु सिर दे आल ॥ मु० ॥ ते० ॥ १६ ॥
प्रशंसा करे आप आपरी, दूषण देवे ढांक ॥ मु० ॥
भागल भागल मिल गया, किण री ना राखे कांण ॥ मु० ॥ ते० ॥ १७ ॥
ज्यो एकण ने अलगो करे, तो करे घणां रो उघाड़ । मु० ॥
पलमों दूर कियां डरे, ओ खोटो तणो आहार ॥ मु० ॥ ते० ॥ १८ ॥

पांच सुमति तीन गुप्ति में, दीसे छिद्र अनेक । मु० ॥
पांच महाव्रत माहलो, आखो न राख्यो एक । मु० ॥ ते० ॥ १६ ॥
ते गुरू नें पूजावतां, आप डूब्यो औरा नें डुबोय । मु० ॥
इम सांभल नर नारियां, छोड़ो कुगुरू ने जोय ॥ मु० ॥ ते० ॥ २० ॥
भट्टी काढण कलाल तणे घरे, ऊनो पांणी हुवो त्यार । मु० ॥
लिंगड़ा लिंगड़ी शहर में, बांधें मकोड़ ज्यूं हार ॥ मु० ॥ ते० ॥ २१ ॥
कदा पाणी आगे ना वे उतरयो, तो त्यां ही लियो विश्राम । मु० ॥
भर भर ल्याया लोट पातरा, खाली करदे ढांच ॥ मु० ॥ ते० ॥ २२ ॥
पछे फेर भरावे ढामडा, काचो पांणी आंण आंण । मु० ॥
ते भारी दोष छै पछयात रो, ए डूबण रा अहनाण ॥मु० ॥ ते० ॥ २३ ॥
त्यांरा परमपरा में निषेदियो, नहीं बहरणो घर कलाल ॥ मु० ॥
तिण कुण ढुकावा बहरवा, भांगी परमपरा नी पाल । मु० ॥ ते० ॥ २४ ॥
त्यांरे लेखे तिण कुल बहरियां, आवे चोमासी दंड । मु० ॥
आज्ञा लोपी बड़ा तणी, हुवा जगत में भंड ॥ मु० ॥ ते० ॥ २५ ॥
धुरस्युं तो कुल जुगतो नहीं, बीज्यो गृहस्थ ले जावे साथ ॥ मु० ॥
नित २ बहरे तीसरो, चोथो दोष पच्छयात ॥ मु० ॥ ते० ॥ २६ ॥
वलिमन शंकादिक दूषण घणां, पिणचावा तो दूषण च्यार ॥ मु० ॥
ते लिंगड़ा लिंगड़ी टाले नहीं, तें बिटल हुआ बेकार ॥ मु०॥ ते० ॥ २७ ॥
यां में कितलायक बहरे नहीं, कई बहरे तिण घर जाय ॥ मु० ॥
त्यां में कुण साधू ने कुण चोरटा, पेपिणखबर न काय ॥ मु० ॥ ते०॥२८॥
जो स्त्री समझे साधा खने, तो धणी ने देवे लगाय ॥ मु० ॥
मरतोर समझे नार नें, कुगुरु कुबुद्धि सिखाय ॥ मु० ॥ ते० ॥२९॥
सासू बहु मा बेटियां, बले सगा सम्बन्धी मांय ॥ मु० ॥
त्यां ने राग द्वेष सिखावतां, भेद घलावे ताय ॥ मु० ॥ ते० ॥३०॥

कई आवे शुद्ध साधु कने, तो सतियां ने कहे आम ॥ मु०-॥
ते वरज राखो थारे मिनख ने, जावा मत द्यो ताम ॥ मु० ॥ ते० ॥३१॥
कहे दर्शन करवा द्यौ मति, वले सुणवा मत द्यो वखांण ॥ मु० ॥
डराय ने ल्यावो म्हां खने, ए कुगुरू चरित्र पिछांण ॥ मु० ॥ ते० ॥३२॥
त्यांरी अकल लारे कई बापड़ा, त्यां में बुद्धि नहीं लवलेश ॥ मु० ॥
दग्ध घरांरा मानशा, करा रह्या कुड़ो क्लेश ॥ मु० ॥ ते० ॥३३॥
कई आपचकर भूखा मरे, आ खोटा मतां री रैस ॥ मु० ॥
तिणरो दिन छै बांकडो, त्यांरे कुगुरां तणो परवेस ॥ मु० ॥ ते० ॥३४॥
हलु कर्मी डरायां डरे नहीं, त्यांरे रुचियो जिणवर धर्म ॥ मु० ॥
चल जाय कई एक बापडा, उदय हुवा उसभ कर्म ॥ मु० ॥ ते० ॥३५॥
त्यांरा मत तणा घर मांहिलो, एक फंसियां दुख थाय ॥ मु० ॥
ताजा आहार पांणी कपड़ा तणो, त्यांरे लेखे पड़े अन्तराय ॥मु०॥ते०॥३६॥
पेट रे कारण पापियां, त्यांरे घर में घाले राड़ ॥ मु० ॥
कलह वधावा री करे आमना, ए खोटा कुगुरू पेट ॥ मु० ॥ ते० ॥३७॥
तिण कारण कुगुरु रह्या, आमी सामी धर्म डोल ॥ मु० ॥
वो ही आंधा ने भूल सूझे नहीं, जिम तांबा ऊपर झोल ॥ मु०॥ ते० ॥३८॥
भाग प्रमाणे गुरु कुगुरू मिल्या, ते करमां रो छै दोष ॥ मु० ॥
इम सांभल नर नारियां, मत करो मांहो-मांही रोष ॥ मु० ॥ ते० ॥३९॥

॥ दोहा ॥

भेष धारी बिगड्यां घणां, पांचमे आरा मांय ।
नाम धरावे साधरो, पिण ढेढा शर्म न काय ॥१॥
खेत खाध्यो लोकां तणो, पहर नाहर री खाल ।
ज्यूं भेष लियो साधु तणो, पण चाले गंधारी चाल ॥ २ ॥

- सरधां में भूला घणा, ते थापे हिंसा धर्म।
बले भ्रष्ट हुआ आचार थी, बांधे चोला कर्म ॥३॥
आभा फाटे तैं गली, कुण छै देवण हार।
ज्यूं गुरू सहित गण वीगड्यो, त्यांरे चहुं दिश पड्या बधार ॥४॥
चोरी जारी आदि दे, नीपजे माठा कर्म।
तो हीं आंधा जाय पगां पड़े, ते मूल न जाणे धर्म ॥६॥
गुरु गुरणी तणा चरित्र जाणिये, पिण छूटे नहीं पषपात।
तो ही निरलज्जा शुद्ध साधु तणी, उठावे अणहुंती वात ॥६॥
आल देवण आधा घणां, बले डरे नहीं तिल मात।
बले झूंठ बोले मुख बांधने, ते किम आवे हाथ ॥७॥
ज्यूं रे लाय लागी दशों दिशी, रहे न त्यांरी शुद्ध।
ज्यूं विनाश काले इणभेष रे, उपनी विपरीत वुद्ध ॥८॥
कुगुरू चारित्र अनन्त छै, कहतां न आवे पार।
हिव भव जीवां प्रति बोधवा, अल्प कहुं विस्तार ॥९॥

❀ ढाल छठी ❀

एक एक तणा दूषण ढांकै, अकार्य करतां नवि संके।
त्यां ने कोई नहीं हटकण।चालो,।एहवा भेष धारी पंचमें कालो ॥१॥
त्यांरा विटल हुवा चेली चेला, गुरुमांही पिण आवे रेला।
लोपी मर्यादा फोड़ी पाल ॥ ए० ॥ २ ॥
व्रत पचखांण में नहिं सैंठा, ठाम २ थानक मांडी बेठा।
आ जिणवर साख थी टालो ॥ ए० ॥ ३ ॥
साथ लियां फिरे पुस्तक पोथा, आचार पालन जावक थोथा।
ते फंस रह्या माया जालो ॥ ए० ॥ ४ ॥

करनी करतूत मांही पोला, वले अरड़ अरड़ मुख बोला ।
त्यांरे झूंठ तणो नहीं टालो ॥ ए० ॥ ५ ॥
विकलां नें मूढ किया भेला, ते नाच रह्या कुबुद्धि खेला ।
जाणे भरमोलिया तिणी वरमालो ॥ ए० ॥ ६ ॥
त्यांरा श्रावक पण केई मूढ़ मति, पहलां री वात करे अछेनी ।
पर भव डरे न आणे देता आलो ॥ ए० ॥ ७ ॥
नाम धरावे साधु सती, पिण लषण दिसे नहिं एक रती ।
मूंढे झूंठ तणो वह रह्यो नालो ॥ ए० ॥ ८ ॥
कई पदवी धर वाजे मोटा, चलगत अंधी लपण खोटा ।
कण रहता एकन्त परालो ॥ ए० ॥ ९ ॥
कई लिंगड़ा ने लिंगडी, त्यारी सुमति गुप्ति धुर स्युं विगडी ।
अन्तर नवि घाल्यो विचारो ॥ ए० ॥ १० ॥
एक २ टोला में तायफा रहै घणा, तायफ तायफ में भागल घणां ।
कुण काढे त्यांरो निकालो ॥ ए० ॥ ११ ॥
उघाड़ मांहों मांही केम करे, पांणी सगलां रे मांह मरे ।
लिगड़ा लिगड़ियां रोइयो टोलो ॥ ए० ॥ १२ ॥
भेष मांही करे चोरी जारी, त्यांने गृहस्थ बिचे कहिजे भारी ।
त्यांरे केड़ लिया मूरख वालो ॥ ए० ॥ १३ ॥
दोषां रो कर रह्या गाला गोलो, त्यांरो विगड़ गयो जावक टोलो ।
त्यां में कुकर्म रो वधियो चालो ॥ ए० ॥ १४ ॥
एहवा कर्म करी साधु वाजे, निरलज्जा मूल नहीं लाजे ।
निकाल काढ्यां उठे झालो ॥ ए० ॥ १५ ॥
त्यांरो जथा तथा उखाड़ करे, तो परिवार सहित तिण सुं लड़े ।
झगड़ो झाले बांधे चालो ॥ ए० ॥ १६ ॥

जब आपेई लोकां में उघाड़ पड़े, किण ही भागल में दूर करे ।
तिण ने प्रायश्चित विण ले मांह वाड़े ॥ ए० ॥ १७ ॥
ए तो कपट करे लोकिक राखी, इतनी कियां जावे नाकी ।
आहार पांणी आड़ो आवे तालो ॥ ए० ॥ १८ ॥
इम कर कर नें राखे सेखी, त्यां ने केवल ज्ञानी रह्या देखी ।
ए तो बेठो तणां करे प्रतिपालो ॥ ए० ॥ १९ ॥
जो आप तणा किरतब देखे, तो ऊंचे स्वर बोले किण लेखे ।
समझे नहिं ज्ञान रहित वालो ॥ ए० ॥ २० ॥
त्यां में अठारह पाप तणों खातो, तो पिण मूरख बोले तातो ।
अज्ञानी आपो नहीं संभालो ॥ ए० ॥ २१ ॥
हृष्ट पुष्टन देहि राखे चंगी, त्यां में मिली मीठी २ चोभंगी ।
तोहि बोले आल न पंपालो ॥ ए० ॥ २२ ॥
मोची डूम धोबी ने पिंजारो, ठांगा सुं राज कियो चारो ।
ए दृष्टान्त लीज्यो संभालो ए० ॥ २३ ॥
त्यांने प्रकट किया मांडे कजिया, त्यांरा बिगड़ गया साधु आरजिया ।
तिणस्युं साधु शिर दे आलो ॥ ए० ॥ २४ ॥
ते परिवार सहित नरकां जासी, पछै चहुं मत में गोता खासी ।
अरट तणी ज्यूं घट मालो ॥ ए० ॥ २५ ॥
में सुणियां थीवरी ना बांणो, ते प्रत्यक्ष देख लिया नैणो ।
शंसय हुवै तो सूत्र संभालो ॥ ए० ॥ २६ ॥
अन्धारा सुं चोर रहे राजी, जेहवी कुगुरू तणी जहर बाजी ।
कोई आय पडे भ्रम जालो ॥ ए० ॥ २७ ॥
वैराग घट्यो न भेष बध्यो, हाथ्यांरो भार गधां लदियो ।
थक गया गधां भार दियो रालो ॥ ए० ॥ २८ ॥

धुर सुं कई नवतत्व नाहीं भणियां, ते सांग पहिर मुनिराज बण्यां ।
ज्युं नाहर री खाल पहरी स्यालो ॥ ए० ॥ २६ ॥
मांहि मांही निजर पड्या खीजे, त्यां ने उपमां श्वान तणी दीजे ।
बतलायां करे मुख विकरालो ॥ ए० ॥ ३० ॥
कितला एक अदत्त लेवण लाग्या, कितला एक चौथां सुं भांग्या ।
निकलियो भरम पड़ियो दिवालो ॥ ए० ॥ ३१ ॥
चोरां में चोर जाय बस्या, भागलां में भागल आय धस्या ।
कचरा कूडा ज्यूं ओ गालो ॥ ए० ॥ ३२ ॥
रस गिरधी ताके घर ने हाटै, वले अवसर देख्यां पाड़े वाट ।
डाकण ज्यूं दातार राखे टालो ॥ ए० ॥ ३३ ॥
इण भेप तणा कुड़ कपट तणी, कितली एक कह्यो त्रिभुवन धणी ।
रुलियांरां तणो नहिं रखवालो ॥ ए० ॥ ३४ ॥
त्यांने पिण गुरु जांणी पूजै, समकित विन संवलो नवि सूझै ।
अभ्यन्तर झूंठो आयो जालो ॥ ए० ॥ ३५ ॥
तिण री दीसे छे सगली कांणी, ते खांच आंपणा में ले तांणी ।
अग्नि ज्यूं उठे अन्तर झालो ॥ ए० ॥ ३६ ॥
समचे कह्यां पिण निन्दया जांणे, वुद्धी भ्रष्ट तया उलटी तांणे ।
ते कर रह्या झूंठी झखालो ॥ ए० ॥ ३७ ॥
जे अन्याय मारग रा पपपाती, त्यांरी सुंण २ वल उठे छाती ।
त्यांरे कुगुरू तणी लागी लालो ॥ ए० ॥ ३८ ॥
पपपाते त्यांरे नहिं मन भावे, पिण चोर ने चांनणो नहिं सुहावे ।
लार वैरी पूरा लाग्या लारो ॥ ए० ॥ ३९ ॥
भाव आचारांग में चाल्या, कई ठाणांग में घाल्या ।
एवा विकलां ने वीर दिया टालो ॥ ए० ॥ ४० ॥

बले अंग उपांग मूल न छेदे, तिण मांहि पण चाल्या भेदे ।
ओलख कियो वीर उजियालो ॥ ए० ॥ ४१ ॥

कितला एक चरित काने सुणियो, कितला एक सूत्र सुं गुणियो ।
कई प्रत्यक्ष देख लियो वालो ॥ ए० ॥ ४२ ॥

सूत्र तणो लेहि शरणो, पाखण्ड मत रो कियो निरणो ।
खोटा नें उत्तम देसी टालो ॥ ए० ॥ ४३ ॥

तो कुगुरु तणी छे निसाणी, सुण तर्क धरो उत्तम प्राणी ।
अमृत ज्युं लागे रसालो ॥ ए० ॥ ४४ ॥

॥ दोहा ॥

कई भेष धारी भूलां थकां, ते कर रह्या ऊंधी तांण ।
अव्रत बतावे साध रे, ते सूत्र अर्थ अजान ॥ १ ॥

त्यां साध पणो नवि ओलख्यो, ते भूल्या भर्म गिवांर ।
सर्व सावद्य रा त्याग मुख सूं कहे, वले पाप रो करे आधार ॥२॥

आहार पांणी कपड़ा ऊपरे, रहा सदा मुरझाय ।
एहिवा भेष धारया रे अव्रत खरी, पिण साधां रे अव्रत नांय ॥३॥

चार गुण ठाणां अव्रत कही, तठे व्रत नहीं लिगार ।
देश व्रत गुण ठाणो पांचमो, आगे सर्व व्रती अणगार ॥४॥

जो साधारे अव्रत हुवे तो, सर्व व्रती कुण होय ।
त्यां रो भाव भेद प्रगट करू, सांभलज्यो सहुकोय ॥५॥

आहार उपधने उपासरो, भोगवे दोष सहित ।
भ्रष्ठ थया आचार सूं, त्यां छोडी साधां री रीत ॥६॥

आहार उपधने उपासरो, अशुद्ध दे दातार ।
ते गुरु सहित दुर्गति पड़ें, खाय अनन्ती मार ॥७॥

सहु दोषां में मोटको, आधा कर्मी जाण ।
एहिवो थानकादिक भोगवे, त्यां भांगी जिनवर आण ॥८॥
जिण आज्ञा पाले नहीं, ते भागलां री छे पांत ।
ते कुण २ अकार्य कर रह्या, ते सुणज्यो कर ख्यांत ॥९॥

❁ ढाल सातमीं ❁

(आ अणुकम्पा जिन आज्ञा में—ए देशी)

कई भेष धारी कहे म्हे जीव बचावां, ते करे अनोखी अण-हुंता कूका ।
ते साध पणा रो नाम धरावे, उलटा छ काया मरावण ढूका ।
इण सांग धारयां रो निर्णय कीजे ॥ १ ॥
पीलू जितरी मुरड़ माटी में, असंख्याता जीव तो मुख से बतावे ।
महा बुगल ध्यानी मुनिवर बैठ्या, ऊपर ठाठा २ मुरड़ नखावे ॥ इ० ॥२॥
साधां रे कारण थानक लीपे, पहली पांणी रा जीवा ने मारी ।
ज्यो उण थानक मांहि साध रहे तो,
तिण ने तो वीर कह्यो भेष धारी ॥ इ० ॥ ३ ॥
फूटा थानक करावा कारणे, वले खाती सिलावट बैठा २ कमावे ।
केलू कुटी जे ने चूनों दरीजे, ए पिण चाला कुगुरु चलावे ॥ इ० ॥ ४ ॥
एक अंकुरा वनस्पति में, जीव अनन्ता तो मुख सुं बतावे ।
जो थानक ऊपर नीलो उगे तो, सानी कर दुष्ट जीवां सुं कटावे ॥इ०॥५॥
दडता नीपता ने थानक चूणतां, कीडा माकड़ादिक मरे अथागे ।
डरे नवि दुष्ट अकार्य करतां,
त्यांरे करम जोगे डंक कुगुरां रो लाग्यो ॥ इ० ॥ ६ ॥
वले छपरा छावे छावतां ने केलु फेर बतावे,
तठे नीलण फूलण जीव मरे अनन्ता ।
जमीयां जाला उखाले अज्ञानी, ते पिण कुगुरां रे काजे हणंता ॥ इ० ॥७॥

ए थानक काजे जीव हणे दुष्टी, हण वालो दूजो करण जाणो।
सरावण वालो तीजो करण हून्यो,
पछे अव्रत लेखे बरोबर जांणो ॥ इ० ॥ ८ ॥

जिण थानक करावण अर्थ दियो, ते सर्व हिंसा रो कहिजे नायक।
धर्म काजे दुष्टी जीवहणे, अणन्ता जीवां रो हुवो दुख दायक ॥ इ० ॥९॥

अनन्ता जीव मारी ने थानक कीध्यो, वले दिन २ अनन्ता मारे छे आगे।
भेष धार्‌यां सहित श्रावकां ने पूछी,
इण थानक रो पाप किण २ ने लागे ॥ इ० ॥ १० ॥

कोई श्रावक राते अछायां सोवे तो, तिणने पाप लाग्यो कहै छै त्रिमासी।
ओ थानक सदा ई अछाया रहे छे,
तिण पाप सु' दुर्गति कुण २ ज्यासी ॥ ई० ॥ ११ ॥

मूठ वासी ज्यू तिण में मुरझाय रहा छै,
वले थानक री राखे धणी आपो।
सार संभाल करे पड़ियां धुड़ियां,
तिणने लागे छे निरन्तर पापो ॥ इ० ॥ १२ ॥

कोई पूंछे तो कूड़ बोले कपटी, श्रावक रे काजे कीध्यो बतावे।
जो सांचा हुवे तो मांय रहणो त्यागे,
पछे कुण २ श्रावक थानक करावे ॥ इ० ॥ १३ ॥

छ काया हणी ने थानक कीध्यो, ते तो थानक छे आधा कर्मी।
तिण थानक मांहि साध रहे तो,
धर्म सु' भिष्टी नहीं जिन धर्मी ॥ इ० ॥ १४ ॥

वले गृहस्थ कहां तिणा ने वीर जिनेश्वर,
महा सावज किरिया लागे भारी।
आचारांग दूजे श्रुतस्कन्धे भेष ले रया कह्या भेष धारी ॥ इ० ॥ १५ ॥

आधा कर्मी थानक में साध रहे तो, नरक निगोद में झोंका खावे ।
ए भाव भगवती में वीर कथ्यो छै,
वले चहुँगत मांय घणो दुख पावे ॥ ई० ॥ १६ ॥
साधां रे कारण थानक करावे, ते गरभ में आड़ा आवे दाता ।
त्यांने काप २ काढे नान्हां करतां,
वले नरक में मार अनन्ती खातो ॥ ई० ॥ १७ ॥
धर्म रे कारण जीव हणे त्यानें, मन्द बुद्धि कह्यो दशमें अंगे ।
दया ने छोड़ हिंसा ने थापी,
डुवा रे डुवा थे कुगुरां रो संग ॥ ई० ॥ १८ ॥
धर्म हिंसा रुकियां समकित जावे, वले जन्म मरण दुख वन्द ।
यथा योग्य वीर वचन सांचा करि सरधे,
पाहिले अध्ययन आचारांग मांयो ॥ ई० ॥ १६ ॥
इम सांभल उत्तम नरनारी, देव गुरु धर्म काजे हिंसा नवि कीजे ।
आर उपध सेज्यां ने संथारो,
निर्दोष हुवे तो दे लाहो लीजे ॥ ई० ॥ २० ॥
न्याती अन्याती श्रावक अणश्रावक ने, आधी आखी रात थानक में बसावे ।
निशीथ रे आठमें उद्देशे,
चार महीना रो चारित्र जावे ॥ ई० ॥ २१ ॥
बासा रूप रहे तिण ने नवि निषेदे, कोई निषेद्यां पछे रहै ज्योरी दावै ।
तिण साथे वारे जावे,
पाछे तिणने दंड चोमासी आवे ॥ ई० ॥२२॥
सिद्धान्त रा पाठ में वीर निषेध्यो, कोई निषेद्यां पछे रहे जोरी दावे ।
तिण साथे वारे जावत्यां,
पाछै तिण ने दंड चोमासी आवे ॥ ई० ॥ २३ ॥

कुड़ा २ अर्थ बतावे लोकां ने, आप डूब्या करे औरां ने भारी।
अणहुंता अर्थ सुं पाठ उथापे,
टांको भाले न हुवे अणन्त संसारी ॥ ई० ॥ २४ ॥
उद्देशिक अशनादिक भोगवे, वले मोल लीध्यो उपधादिक ।
आंरो नित पिंड भोगवे एकण घर को,
एहवा साधु जासी नरक मंझारो ॥ ई० ॥ २५ ॥
ए तो भाव कह्या उत्तराध्ययन मांहि, बीसमां अध्ययने काढो निकालो ।
त्यांने पिण गुरू जांण वांधे अज्ञानी,
त्यांरी आभ्यन्तर फूटी आयो कर्म जालो ॥ई०॥२६॥
गाम बारे उतर्‍यो कटक संथ वाड़ो, तियां गोचरी जावे तो पाछो आवे ।
कोई जिन आज्ञा लोपी नें रात रहे तो,
चार महीना रो चारित्र जावे ॥ ई० ॥ २७ ॥
ए तो बृहत्कल्प रे तीजे उद्देशे, साधु ने कटक में न रहणो रातो ।
कोई रात रहे वले दोष न सरधे,
तिण मूर्खां री मानें मूर्ख वातो ॥ ई० ॥ २८ ॥
एहवा भारी दोष जांणी ने सेवैं, वले बतलायो बोले नहीं विशुद्धा ।
ते समझायो समझै नवि मूरख,
जिन आज्ञा ने लोपी ने पड़िया ऊंधा ॥ ई० ॥ २९ ॥
एहिवा भेष धारी साधां रे भेष मांही, ते आप डूबे औरां ने डुबोवे ।
त्यांने वांधे पूजे ते सतगुरू जांणी ने,
ते पिण मानव रो भव खोवै ॥ ई० ॥ ३० ॥
अशुभ करम उदै सु संवलो न सूझे, त्यांने गुरू मिलिया हीणा आचारी ।
त्यांरी सेवा भक्ति कियां इये फल लागे,
जो टांको झले तो होवे अणन्त संसारी ॥ई०॥३१॥

इम सांभल उत्तम नर नारी, एहिवा भेष धारी सुं रहिज्यो दूरा ।
साधां री सेवा करे चित चोखे,
ते तो चारित्र विचक्षण प्रवीण पूरा ॥ ई० ॥ ३२ ॥।

॥ दोहा ॥

भेष पहर्यो भगवान रो, साधू नाम धराय ।
पिण आचार में ढीला घणां, ते कह्यो कठा लग जाय ॥१॥
त्यां ने बान्धे पूजे गुरु जाण ने, वले कूड़ी करे पक्षपात ।
त्यां झूंठा ने साचा करण खपे, त्यांरे मोटो साल मिथ्यात ॥२॥
कुगुरु तणा पग बांधने, आगे डूब्या जीव अनन्त ।
वले डूबे नै डूबसी घणां, त्यांरो कहता न आवे अन्त ॥३॥
साधु मारग छै सांकड़ो, तिण में न चाले खोट ।
आगार नहीं त्यांरे पापरो, त्यां वरत किया नव कोट ॥४॥
भेष धारी भागल घणां, त्यां सुं पले नहीं आचार ।
ते कुण २ अकारज कर रह्या, ते सुणज्यो विस्तार ॥५॥

॥ ढाल आठमीं ॥

(साधु तम जांणो इण चलगत सुं—ए देशी)

कुगुरु तणी चरित्र चौड़े करस्युं, सूत्र नी देई साख जी ।
समता आंण सुनो भव जीवां, श्री वीर गया छै भाप जी ।
साधु मत जांणो इण आचारे ॥१॥
जो थे कुगुरु ने सेंठां कर झाल्या, तोई सुण २ म करो द्वेष जी ।
सांच झूंठ रो करो निवेरो,
सूत्र सामो देख जी ॥ सा० ॥२॥
जीवणवार मांय सुं कोई गृहस्थ ल्यावे, धोवण पांणी मांड जी ।
ते आपण घरे आंण वहरावे, ते करे भेष न भांड जी ॥ सा० ॥३॥

जो जांण २ ने साधु बहरे, तिण लोप दियो आचार जी।
ए प्रत्यक्ष सामो आणो बहरे,
त्यांने केम कहिजे अणगार जी ॥ सा० ॥४॥
ए अणाचार उघाड़ो सेवै, ते सामो आंण्यो ले आहार जी।
ए दशवैकालिक तीजे अध्ययने,
कोई जोवो आंख उघाड़जी ॥ सा० ॥५॥
साध साधवी थरड़े मात्रे, एकण दरवाजे जाय जी।
ते वीर बचन सु उलटा पड़िया,
ए चोड़े करे अन्याय जी ॥ सा० ॥६॥
गांव नगर पुर पाटण पाड़ो, तिणरो हुवे एक निकाल जी।
तिहां साधु साधवी नहीं रहे भेला,
आ बांधी भगवंत पाल जी ॥ सा० ॥७॥
एकण दरवाजे साधु साधवी, जावे नगरी बार जी।
तो अप्रतीत उठे लोकां में,
कई व्रत भांगे हुवे खराब जी ॥ सा० ॥८॥
जुदो २ निकाल छै ते पिण, लेई जावे एकण दरवाजे जी।
घेटां हटक न माने किणरी,
बले न माने मन में लाज जी ॥ सा० ॥९॥
एक निकाल तिहां रहणो ही बरज्यो, तो किम जाये एकण द्वार जी।
ए बृहत्कल्प रे पहले उद्देश्ये,
ते बुद्धिवंत करो विचार जी ॥ सा० ॥१०॥
गृहस्थ ने घर जाये गोचरी, जड़ियो देखे द्वार जी।
तियां शुद्ध साधु तो फिर जाये पाछा,
भागल जावे खोल किवाड़ जी ॥ सा० ॥११॥

कई भेष धारयां रे एहिंवी सरधा, जो जड़ियो देखे द्वार जी।
तो धनी तणी आज्ञा लेई ने,
माहीं जावे खोल किवाड़ जो ॥ सा० ॥१२॥
हाथ सु साधु किवाड़ उघाड़े, मांही जावे वहिरण ने आहार जी।
इसड़ी ढीली करे प्ररूपणा,
ते विटल हुआ वेकार जी ॥ सा० ॥१३॥
किवाड़ उघाड़ी ने आहार वहरयो, मूल न सरधे पाप जी।
कदा न गया तो पिण गया सरीखा,
आकर राखी छे थाप जी ॥ सा० ॥१४॥
किवांड़ उघाड़ ने वहरण जावे, तो हिंसा जीवां री थाय जी।
ते आवश्यक सूत्र मांहि वरज्यो,
चोथा अध्ययन रे मांहि जी ॥ सा० ॥१५॥
गांव नगर वारे उतरयो, कटक संथ वारो ताय जी।
जों साधू रात रहे तिण ठामें,
ते नहिं जिण आज्ञा मांहि जी ॥ सा० ॥१६॥
एक रात रहे कटक में तिण ने, चार मास रो छेद जी।
ए वृहत्कल्प रे तीजे उद्देशे,
ते सुण २ मकरो खेद जी ॥ सा० ॥१७॥
इसरा दोष जांणी ने सेवे, तिण छोड़ी जिन धर्म रीत जी।
एहिंवा भ्रष्टाचारी भागल,
त्यांरी कुण २ मानसी प्रतीत जी ॥सा०॥१८॥
बिन कारण आंख्यां में अंजन, घाले आंख मंझार जी।
त्यांने साध किम सरधीज्यो,
त्यां छोड़ दियो आचार जी ॥ सा० ॥ १६ ॥

बिन कारणआंख्यां में अन्जन, घाले आंख मझार जी ।
त्यांने साधवियां केम सरधीजे, त्यां छोड़ दियो आचार जी ॥सा० ॥२०॥
बिन कारण जो अन्जन घाले, तो श्री जिन आज्ञा बाहर जी ।
दशवैकालिक तीजे अध्ययने, ओ उघाड़ो अनाचार जी ॥ सा० ॥ २१ ॥
वस्त्र पात्र पोथी पानादिक, जाय गृहस्थ रे घरे मेल जी ।
पछे कर विहार दे धणी भलावण, तिण प्रवचन दी ठेल जी ॥सा०॥२२॥
पछे गृहस्थ आमा सामां मेलतां, हिंसा जीवां री थाय जी ।
तिण हिंसा सुं गृहस्थ ने साधु, दोनुं भारी हुवा ताय जी । सा०॥२३ ॥
भार उपड़ावे गृहस्थ आगे, ते किम साधू भाय जी ।
निशीथ रे बारहवें उद्देशे, चोमासी चारित्र जाय जी ॥ सा० ॥२४॥
वले बिण पड़लेयां रहे सदा, नित गृहस्थ रे घर मांहि जी ।
ओ साधपणो रहसी किम त्यांरो, जोवो सूत्र रो न्याय जी ॥सा०॥२५॥
जो विन पढलेहां रहे एकण दिन, तिण ने दण्ड कह्यो मासीक जी ।
निशीथ रे दूजे उद्देशे, तिण जोय करो तहतीक जी ॥ सा० ॥ २६ ॥
सानी कर साध दिरावे रुपिया, व्रत पांचमो भांग जी ।
वले पूंछे झूंठ कपट सुं बोले, त्यां पहर विगार्‌‌यों सांग जी ॥सा०२७॥
न्यातीला ने दाम दिलावे, त्यांरो मोह न मिटियो कोय जी ।
वले साल संभाल करावे त्यांरी, ते निश्चय साध न होय जी ॥सा०॥२८॥
अनर्थ रो मूल कह्यो परिग्रहो, ठाणांग तीजे ठांण जी ।
तिणरी साधु करे दलाली, ते पूरा मूढ़ अयाण जी ॥ सा० ॥ २९ ॥
रीत उंधाले ले पांणी ठारे, गृहस्थ रा ठांव मंझार जी ।
मनमाने जब पाछा सूंपे, ते श्री जिन आज्ञा बाहर जी ॥ सा० ॥ ३० ॥
गृहस्थ रा भाजन में साधु जीमें, अशनादिक आहार जी ।
तिण ने भ्रष्ट कह्यो दशवैकालिक में, छठा अध्ययने मंजारजी ॥सा०॥३१

कही सांग पहिरे साधवियां वाजे, पिण घट में नवि विवेक जी ।
आहार करे जब जडे किंवाण, दिन में वार अनेक जी ॥ सा० ॥ ३२ ॥
ठरड़े मात्रे गोचरी जावे, जब आड़ा जड़े किवाड़ जी ।
वले साध खने आवे तोही जरने, त्यांरो विगड़ गयो आचारजी ॥सा०॥३३
साधवियां ने जड़वो चाल्यो, ते सीलादिक राखण काज जी ।
ओर काम जो जड़े साधवी, त्यां छोड़ी संजम लाज जी ॥ सा० ॥ ३४ ॥
आवश्यक मांहि हिंसा कही, जड़ियां आलोवण खाते ताय जी ॥
मन करणे जड़वो नही वंधै, उत्तराध्ययन पेंतीसमां मांहि जी ॥सा०॥३५॥
ओषध आदि दे वहरी आंणे, कोई वासी राखे रात जी ।
ते जाय मेले गृहस्थ रा घरमें, पछे नित ल्यावे परभात जी ॥सा०॥ ३६ ॥
ओर थको गृहस्थ ने सूंपे, ओ मोटो दोष पिछान जी ।
वले वीजो दोष वासी राख्यां रो, तीजो अजेणा रो जांण जी ॥सा०॥३७॥
वले चोथो दोष पूछ्यां झूठ बोले, वासी राख्यो न कहे मूढ जी ।
कई भेषधारी छै एहिवा भागल, त्यांरे झूठ कपट छै गूढ जी ॥सा०॥३८॥
औषधादिक वासी राख्यां, वरतां में पड़े बधार जी ।
कह्यो दशवैकालिक तीजे अध्ययनें, वासी राखे तो अनाचारजी ॥सा०३९॥
कहि आधा कर्मी पुस्तक वहिरे, वले तेहिज लीध्यो मोल जी ।
ते पिण सामो आणयां वहरे, त्यांरे पूरी जांणजे पोलजी ॥ सा०॥४०॥
कोई आप खने दीक्षा ले तिण नें, सानी कर मेले साज जी ।
पुस्तक पानादिक मोल लिरावे, वले कुण २ करे अकाज जी ॥सा०॥४१॥
गच्छ वासी प्रमुख आगा सुं, लिखावे सूत्र जांण जी ।
पहला मोल करावे परतां रो, संच करावे ताण जी ॥ सा० ॥४२॥
रुपिया मेले ओर तणे घरे, इसड़ो सेंठो करे काम जी ।
ते पिण हांथ परत आया विण, दीक्षा दे काढे ताम जी ।. सा० ॥ ४३ ॥

पच्छे गच्छ बासी भागलां सु ं डरतां, परत लिखे दिन रात जी ।
जीव अनेक मरे तिण लिखतां, करे त्रस थावरनी घात जी ॥ सा० ॥ ४४॥
इण बिध साधु परत लिखावे, तिण संजम दियो खोय जी ।
जे दया रहित छै एहिवा दुष्टी, ते निश्चय साधु न होय जी ॥ सा० ॥४५॥
छे काय हणी ने प्रति लिखी ते, ते आधा कर्मी जांण जी ।
तेहि साधु जो परत बहरे, तो भागलां रा अहनांण जी ॥ सा० ॥ ४६ ॥
बले ते हिज परत टोलां में राखे, ते आधा कर्मी जांण जी ।
जे सामल हुवा तो सगला डूब्या, तिणमें शंका मत आंणजी ॥सा०॥४७॥
आधा कर्मी राले बाल रूले तो, ऊतकिष्टो काल अनन्त जी ।
दया रहित कह्यो तिणसाधु ने, भगवती मे भगवन्तजी ॥ सा० ॥ ४८ ॥
कोई श्रावक साधसमीपे आये, हरष बांधे पग झाल जी ।
जद साध हांथ दे तिणरे माथे, आ चोड़ कुगुरु री चालजी ॥सा०॥४६॥
गृहस्थ रे माथे हाथ देवे तो, गृहस्थ बरोबर जांण जी ।
एहिवा बिकलां ने साधु सरधै, ते पिण बिकल समान जी ॥ सा०॥ ५०॥
गृहस्थ रे मांथे हांथ दियो तिण, गृहस्थ सु ं कियो संभोग जी ।
तिण ने साधु किम सरधीजे, लाग्यो जोग ने रोग जी ॥ सा० ॥ ५१ ॥
दशवैकालिक आचारांग मांहि, बले जोवो सूत्र निशीथ जी ।
गृहस्थ ने माथे हांथ देवे तो, आ प्रत्यक्ष ऊंधी रीत जी ॥ सा० ॥ ५२ ॥
बले चेला करे तो चोर तणीं पर, ठग फांसीगर ज्यू ं जाम जी ।
उजबक ज्यू ं तिणने उचकावे, लेजाये मु ंडे ओर गामजी ॥ सा० ॥५३॥
आछो आहार दिखावे तिण ने, कपड़ादिक मोहे दिखाय जी ।
इत्यादिक लालच लोभ बतावे, भोलां ने मू ंडे भरमाय जी ॥ सा० ॥५४॥
इण विधी चेला कर मत बांधे, ते गुण बिन कोरो भेष जी ।
साधपणा नो सांग पहिरी ने, भारी हुवो विशेष जी ॥ सा० ॥ ५५ ॥

मुंड मुंडाय भेलो कीध्यो, त्यां सुं पले नहीं आचार जी ।
भूष त्रिषा पिण खमणी न आवे, जद लेवे अशुद्ध आहारजी ॥सा०॥५६॥
अनल अजोग ने दिक्षा दे दियां, तो चारित्र रो हुवे खंड जी ।
निशीथ रे उद्देशे इग्यारमें, चोमासो रो दंड जी ॥ सा० ॥ ५७ ॥
विवेक विकल बालक बूढ़ां ने, पहिरावे सांग सताब जी ।
त्यां ने जीवादिक पदार्थ नव रा, जावक न आवे जवाब जी ॥सा०॥५८॥
शिष्य करणो तो निपुण बुद्धि वालो, जीवादिक जाणो ताय जी ।
नहिं त एकलो रहणों टोलामें, उत्तराध्ययन बत्तीसमें मांहि जी ॥सा०॥५९॥
कहि दड़ लीपे हांथा सुं थानक, ते पिण डग लिया कूट जी ।
इसड़ो काम करे तिण साधु, पाड़ी भेष माहिं फूट जी ॥ सा० ॥ ६० ॥
जो दड़ लीपे थानक ने साधु, तिण श्री जिन आज्ञा भंग जी ।
तीजा बरत री तीजी भावना, तियां वरज्यो दशमें अंग जी ॥सा०॥ ६१ ॥
छती साधवियां छै टोला में, बले कारण न पड्यो कोय जी ।
तो पिण दोय साधवियां रहे छे, ओ दोष उघाड़ो जोय जी ॥सा०॥६२॥
दो साधवियां कर चोमासो, ते जिन आज्ञा में ।नांहिं जी ।
त्यांने वरज्यो छै व्यवहार सूत्र में, पांचमें छठे उद्देशा मांहि जी ॥सा०॥६३
कारण विना एकली साधवी, अशनादिक वहिरण जाय जी ।
बले ठरड़े पिण एकलड़ी जावे, ते नहिं जिन आज्ञा मांहि जी ॥सा०॥६४॥
बले एकलड़ी ने रहणो वरज्यो, इत्यादिक बोल अनेक जी ।
बृहत्कल्प रे पांचमें उद्देशे, ते समझो आंण विवेक जी ॥सा०॥६५॥
कुगुरु एहिवा हीण आचारी, साधां सूं देय भिड़काय जी ।
आप तणा किरतबसुं डरता, जिण मारग दियो छिपाय जी ॥सा०॥६६॥
इसड़ा कुगुरां नें गुरु कर मानें, त्यांरे आभ्यन्तर में अन्धकार जी ।
गुरु में खोट पाये अज्ञानी, ते चाल्या जन्म विराध जी ॥सा०॥६७॥

अशुभ कर्म ज्यांरे उदय हुवा, जब इसड़ा गुरु मिलिया आयं जी।
एध विच होय जावक बूढा, पछे चहुंगत गोता खाय जी ॥सा०॥६८॥

इम सांभलो उत्तम नर नारी, छोड़ो कुगुरु रो संग जी।
सत् गुरु सेवो शुद्ध आचारी, दिन २ चढतो रंग जी ॥सा०॥६९॥

आसीज्याप करी कुगुरु ओलखावन, शहर पिपाड़ मंझार जी।
समत अठारह ने वरस चोतीसे, आसोज सुदि ७ बुधवार जी ॥सा०॥७०॥

॥ दोहा ॥

भेष धारी भूला फिरे, त्यांरे घोर रुद्र संसार।
वले भ्रष्ट थया आचार थी, त्यांरी भोला करे पक्षपात ॥ १ ॥

आहार उपध उपासरो, अशुद्ध भोगवे जांण।
त्यां सुं आचार री चर्चा कियां, तो लागे जहर समान ॥ २ ॥

वले जीव हिंसा सूं डरे नहीं, शंके नभि करता अकाज।
वले धर्म कहे हिंसा किया, न आणे मन में लाज ॥ ३ ॥

पिण भोलां ने खबर पड़े नहीं, चोड़े आचार री बात।
थोडी सी प्रगट करूं, ते सुणज्यो विख्यात ॥ ४ ॥

दुखमों आरो पांचमो, घणो हलाहल मान।
तिणमें भेष धारी हुसी घणां, कूड़ कपट री खांण ॥ ५ ॥

ए कुबुद्धि खेला ज्यूं नाचसी, इण साधु तणो भेष मांहि।
वले हिंसा धर्म प्ररूप ने, ए पड़सी नरक में जाय ॥ ६ ॥

त्यां रा विकल श्रावक ने श्राविका, ते करसी कूड़ी पक्षपात।
त्यां ने कुष्ट कदागरो सिखायने, त्यां ने पिण लेसी सोथ ॥ ७ ॥

त्यां रे अन्धकूप ने जलो जथां, दिवस जिसमें रात।
घूघू स्यारिखा होइ रह्या, वले दिन २ अधिक मिथ्यात ॥ ८ ॥

ए नव २ आकारां नव कड़ा, ते जासी नरक मंझार।
महानिशीथ में इम सुण्यो, ते सुणज्यो विस्तार ॥ ६ ॥

॥ ढाल नवमीं ॥

(सल कोई मत राखज्यो—ए देशी)

आचार्य ने साध साधवी, वले श्रावक श्राविका जांणो रे।
ए गुण बिना नाम धराय नें, नरकां जासी त्यांरो परमाणोरे।
इण विधि ओलखो नव कड़ा ॥ १ ॥

पिच्यावन कोड़ लाख पिच्यावन, वले पिच्यावन हजारो रे।
पांच सो ने पिच्यावन ऊपरे,
आचार्य जासी नरक मझारो रे ॥ ई० ॥ २ ॥

छयासठ कोड़ ने छयासठ लाख, वले छयासठ हजारो रे।
छ सौ ने छियासठ ऊपरे,
साधु जासी नरक मझारो रे ॥ ई० ॥ ३ ॥

सितन्तर कोड़ लाख सितन्तर वले, सितन्तर हजारो रे,
सात सो सितन्तर ऊपरे,
साधवियां जासी नरक मझारो रे ॥ ई० ॥ ४ ॥

अठयासी कोड़ लाख अठ्यासी, वले अठयासी हजारो रे।
आठ सौ ने अठयासी ऊपरे,
श्रावक जासी नरक मझारो रे ॥ ई० ॥ ५ ॥

निन्यानवै कोड़ लाख निन्यानवै, वले निन्यानवै हजारो रे।
नव सौ निन्यानवै ऊपरे,
श्रावकियां जासी नरक मझारो रे ॥ ई० ॥ ६ ॥

इये आचार्य ने साधु साधवी, पदवी धर वाजे मोटा रे।
जे नरक जासी इण भेष में,
त्यांरा लषण घणां छै खोटा रे ॥ ई० ॥ ७ ॥

ते भ्रष्ट थया आचार थी, व सरधा में मूढ मिथ्याती रे।
पहर ने सांग साधां तणो,
पिण थोथा चिणा रा साथी रे ॥ ई० ॥ ८ ॥
खाय पिये देही सुख से रहे, बले डीलां में बण रह्या रूंडा रे।
गोचरी विहार करे जाणे,
जांण रावलां कोतुक छुटार रे ॥ ई० ॥ ६ ॥
ए तो फिरता बचन बोले घणां, बले कूड कपट में राच रै।
चरचा करे तिण अवसरे,
जाणे उघड़ उघाड़ा नाचै रे ॥ ई० ॥ १० ॥
न्याय निर्णय किया विनां, कर रह्या फेन फतूर रे।
जो सूत्र री चर्चा करे तो,
पग २ जाय कूड़ रे ॥ ई० ॥ ११ ॥
कूड़ कपट करि मत बांधता, ते तो पेट भराई काजे रे।
आचार में ढीला घणां,
तोही निरलज्जा मूल न लाजे रे ॥ ई० ॥ १२ ॥
ते साधू नाम धराय ने, ठांव ठांव थानक करावै रे।
तिण सानी सुं कर कर आमना,
छ काय जीवां ने मरायै रे ॥ ई० ॥ १३ ॥
आधा कर्मी थानक ने भोगवे, बले सांग साधां रो धारियो रे।
छ काय जीवां ने मरावतां,
ओ तो पीहर पूरो पड़ियो रे ॥ई०॥१४॥
बले परदा परेच बन्धावतां, चन्द्र वा सरकी टाटारे।
बले छपरा छान करावतां,
तिणरा ज्ञानादिक गुण नाठा रे ॥ई०॥१५॥

इत्यादिक थानक रै कारणे, जीव हणे बारं वारो रे ।
एहिवा थानक साधु भोगवे,
ते जासी नरक मंझारो रे ॥ई०॥१६॥

साधु थेई उद्देशिक भोगवे, वले मोल लियो वहरे अहारो रे ।
नित पिंड वहरे एकण घर रो,
ते जासी नरक मंझारो रे ॥ई०॥१७॥

इये उत्तराध्ययन वीस में, वीर ना वचन संभालो रे ।
जै उद्देशिकादिक भोगवे,
तियां रे किम होसी नरक सूं टालो रे ॥ ई० ॥१८॥

घी खांड लाडू मिश्री मोल लै, त्यांरा भर २ मेलै चाडा रे ।
मोल ले वहरावे साधने,
ते तो गर्भ में आवसी आड़ा रे ॥ ई० ॥१९॥

घी खांड लाडू लेले, मिसिरियां मोल री लीधी वहरण जांणो रे ।
वले साधु बाजे इण लोक में,
ते तो पूरा मूढ अयाणों रे ॥ ई० ॥२०॥

जो चेलो हुवे जाणे आपरो तो, उण नो रोकड़ा दाम दिरावे रे ।
पांचमों महाव्रत भांगनै,
तो हि साधूरो विड़द धरावे रे ॥ ई० ॥ २१ ॥

जीवादिक जांणे नहीं तेने, पांचो ही महाव्रत उचरावेरे ।
साधुरो सांग पहरायनै,
भोला लोकांने पगांवै रे ॥ ई० ॥ २२ ॥

बालक बूढ़ो देखे नहीं थांरो, पानो पड़े ज्यूं ज्यूं मुंडे रे ।
नामना करवा आपरी ते,
तो मान वड़ाई सु वूडे रे ॥ ई० ॥ २३ ॥

चेला करवा कारणे, मांहो मांहि झगड़ो माड़े रे ।
फांटो तोड़ो करतां लाजे नहीं,
इण साधां रे भेष ने भांडे रे ॥ ई० ॥ २४ ॥

गामां नगरां समंचार मेलवा, सानी कर गृहस्थ बुलावै रे ।
कागद लिखावे तिण खने,
विवरो आप बतावे रे ॥ ई० ॥ २५ ॥

गृहस्थ आगे वियांवच करावियां, साधु ने कह्यो अणाचारी रे ।
दशवैकालिक तीजे अध्ययने,
कोई बुद्धिवंत लीज्यो विचारो रे ॥ ई० ॥ २६ ॥

भागल टूटल त्यांमें घणां, त्यांरो कुण काढे निकालो रे ।
थोड़ा सा त्यांने छेड़वा,
उलटा दे अनाखी आलो रे ॥ ई० ॥ २७ ॥

आप सरीखा करवा खपै, दे दे अणहुन्ता आलो रे ।
त्यांरे पर भव री चिन्ता नहीं,
त्यांरे झूंठ तणो नवि टालो रे ॥ ई० ॥ २८ ॥

शुद्ध साधु रे माथे आल दे, त्यांरे टोलां में ते सपूतो रे ।
तिण झूठ रो निर्णय करे नहि,
त्यांरा नरक जावां रा सूतो रे ॥ ई० ॥ २९ ॥

झूंठो आल दे तेहि ने, प्रायश्चित्त न दियो लिगारो रे ।
तिण सुं आहार पांणी भेलो करे,
ते डूब गयो काली धारो रे ॥ ई० ॥ ३० ॥

रैना देवी री कुगुरु ने ओपमां, ते सांभलज्यो चित ल्यायो रे ।
कूड़ कपट कर पापियां,
शुद्ध साधु सुं भिड़कायो रे ॥ ई० ॥ ३१ ॥

रैणा देवी दिखण रा बाग में, अणहुंतो ही अप्रसंग बतायो रे।
जिन आपना किरतब ढांकवा,
उण बोलियां मूंसा बायो रे ॥ ई० ॥ ३२ ॥
तिण जिण रिखने जिन पालनें, उण घाल दी थी मोटी शंका रे।
पिण बुद्धिवंत जाय जोइयो,
तियां जब जांणी छे तिण ने खोटी रे ॥ ई० ॥ ३३ ॥
कुगुरु रैणा देवी सारिखा, शंका साधांरी घालै रे।
तिण आपणा किरतब ढांकवा,
शुद्ध साधां कने जाता पालै रे ॥ ई० ॥ ३४ ॥
पिण बुद्धिवंत पूछ निर्णय करे, जब जाण लिया त्यांने खोटा रे।
ज्ञान क्रियां में खोटा घणां,
जांणे पांणी तणा पपोटा रे॥ ई० ॥ ३५ ॥
तिणरे रेणा देवी सामो जोय नें, जिन रिखी हुवो खुवारो रे।
तिण कुगुरु री परतीत सुं,
दुर्गत जासी नर भव हारो रे ॥ ई० ॥ ३६ ॥
रेणा देवो रो कपट जियां ही रह्यो, पिण कुगुरू रो कपट छे भारी रे।
आप डूबे औरां ने डूबोवता,
कोई होय जासी अणन्त संसारी रे ॥ ई० ॥ ३७ ॥
सांग पहर साधु तणो, खाध्यां लोकां रो मालो रे।
तप जप संयम बाहिरा,
बण रह्या कूंदा लालो रे ॥ ई० ॥ ३८ ॥
इम सुण नर नारियां, छोड़ो कुगुरू सतावो रे।
शुद्ध साधू तणी सेवा करो,
राखो चावो इज्ज ने आवो रे ॥ ई० ॥ ३६ ॥

॥ दोहा ॥

दुखम आरो पांचमो, श्रावक श्राविका नाम धराय।
गुण विना खाली ठीकरा, पड़सी नरक में जाय ॥१॥
तो हीणाचारी कुगुरां तणा, सेवा करे दिन रात।
त्यां ने झूंठा ने सांचा करवा, भणी कूड़ी करे पक्षपात ॥२॥
त्यां आंधां ने मूल सूझे नहीं, न्याय मार्ग री बात।
पाखण्ड मत में राचि रह्या, घट में घोर मिथ्यात ॥३॥
दिष्ट्या नें अणदीठो कहे, झूठ बोलतां न आंणे शंक।
आल देवण ने नवि आल सू, त्यांरी बोली मायंक ॥४॥
एहिवा श्रावक जासी नरक में, त्यांरा चाला चरित्र अनेक।
वले थोड़ासा प्रगट करूं, ते सुणज्यो आण विवेक ॥५॥

॥ ढाल दशमीं ॥

(रे जीवा मोह अनुकम्पा न आणिये—ए देशी)

नव २ आंका रो कुगुरु नवकड़ा, ते तो जासी नरक मंझार रे।
त्यांरा श्रावक ने श्राविका तणो, तुम्हे सांभलज्यो विस्तार रे।
एहिवा श्रावक जांणो नव कड़ा ॥१॥

धुर स्यूं तो भूल्या मार्ग मुगत रो, गुरू काजे हणे छे जीव रे।
वले धर्म जांणे हिंसा कियां,
त्यां दीधी नरकां री नीव रे ॥ए०॥२॥

चूवतो दीखे थानक जो गुरु तणो, तिणरी आय करे संभाल रे।
नीलण फूलण परन्हाखै मुरड़ ने,
करे अनन्ती जीवां रो खंगाल रे ॥ए०॥३॥

पहली पांणी तणा जीव मारने, दड़ लीपे थानक ने आप रे।
ते पिण गुरु ने काज निशंक से,
ए तो हण रह्या जीव छ काय रे ॥ए०॥४॥

कई करावे छे थानक मूलथी, धुर स्युं नवि जाग्यां उठाये रे ।
पछे जीव बिनासे विधि २,
ते तो कह्यो कठा लग जाय रे ।।ए०।।५।।

गाड़ा–गाड़ा पृथ्वी मंगावता, बाणां २ पांणी मंगाय रे ।
करे कचरा कूटो छकाय रो,
मन गमतो थानक वणाय रे ।।ए०।।६।।

कई करे मंजूरी हाथ सुं, ऊंडी २ दिरावे नींव रे ।
घर रो अर्थ देई पापियां,
छ कायो रा मरावे जीव रे ।।ए०।।७।।

छ काया हणै थानक करे, तिण में धर्म जांणे निशंक रे ।
तिण स्युं ठाम २ जाग्यां बधे,
एहिवा लाग्या कुगुरां रा डंक रे ।।ए०।।८।।

त्यां ने पूछ्यां बोले कई पादरा, कई झूंठ बोले तत्काल रे ।
मायां निमित्त थानक करायो,
कहे अनाखी थका भाखे आल रे ।।ए०।।९।।

प्रत्यक्ष करायो गुरु कारणे, लाज्यां मरता खांचे आपरे ।
धर्म रे ठिकाने झूठ बोल ने,
भारी हुवे चीकना बान्धे पाप रे ।।ए०।।१०।।

धर्म ठिकानें झूठ बोलियां, बान्धे महा मोहणी कर्म रे ।
सत्तर कोड़ा कोड़ सागर लगे,
नहीं पांमे जिन वर धर्म रे ।।ए०।।११।।

ज्युं किणरी मां बहनादिक डाकण हुवे, त्यांरी बात सुंण्या पामे खीज रे ।
त्यां ने सांची करवा खपे घणां,
झूठो थको पिण थापे धीज रे ।।ए०।।१२।।

बले अनेक उपाय करे घणां, घर जायो पिण करे कबूल रे।
पिण मुख सुं डाकण कहणी दोहिली,
गाड़ोई हुवे भूंडो कसुल रे ॥ए०॥१३॥
ज्यूं भारी कर्मा कई जीवड़ा, बोले कुगुरां रा बदले झूठ रे।
त्यांने सांचा करण खपे घणां,
कूड़ा गुण करे पर पूठ रे ॥ए०॥१४॥
अनन्त संसार सुं डरे नहीं, नरकां जांणो पिण कबूल रे।
पिण मुख सुं खोटा कहणा दोहिला,
रह्या पाखण्ड मत में भूल रे ॥ए०॥१५॥
डाकण रे बदले धीज कियां थकां, कदा राजा कोप्यां घर जाये रे।
पिण कुगुरां रे काजे झूंठ बोलियां,
पड़े नरक निगोद में जाय रे ॥ ए० ॥ १६ ॥
आप आदरिया कुगुरु तणां, देवे दूषण सगला टांक रे।
शुद्ध साधु ने आल देता थकां,
पापिया मूल न आणे शंक रे ॥ ए ॥ १७ ॥
शुद्ध साधुनी निन्दा करे बले, निजर पड़्यां जागे द्वेष रे।
त्यांने बरते बैरी ने शोक ज्यूं,
जोवे बले छिद्र विशेष रे ॥ ए० ॥ १८ ॥
आप कुगुरु ने सेठां झालिया, त्यां में दोषां री छेह न पार रे।
तिणस्युं साध तणा दोष जोवतां,
खप कर रया मूठ गिंवार रे ॥ ए० ॥ १९ ॥
पिण साधां मांही दोष देखे नहीं, जब कूड़ो ही देवे आल रे।
पछे झूंठ बोले बकता फिरे,
त्यां रो कुण काढ़े निकाल रे ॥ ए० ॥ २० ॥

कड़वो तुम्बो बहरावे साधने, नाग श्री ब्राह्मणी एक वार रे ।
तिण से संसार में रूली धणी,
सातूं नरक में खादी मार रे ॥ ए० ॥ २१ ॥
तिण तो न्हाखण रा आलस थकी, तुम्बो बहरावे साध ने देख रे ।
तिणरा फल लाग्या पाड़वा,
पांमी दुख मांह दुख विशेष रे ॥ ए० ॥ २२ ॥
तो साधांरी कई निन्दा करे, वले राखे आभ्यन्तर द्वेष रे ।
अछतो पिण आल दे निशंक सुं,
ते तो डूब्या वले विशेष रे ॥ ए० ॥ २३ ॥
कई कड़वा बोले बुरी तरह, कई बंछै साधां री घात रे ।
कई परिसा देवे बचनां रा,
कई तकता रह्या दिन रात रे ॥ ए० ॥ २४ ॥
सर्व पाखण्डियां सुं मिल गया, वले लोकां ने देवे लगाय रे ।
त्यांरे केइ गमता बोले घणां,
साधु सुं वैर करवा तांय रे ॥ ए० ॥ २५ ॥
एहिवा नागश्री सुंही अति बुरा, त्यांरो कहता न आवे अन्त रे ।
ते तो नरकां गामी छै नव कड़ा,
त्यां ने ओलखज्यो मतिवन्त रे ॥ ए० ॥ २६ ॥
नागश्री ब्राह्मणी दुख भोगव्यो, नीठ २ पाम्यो तिण अन्त रे ।
सदा वैरी ज्यूं वरते साध ने,
त्यांरो होसी कुण विरतन्त रे ॥ए०॥२७॥
हिव कहि २ ने कितरो कहूं, कई बुद्धिवन्त करज्यो विचार रे ।
जे जे साधां सीर भलदे,
ते तो डूब्या काली धार रे ॥ ए० ॥ २८ ॥

जे सांची ने सांची कहे, ते तो निन्दा में जाणे कोय रे।
सांची ने सांची कहणी निशंक स्युं,
ते पिण अवसर जोय रे ॥ ए० ॥ २६ ॥

ए तो जीव अजीव जांणे नहीं, आश्रव समर री खबर न काय रे।
आश्रव सेवे सर्व धर्म जांण ने,
ए तो चौड़े भूल्या जाय रे ॥ ए० ॥ ३० ॥

उपभोग परिभोग श्रावकां तणो, ते तो द्रव आश्रव मांहि रे।
सेविया सिवाइयां भलो जाणियां
ता में धर्म जाणे छे ताय रे ॥ ए० ॥ ३१ ॥

देव गुरु धर्म ओलख्यां विना, रह्या खाली बादल ज्युं गाज रे।
बले धोरी होय बैठा धर्म ना,
पिण पूरा मूढ अबूझ रे ॥ ए० ॥ ३२ ॥

कई चर्चा में अटके घणां, पिण शुद्ध न बोले मूढ रे।
अण विचारयां ऊंधा बोले घणां,
पिण छोड़े नवि खोटी रूढ रे ॥ ए० ॥ ३३ ॥

बले गुरू रो आचार जांणे नहीं, सरधांरी खबर न काय रे।
भेष धारी भागल टूटल भणी,
तिखुत्तो कर बांधे पाप रे ॥ ए० ॥ ३४ ॥

घी खांड गुड़ मिश्री आदि दे, मोल ले बहरावा जांण रे।
बले निपजो जांणे व्रत बारहमो,
इसड़ा छै मूढ अजांण रे ॥ ए० ॥ ३५ ॥

बारहमों व्रत भाग्यो आपरो, साधांने बहरावे ले मोल रे।
तिकां पिण समझ पड़े नहीं,
तांरा बरतां में मोटी पोल रे ॥ ए० ॥ ३६ ॥

थानक मोल ले गुरु रे कारणे, वले भाड़ै ले गुरु रे काज रे।
बारहमों व्रत भांग भागल हुवा,
नरकां में जासी श्रावक बाज रे ॥ ए० ॥ ३७ ॥
कपड़ा मंगे साधु साधवी, जब हाजर नवि घर मांय रे।
मोल ले बहरावे साधने,
गामां पर गामां सुं मंगाय रे ॥ ए० ॥ ३८ ॥
मोल ले कपड़ो वहरावे, वले धर्म जांणो मन मांहि रे।
इसड़ी सरधा रा श्रावक श्राविका,
ते तो दुरगत पड़ सी जाय रे ॥ ए० ॥ ३६ ॥
जीमणवार ओरां तणे घरे मांड, धोवण ऊणो पांणी जांन रे।
ते साधने वहरावा कारणे,
आपरे घरे राखे आंण रे ॥ ए० ॥ ४० ॥
पछे ते तिड़ावे साधनें, वलें जांणे मने होसी धर्म रे।
एहिवा कुगुरां रा भरमाविया,
भूल्या छे अज्ञानी भरम रे ॥ ए० ॥ ४१ ॥
कोई धोवण जांण अधिको करे, साधां ने वहरावणकाम रे।
ऊनो पानी को भर २ ठामा,
ते पिण ले ले गुरां रो नाम रे ॥ ए० ॥ ४२ ॥
घणा साध साधवी जांणने, अधिको निपजावे आहार ।
पछे भर २ वहरावे पातरा,
ते तो पर भव में होसी खुवार रे॥ ए० ॥४३॥
अशुद्ध आहार पांणी वहराचियां, बांधे पाप करम रा पूर रे ।
साधु पिण जांणी बहरे असूझतो,
ते तो साधु पणां थी दूर रे ॥ ए० ॥ ४४ ॥

कई आहार बहरावे असूझतो, कई कपड़ो बहरावे अशुद्ध रे।
देवे थानकादिक असूझतो,
भ्रष्ट हुई सगलांरी बुद्ध रे ॥ ए० ॥ ४५ ॥
समायक संवर पोसा मंझे, करे सावद्य योगां रा त्याग रे।
तिण में भागलां ने बन्दणा करे,
समाई पोसो पिण गयो भाग रे ॥ ए० ॥ ४६ ॥
एक समाई भांग्यां तेहने, दंड देवे समाई इग्यारह रे।
ते नित का समाई भांगे तिका,
ते तो गया जमारो हार रे ॥ ए०॥ ४७ ॥
सूंस न ले त्यां ने पापी कह्या, लेने भांगे ते महा पापी होय रे।
बले जांण हुवो श्रावक मोट को,
त्यांरे नरक तणी गति जोय रे ॥ ए० ॥ ४८ ॥
माने भागल टूटल एकल भणी, विनती कर राखे चोमासे रे।
ते पिण साधां सुं भेषरा घालिया,
बखांण सुणे तिण पास रे ॥ ए० ॥ ४९ ॥
जो साधांरा ओगण बोले घणां, तिणने हरख सुं देवे दान रे।
बले करे प्रशंसा तेहनी,
घणां देवे आहार सनमान रे ॥ ए० ॥ ५० ॥
उन ने मन में तो साध जांणे नहीं, तो हिये धारे उण रो आघ रे।
तो पिण साधां खंच लाईयां,
त्यां रो निश्चय ही जाणे अभाग रे ॥ ए० ॥ ५१ ॥
आप अधुरा कुगुरु तेहना, गुण बोल्यां बिण रे काम रे।
उबे पिण लोभरा घालिया,
झूंठा २ करे गुण ग्राम रे ॥ ए० ॥ ५२ ॥

एहिवा चालां चरित्र करे तेहिणे, जे पाप उदय हुवे इण भव आंण रे।
दुख असाता अठे हिज हुवे घणां,
पर भव में तो शंका मति आंण रे ॥ ए० ॥ ॥ ५३ ॥

भाग लांरा वखांण वांणी सुण्या, कई पर वजे वेगो मिथ्यात रे।
वले तेत वचन कहे तेहिनें,
हुंकार मुंहरखी वात रे ॥ ए० ॥ ५४ ॥

त्यांरे कुगुरां सुं राग अति घणो, वले साधां सु अत्यन्त द्वेष रे।
दोनुं कानी दिवालो तेहने,
ते तो डूब्यां में डूब्यां विशेष रे ॥ ए० ॥ ५५ ॥

करड़ो डंक लाग्यो कुगरां तणो, तिण सुं करे त्यांरी पक्षपात रे।
त्यां सुं सीधी टेक छूटे नहीं,
त्यांरे घट में घोर मिथ्यात रे ॥ ए० ॥ ५६ ॥

समत अठारह सौ तीस में, असाढ सुद नवमी रविवार रे।
श्रावक नरकां गामी नव कड़ा,
कीध्या रीयां गांम मंझार रे ॥ ए० ॥ ५७ ॥

—०—

॥ ढाल इग्यारहमी ॥

कई भंगी रे घर खावे नही, पिण भंगी रो भीटयो तो खावे।
इसड़ी उतमाई देख विकलां री, डावा ते इचरच पावे रे।
भवियन जोइज्यो हृदय विचारी ।
अकेड़ थे तो छोड़ो कुगुरां री लारो रे।
भवियन कुगुरु छै हीणा आचारी ॥ १ ॥
ज्यूं कई हाथां सुं किवाड़ जड़े उघाड़े, गृहस्थ उघाड़ी दियां करे टालो।

इसड़ो आचार देखो कुगुरां रो,
ते प्रत्यक्ष दाल में कालो रे ॥ भ० ॥ २ ॥

गृहस्थ उघाड़ ने आहार वहरावे, ते वहरने नवि दूषण जाणे।
हांथे जड़ यां उघाड़ यां रो दूषण न जाणो,
इसड़ो छै मूढ अयाणो रे ॥ भ० ॥ ३ ॥

गोचरी जावे जब जड़े किवाड़, पाछा आयां पिण खोले किवाड़,
गृहस्थ रे घरे गयां खोल ने पैसे,
इसड़ो कुगुरां री आचार रै ॥ भ० ॥ ॥ ४ ॥

त्यां ने साथ सरधे त्यां ने भेलां ने राखे, एकण थानक मांहि।
त्यां ने पूछ यां कहे म्हारे नहीं संभोग,
तिण सु तो भेलां उतरां नांहि रै ॥ भ० ॥ ५ ॥

इम कहि २ राते भेला न राखे, एक थानक मांहि।
तो थारे गृहस्थ सु संभोग किसोक छै,
तिण ने मांहि राखो कांई रै ॥ भ० ॥ ६ ॥

गृहस्थ ने भेलो राखे साध ने, न राखे ओ दोनां काणी दीवालो रे।
थाने दोनु बोलां रो प्रायश्चित आवे,
सूत्र निशीथ संभालो रे ॥ भ० ॥ ७ ॥

कोई साधु कुल गण मांही भेद पाड़ कर २ तांण।
तिण ने प्रायश्चित दशमो आवे,
ठाणांग पांचमे ठाणा रे ॥ भ० ॥ ८ ॥

ज्यो दोखीला सु संभोग तोड़े तो, प्रायश्चित मूल न आवे।
बले त्यां दोखीलां ने तेहिज बंधे,
तो सगलां सारिखा थावे ॥भ०॥ ९ ॥

कदा आप दोखीलां ने वन्दना छोड़ै, तो पिण थानक ढुकावे ।
ते आप तणा मतव अरथे,
ठागां सुं काम चलावे रे ॥ भ० ॥ १० ॥
चले धर्म कहे दोपिलाँ ने वान्ध्या, तिण रे आय चुक्यो मिथ्यात ।
तिण समकित सहित साधु पणो खोयो,
ऊंधी सरधे सूत्र री वात रे ॥ भ० ॥ ११ ॥
त्यां दोषीलां ने साध वंदना छोड़ी, त्यां ने श्रावक श्रावकां वंधे ।
तिण रे त्यांरा गुरु री परतीत न आवे,
जिन धर्म ने ओलख्यो आंधे रे ॥ भ० ॥ १२ ॥
त्यांरी परतीत थकी त्यां ने वन्दना छोड़ी, तो आप वन्धणो किण लेखे ।
इसड़ो अन्धारो छै घट भीत रै रे,
जेह ने ते सूत्र न्याय न देखे रे ॥ भ० ॥ १३ ॥
ज्याँ ने दोखीला सरधे त्यां ने हिवे वांधे इसड़ी ।
त्याँरे भोलप मोटी ते समझे नहीं,
ढम ढोल में पड्या सरधा ले रह्या छै खोटी रे ॥ भ० ॥ १४ ॥
ढीला भागलों ने साध वांधे नहीं, लागतो जाणें पाप कर्म ।
तो श्रावक श्राविका वाँधसी त्याँ ने,
किण विध होसी धर्म रे ॥ भ० ॥ १५ ॥
जे घर हुवो असूझतो जिण दिन वहरणों नांय ।
जो उणहिज दिन तिण रे घर रो वहरे,
तो भागलाँ री पांत मांय रे ॥ भ० ॥ १६ ॥
पहलां तो ज्यां घर रो धोवण ल्यावे, तो कठे असूझतो हो जावे ।
पछे तिण हिज दिन तिन हिज टोलां रो,
विण पूछयाँ वहिरी ल्यावे रे ॥ भ० ॥ १७ ॥

उणाहिज दिन उणही टोलां री, मन माने तिण घर जावे ।
असूझतो घर नहीं बतावे,
बिण पूंछ्या वहिरी ल्यावे रे ॥ भ० ॥ १८ ॥
इम प्रत्यक्ष आहार असूझतो खावे, त्यां ने आछी अकल किम आवे ।
ते साध पणां री नाम धरावे,
इण लेखे दुर्गति जावे रे ॥ भ० ॥ १६ ॥
कोई कहे म्हे नित को एकण घर री, नहीं वहरां आहार न पांणी ।
म्हे धोवनादिक वहरां न्हाखी तो,
ओ पण झूंठ बोले छे जांणी रे ॥ भ० ॥ २० ॥
तो पहलां दिन जिण घर जाय वहर सो, अशनादिक चारूं आहार रे ।
बीजे दिन विहार करन्ता नित वहरे,
जब कठे गयो आचार रे ॥ भ० ॥ २१ ॥
ऊनो पाणी पिन नित को वहिरै, कलालादिक रे घरे जाय ।
त्यां ने पूछे पांणी नित को कियां वहिरे,
जब सांच बोल्या नवि जाय रे ॥ भ० ॥ २२ ॥
कोई पाड़ा बंध गोचरी फिरै, न फुटकर घरां रे मांहि ।
शिष्य शिष्यणी सगलां ने मेले,
तिहां वहरै नितरा नित जाय रे ॥ भ० ॥ २३ ॥
एक दोय सिंहाड़ो पहले दिन वहरयो, तिका वहरी विजे दिन जांण।
नितरा नित बहरे एकण टोलां रो,
गुरां रे पासे मेल्यो आंण रे ॥ भ० ॥ २४ ॥
कई एकण गुरु रा शिष्य शिष्यणी छे, चारां पांचा जग्यां रहवै ।
ताहि ते गोचरियां जाय बिण पूछ्या,
मोह मांह एकण घर पिण वहरे आय रे ॥ भ० ॥ २५ ॥

उण घर बहेर स्यो ते घर बीजा दिन टाल रे।
बीजा वहरस्यो ते ओ पण नहीं टाले,
नितरो नित वहरो एकण टोला रो अनाचार कुणसंभाले रे ॥ भ० ॥२६॥
इत्यादिक बले कूड़ कपट सु ं एकण घर वहरे नित को आहार रै।
ते अणाचारी उघाड़ा चोड़े,
ते पिण वाज रह्या अणगार रै ॥ भ० ॥ २७ ॥
चार पांच साध किहा रह्या चोमासे, आप आपरो वहरस्यो पावे।
तो संकड़ाइाई पिण न पड़े तिण रे,
सगलां रे साता होय जावे रे ॥ भ० ॥ २८ ॥
चार पांच अनेक भेला रहे साधु, ते जुवा २ वहरन जावे।
ते एकण दिन एकण घर मांहि,
सगला ही वहरण आवे रे ॥ भ० ॥ २६ ॥
कई साधू नाम धरावै तणरो आचार घणो छै अजोग।
आहार पांणी रा गिरधी छे गाढा,
तिणसु ं तोड़ माहों मांहि संभोगो रे ॥ भ०॥ ३० ॥
कई त्यांरे संभोग ते भेला राखे, त्यांरे केड़े आहार न पांणी।
ते नितरो एकण घर वहरन,
त्यांरा कपट ने लीज्यो पिछानी रे ॥ भ० ॥ ३१ ॥
ते पण मांहो मांहि देवे लेवे तो भेलोहिज आहार न पांणी।
ते नित पिंड एकण घर रो राखे,
एत्यांरा चारित्ररी धुल दांणी रै ॥ भ० ॥ ३२ ॥
सदा भेला रहे नित इण सरधां सु ं, सदा नित पिंड इण विध खावे।
ते पेट भरे साधूरा भेष मांहि,
ठागां सु ं काम चलावे रै ॥ भ० ॥ ३३ ॥

कोई कारन विशेषे रोगादिक आयां, नित पिंड ओषधज्ञ खावे।
राग द्वेष रहित कोई कारण बतावे,
ते तो न खेदणी ने आवे रे ॥ भ० ॥ ३४ ॥
जे जें बोल सूत्र में नांहि, तेहिवा घणा जीत आचार में।
जे प्रत्यच नित २ वहरे एकण घर,
ओ तो उघाड़ो अनाचार रे ॥ भ० ॥ ३५ ॥
पाणी बहर ने धोवण बहरै, ते पिण सरधा खोटी।
धोवण मांहे तो वले छें अशनादिक,
ते बहरयां भोलय मोटी रे ॥ भ० ॥ ३६ ॥
ते धोवण ने पांणी मांह न गिणे, ओ पिण मोटो अंधारो रे।
पाणीं तो चारूं आहार में आयो,
पिण धोवण नहिं निरालो रे ॥ भ० ॥ ३७ ॥
कोई चारो ही आहार नो उपवास करने, ते धोवण पीवे नांहि।
जो धोवण पांणी मांहि ने हुंतो,
क्यूं पीवे उपवास मांहि रे ॥ भ० ॥ ३८ ॥
इकवीस जात रीं धोवण पांणी चाल्यो, ते धोवण पांणी एक जात।
जे धोवण बहर ने पांणी ने बहरै,
त्यांरी मूरख माने बात रे ॥ भ० ॥ ३९ ॥
जो आप तणो बहरयो आप खावे, जो इसड़ो हिंज हुवे आचार।
तो जुवो २ बहर आंण खायां रे,
ते दोष नहीं छै लिगार रे ॥ भ० ॥ ४० ॥
तो जोड करियां ने ओलखावै, इयां हिज उलखायो आचार।
आप थापे ने आप उथापे,
बोल्यां नेवि बन्ध लिगार रे ॥ भ० ॥ ४१ ॥

निरवद्य किरतव कहि २ मूढ़, पड़िया खप करती आवे ।
पिण शुद्ध साधां ने दोखीला ठहरावै,
तिण में हिज दोष बतावै रे ॥ भ० ॥ ४२ ॥

कई आप तणो नाक जावक काटै, पेलां ने कुसूंण काजे ।
ज्यूं साधू ने दोखीला थापण,
आप दोखीला होतां ने लाजे रे ॥ भ० ॥ ४३ ॥

जिण २ किरतवां मांह दूषण थापे, ते छोड़ बतावे ।
ते शूरा पिण छोड़ा गहला झूझे,
ते साध मारग थी दूरा रे ॥ भ० ॥ ४४ ॥

दोष बतावै पिण छोडणी ना आवै, वले साधू नाम धरावे ।
बार २ ते वार्ता करतां
निरलज्जा ने लाज न आवे रे ॥ भ० ॥ ४५ ॥

सुध बुध बिना विचारयां बोले, तो होय बेठ्या छे भड़ंग ।
त्यां सुं चरचा तणो कदे काम पड़ें,
तो जांण के बोले झूंठा रे ॥ भ० ॥ ४६ ॥

इसड़ा छै कुगुरु हीणां आचारी, ते पिण राखे छे मुक्ति री आसो ।
ज्ञानी पुरुष इसड़ा विंकलां रा,
देख रह्या छै तमासो रे ॥ भ० ॥ ४७ ॥

कांणी काजल घाले तिण आंखे, ते शोभा न पांमे लिगार रे ।
जे आचार बतावै पोते ने पाले,
ते पिण मूढ गिंवार रे ॥ भ० ॥ ४८ ॥

जे अणाचारी थकां आचार बतावै, ते यूं ही अनारखी कूकै ।
जांण गया तिण टोलां रे मांहि
नि केवल गधा ज्यूं भूंकै रे ॥ भ० ॥ ४९ ॥

साधू मन करने नवि वंछै किवाड़, उत्तराध्ययन पैंतीस में चाल्यो ।
पिण जड़वो उघाड़वो वरज्यो नन्दी में,
ओ घोंचो कुगुरां रो घाल्यो रे ॥भ० ॥ ५० ॥
मन करनै किवाड़ उघाड़नो न वंछनो, ते जड़वारो परमार्थ जांण।
तेह हांथां सु' जड़वो उघाड़वो किवाड़,
तिणसु' उलटी मत तानो रे ॥ भ० ॥ ५१ ॥
मन करने साधू स्त्री ने वांछै, ते परमार्थ सेवा रो जाणो ।
धर्म परमार्थ वांछे करतो सावद्य,
कदे में पिछाणो रे ॥ भ० ॥ ५२ ॥
मन कर साधु धन नवि वंछै, ते तो राखवा काजे ।
पिण थानक मांहि धन पड़ियो देखे,
तो साधू रे व्रत मूल न भांभ रे ॥ भ० ॥ ५३ ॥
मन कर साधू किवांड़ न वंछै, ते तो जड़वा उघाड़वा कामो ।
तिण किवाड़ ऊपर सु' वेस इत्यादिक,
दोष नहीं छै तामो रे ॥ भ० ॥ ५४॥
चन्द्र वादिक साधू मन करने नवि वंछै, पिण तिहां रह्यां तो दूषण लागे।
पण छूटया चन्दरवाने हांथा वान्ध्या,
ते साध तणो व्रत भांगै रे ॥ भ० ॥ ५५ ॥

॥ दोहा ॥

अरिहन्त, सिद्ध, ने आयरिया, उपाध्याय सर्व साध ।
मुक्ति नगर ना दायका, ए पांचू' पद आराध ॥ १ ॥
वन्दीजे नित तेहने, नीचो शीश नवाय ।
या गुण ओलख वन्दना, कियां भव २ रा दुख जाय ॥ २ ॥
साध साधवी श्रावक श्राविका, जिण भाष्या तीरथ चार ।
मोटी छोटी माला गुण रत्नां री, त्यांने सरिखी कही हितकार ॥ ३ ॥

साध साधवी सगला भणी, चालणो एकण मर्याद।
दोष देखे तो तुरंत बतावणो, ज्यूं वधे नहीं विष वाद ॥ ४ ॥

कोई कषाय वस दुष्ट आत्मा, और साधां शिर दे आल।
त्यां में घणां दिना रो दोष कहे घणी, तिणरो किण विध काढे निकाल ॥ ५ ॥

औरां में बतावे दूषण घणां, तिनरी मूल न मानणी बात।
आ बांधी मर्यादा सर्व साधने, ते लोपनी नहीं तिल मात ॥ ६ ॥

तोहि दोष काढे किण में घणा दिनांरा, वले झूठो करे बकवाद।
ते अपछन्दा निर्लज्ज नागड़ा, तिण लोप दीधी मर्याद ॥ ७ ॥

इसड़ो अजोग नें अलगो किया, जब उघाड़े दोष अनेक।
बोले अवगुण अतिघणा, तिणरी बात न मानणी एक ॥ ८ ॥

इण रीते साधु न चालियां, जब किणरे शंका पड़े नवि काय।
बले विशेषे प्रकट करूं, ते सुणज्यो चित ल्याय ॥ ९ ॥

॥ ढाल बारहवीं ॥

(विनय रा भाव सुण २ रीझे—ए देशी)

हिवे सांभलज्यो आचार नर नार, शुद्ध साधू तणो आचार।
कदा कर्म जोगे दोष लागे, तो प्रायश्चित्त ले गुरु आगे ॥ १ ॥
कोई गण मांहि दोष लगावे, ते निजर आपरी आवे
ते पिण न राखणा दाब, उणने कह देणो शताब ॥ २ ॥
गुरु चेलां ने गुरु भाई माहथों, दोष देखे तो देवे बताई।
त्यां सुं पिण नहीं करणो टालो, तिणरो काढणो तुरंत निकालो ॥३॥
कोई दोष जांणी ने सेवे, तिण रो प्रायश्चित न लेवे।
तिण ने कर देणो गण सुं न्यारो, कुण डूबसी तिण री लारो ॥ ४ ॥

दोषीलां सुं करे आहार पांणी, तिणरो चारित्र हुवे धूल धाणी ।
दोषिलां नें राखे गण मांहि, तो सगला ही भिष्टी थाय ॥ ५ ॥
गुरु रो दोष चेलो ढांके, मुढे पिण कहतो शंके ।
तिणरे छे मोलप मोटी, घर छोड़ ने हुवो छै खोटी ॥ ६ ॥
किणरो द्वेषी कोई होय जावे, तिण में दोष अनेक बतावे ।
कह म्हें छाने राख्या दोष जाण, ते म्हां राखी घणा दिन कांण ॥ ७ ॥
घणां दिनां रा दोष बतावे, ते तो मानणी में किम आवे ।
सांच झूंठ तो केवली जांणे, छदमस्त तो प्रतीत न आणे ॥ ८ ॥
हेत मांहि तो दूषण ढांके, हेत टूट्या कहतो नवि शंके ।
तिणरो किम आवे परतीत, तिण ने जांण लेणो विपरीत ॥ ६ ॥
इण दोखीलां सुं कियो आहार जब पिण नहीं डरयो लिगारो ।
तो हिवे आल दे तो किम डरसी, इणरी प्रतीत तो मूरख करसी ॥ १० ॥
इण दोष क्यां ने किया भेला, इण क्यूं न कह्यो तिण वेला ।
इणरी साधू तणी रीत हुवे, तो जिण दिन रो जिण दिन कहतो ॥११॥
जब ओ कहे म्हे न कह्यो डरतो, गुरु सुं पिण लाज्या मरतो ।
जब उण ने वले कहणो पाछो, तो ने किण विध जांणां आछो ॥ १२ ॥
थे दोषिलां सुं कियो संभोग, थारां बरतियां माठा जोग ।
थांरी प्रतीत न आवे म्हांने, इणरा दोष राख्या छाने ॥ १३ ॥
थे कियो अकारज मोटो, जिण मारग में चलायो खोटो ।
थांरी भ्रष्ट हुई मति बुद्धि, हिव प्रायश्चित लो होवो शुद्धि ॥ १४ ॥
उणने पूछ्यां ओ आरे होय, तो उणने प्रायाश्चत देणां जोय ।
जो पूछयां आरे न होय, तो उण सुं जोर न चाले कोय ॥ १५ ॥
उणरी तो था कहणे सुं संका, पिण तूं तो दोपिलो निशंका ।
इम कहि उण घालणो कूड़ो, प्रायश्चित न लेतो कर देणो दूरो ॥ १६ ॥

जब ले कोई दूजी वार, किणरा दोष न ढांके लिगार ।
दोष ढांक्यां हुवे घणी खुवारी, ढांको भले तो अनन्त संसारी ॥ १७ ॥
शंका सहित न राखे मांहि, तो ओर दोषिला साध न थाही ।
दोषिलां ने जाणी राखे माही, तो सगला ही अशुद्ध थांही ॥ १८ ॥
एक दोष सेवे नित साध, तिण संजम दियो विराध ।
तिण ने गुरु जाण न वांधे कोय, तो अनन्त संसारी होय ॥ १९ ॥
तो घणा दोष सेवे साचात, तिणने गुरु जाण ने वांधे दिन रात ।
ते तो पूरो अज्ञानी वाल, ओ रुलसी कितनो एक काल ॥ २० ॥
एक दोष रो सेवण हार, तिण वांध्या वधे अणन्त संसार ।
तो जिण में जांणो घणां दोष साले, तिण वान्ध्या होसी कुण हवाल ॥२१॥
जांण २ दोषिलां ने वांधे, जिन धर्म न ओलख्यो आंधे ।
ते तो डूव गयो कालीधार, आरे किदूयो अणन्त संसार ॥ २२ ॥
जो दोषिलां रो करे गालो गोलो, तो भ्रष्ट हुवे सव टोलो ।
दोषिलां री करे पक्षपात, तिणरे वेगो आवे मिथ्यात ॥ २३ ॥
छिद्र पर छिद्र धारी राखे, कदेहि काम पड्यां कहि दाखे ।
तिणमें साधू तणी नहिं रीत, तिणरी कुण मानसी परतीत ॥ २४ ॥
एहिवारो वचन गांने सांचो, तो जिण मत पड़ जाये काचो ।
पछे हर कोई झूंठ चलावे, हर कोई में दोष वतावे ॥ २५ ॥
उणरी मान्यां होय जाय सेरी, जिण मत मांहि पड़े विखेरी ।
शुद्ध साधू होवे मोत्यां री माल, त्यांने पिण कोई काढे आल ॥ २६ ॥
घणा दिनारा ढांके दोष विख्यात, तिणरी मूल न मानणी वात ।
शुद्ध साधां री या मर्याद, तिणसुं वधे नहीं विखवाद ॥ २७ ॥
ओर साधां में दूषण देखी, तुरंत कह देणी निरा पेखी ।
तिणरो मूल नहीं पक्षपात, तिणरी मानणी आये वात ॥ २८ ॥

किण में दोष पर पूठा बतावे, ओर सांधां ने आए सुणावे।
तिणरो किण विध काढे निकालो, दोनों भेला नहिं तिण कालो ॥ २६ ॥
एहिवा कारण पड्यां करे जेज, ओर मतलब री नहिं हेज।
दोष ढांकण री रही नीत, था तो जिन मार्ग री रीत ॥ ३० ॥
प्रायश्चित देवांरो छे कामी, त्यां में कदेही में जांणज्यो खामी।
पछे करे दोयां ने भेलां, निकाल काढण उण वेला ॥ ३१ ॥
तिण में दूषण आया जांणो, तिण ने दण्ड दे आणे ठिकाणे।
उतावल सुं न करणो विगाड़ो, प्रायश्चित्त न ले तो करदेणो न्यारो ॥३२॥
कदां सगलां दूषण हुंता ही, दोनुं झगड़ें छे मांहो मांही।
समझाया समझे नांहि, तो केवली ने देणो भुलाई ॥ ३३ ॥

॥ दोहा ॥

विनय मूल धर्म जिन कह्यो, ते जांणे विरला जीव।
ते सत गुरुरो विनय करो, त्यां दीधी मुक्ति री नींव ॥ १ ॥
जो कुगुरु तणो विनय करे, ते किम उतरे भव पार।
ज्यां सुगुरु कुगुरु नवि ओलख्यां, ते गया जमारो हार ॥ २ ॥
कई अज्ञानी इम कहे, गुरु ने बाप एक होय।
भूंडा भला ते गुरु कह्या, त्यांने नवि छोड़ना कोय ॥ ३ ॥
जिण आगम मांहि इम कह्यो, गुरु करणा गुण देख।
खोटा गुरु ने नवि सेवणा, त्यांरी कीमत करणी विशेष ॥ ४ ॥
कुगुरु ने अजान पणे गुरु किया, ठीक पड्या छोड़नो शताब।
आ लीधी टेक न राखणी, ते सुणज्यो सूत्रां रा जवाब ॥ ५ ॥

॥ ढाल तेरहमीं ॥

(चतुर नर छोड़ो कुगुरु संग–ए देशी)

कोई भोला इम कहे जी, गुरु नहिं छोड़नो कोय।
त्यांरा आचार तो ओलख्यो नवि जी, मन आवे ज्यूं बोल सी बाय ॥१॥

गुरु गहला गुरु बावला जी, गुरु देवन का देव।
जो चेलो स्यार्णो हुवे तो, करे गुरांरी सेव ॥ च० ॥ २ ॥
सांचो मारग साधरो जी, खोटा खटावे नांहि।
चेलो गुरु चूके कदां जी, तो छोड़े खिण एक मांहि ॥ च० ॥ ३ ॥
कहो साधु किण कारणे जी, तड़के तोड़े नेह।
आचारी सु' हिले मिले जी, अणाचारी सु' छेह ॥ च० ॥ ४ ॥
नील टांच कीड़ा चुगे जी, मांहि विराजे राम।
गुरु करणी रो कारण को नहि, म्हारे दर्शन सु' हिज काम ॥ च० ॥ ५ ॥
नील टांच कीड़ा चुगेजी, तिणरे दया नहीं घट मांहि।
पापी रो मुख देखतां जी, भलो कठा सु' थाय ॥ च० ॥ ६ ॥
गुण लारे पूजा कही जी, तोह निगुणां पूजता जाय।
चोड़े भूल्या मानवी जी, त्यांमें किम आंणीजे ठाम ॥ च० ॥ ७ ॥
सोना री छुरी चोखी घणी जी, पिण पेट न मारे कोय।
ए लौकिक दृष्टान्त सांभलो जी, तूं हृदय विमासी जोय ॥ च० ॥ ८ ॥
ज्यूं गुरु किया तिरवा भणीं जी, ते ले जासी दुर्गत मांहि।
जे भागल टूटल गुरु हुवे, त्यां ने ऊभा दीजे छिटकाय ॥ च० ॥९॥
खोटा गुरु नें नवि सेवणां जी, श्री वीर गया छै भाप।
कुण २ गुरु ने छोडियो जी, त्यारी सूत्र में छै साख ॥ च० ॥१०॥
जयमाली शिष्य भगवान रो जी, तिणरे चेला पांचसौ जांण।
एक वचन उथाप्यो वीर णोजी, पड़ गयो उलटी तांण ॥ च० ॥ ११ ॥
जब कितनाक चेला तणो जी, तुरंत गयो मन भांझ।
घणा चेला जयमाली ने छोड़िया जी, स्वार्थी नगरी रे बाग ॥ च० ॥१२॥
कई मूढ मिथ्यात्वी खने रह्या जी, कई आया भगवन्त पास।
जयमाली ने खोटो जांण छोड़ियाजी, त्यांने वीर वखाण्यां तास ॥ च० ॥१३॥

जयमाली ने कुगुरु जाण्यां पछे जी, छोड़ दियो तत्काल ।
जो गुरु छोड्यांरी शंका पड़े तो, सूत्र भगवती संभाल ॥ च० ॥ १४ ॥
स्वार्थी नगरी बाहिरेजी, कोढक नामें बाग ।
तठे गोशालो भगवन्त सुं जी, कियो सवा दो लाग ॥ च० ॥ १५ ॥
अजोग बोल्यो भगवन्त ने जी, मूल न राखी कांण ।
दोय साध बाल्या भगवान रा, वीर न कियो लोहि ठांण ॥ च० ॥ १६ ॥
लेश्यां सुं खाली हुवो जांण ने जी, साध आया शताब ।
गोशाले ने प्रश्न पूछियोजी, जब न आयो गोशालाने जबाब ॥ च० ॥१७॥
जब गोशाले रा चेला तणो जी, उतर गयो गोशाला सुं राग ।
तिणने खोटो जांण ने छोड़ियाजी, स्वार्थी नगरी रे बाहर ॥ च० ॥ १८ ॥
त्यां गोशाला ने गुरु किया हुंतो जी, पिण छोड़ता न आंणी लाज ।
पछे गुरु कर श्री भगवन ने रह्योजी, त्यां सारा आत्म काज ॥ च० ॥१९ ॥
कई चेला गोशाले खने रह्या जी, त्यां राखी गोशालारी टेक ।
ते तो कुगुरुने सेवने जी, ए डूबा विना विवेक ॥ च० ॥ २० ॥
गोशाला ने चेला छोड़ियो जी, ते तिरया संसार ।
ए भगवती रा श्रुतस्कंध पन्द्रहवें जी, ते बुद्धिवन्त करज्यो विचार ॥च०॥२१॥
सुख देव सन्यासी गुरु किया जी, सेठ सुदर्शण जांण ।
खोटा जाणां जब छोड़ियाजी, उणारो मूल न राखी कांण ॥ च० ॥ २२ ॥
सोग दिया नगरी तिहां जी, नीलो शोक उद्यान ।
सेठ सुदर्शन तिहां बसेजी, ते डाहो चतुर सुजान ॥ च० ॥ २३ ॥
थावर चा अणगार ने जी, गुरु किया उत्तम जांण ।
सुखदेव सन्यासी ने छोड़ियोजी, तिण श्री जिन धर्म पिछांण॥ च० ॥ २४ ॥
सुखदेव सन्यासी सांभली जी, जब आयो वेग शताब ।
सेठ सुदर्शन रे घरे जी, आयो करवा जवाव ॥ च० ॥ २५ ॥

पछे सुखदेव ने सुदर्शन जी, आयो नीलो सोक उधान।
थावरचा अणगार समझावियोजी, जब आयो घट में ज्ञान ॥ च० ॥२६॥
सुखदेव सन्यासी तिण समे जी, वले चेला एक हजार।
थावरचा अणगार ने गुरु कियो जी, लीध्यो संयम भार ॥ च० ॥ २७ ॥
त्यां आगला गुरु ने छोडतां जी, शंका न आंणी काय।
ज्ञातारा पचमां अध्ययन में जी, चोडे सूत्र रो न्याय ॥ च० ॥ २८ ॥
सेलग राय रिखी स्वर तणां जी, चेला पांचसौ लार
सेलगपुर नगर पधारिया जी, घरना उग्र विहार ॥ च० ॥ २९ ॥
तठै बठै करी त्यांरी विनती जी, शरीर में रोग जांण।
जब रथ शाला में जाय उतरया जी, पछे ओषद कियो आंण ॥ च० ॥३०॥
रोग गयो साता हुई जी, पिण न करे तिहांथी विहार।
खावा पीवा उण चित दियोजी, गृद्धी थको करे आहार ॥ च० ॥ ३१ ॥
उसनो उसनी बिहार हुवो जी, पासताने कुसीलियो जांण।
प्रमादी ने सांसतो एहिवा, ए पांचो बोल पिछांण ॥ च० ॥ ३२ ॥
जब पंथक वरजी पांचसौ जी, मिलने कियो विचार।
गुरु तो पड्या प्रमाद में जी, पण आपाने करणो सिरे छै विहार ॥च०॥३३॥
एहिवी करी विचारणा जी, प्रभाते कियो विहार।
गुरु ने ढीलो जांण छोड़ियो जी, ते धन्य मोटा अणगार ॥ च० ॥ ३४ ॥
पंथक वरजी पांचसौ जी, न आंणी गुरु री प्रतीत।
त्यां ढीलो जांण ने पर हरयोजी, आ जिण मारग री ॥ च० ॥ ३५ ॥
पंथक विया-वच करे तिका जी, तिण ने कई कहे धर्म।
त्यां जिन मारग नवि ओलख्यो जी, भूल्या अज्ञानी भर्म ॥ च० ॥ ३६ ॥
उशनादिक पांचू भणी जी, अशनादिक दे कोय।
तिण में चोमासी दंड निशीथ में जी, पन्द्रहमें उद्देशे जोय ॥ च०॥ ३७ ॥

सेलग ने जिन-थालियो जी, उशनादिक पांचो ही मांय।
तो तिण री बियां वच कियां जी, धर्म कियां थी थाय ॥ च० ॥ ३८ ॥
ज्ञाता अंग में जिण कह्यो जी, म्हारा साध साधवी होय।
जो सेलग ज्यूं ढीलो पड़े जी, तो गण में आछो न कोय ॥ च० ॥ ३९ ॥
घणां साध ने साधवी जी, श्रावक श्राविका मांय।
हेलवा निन्दवा जोग छै जी, जावे अनन्त संसारी थाय ॥ च० ॥ ४० ॥
जे हेलवा निन्दवा जोग छै जी, तिण ने वांधा कियां थी धर्म।
तिण रो विनो विया वच किया जी, निश्चय बंध सी कर्म ॥ च० ॥ ४१ ॥
पंथक बिया वच करां जी, आपरो छांदो जांण।
धर्म नहीं तीन काल में जी, निशीथ सूं करो पिछांण ॥ च० ॥ ४२ ॥
पंथक ने बिया वच थापियो जी, जब सगला ही भेला जांण।
ते पिण छांदो आपरो जी, पूरब ली प्रीत आंण ॥ च० ॥ ४३ ॥
पंथक वरजी पांचसौ जी, गुरु ने छोड्यो खोटा जांण।
पछे शुद्ध हुवो काने सुण्यो जी, जब सगला ही मिलिया आंण ॥ च०॥४४॥
ए ज्ञाता सूत्र में कह्यो जी, पांचमां अध्ययन रे मांय।
खोटा जांण गुरु छोड़ना जी, आ शंका में आणो कोय ॥ च० ॥ ॥ ४५ ॥
सकडाल गोशाला ने गुरु कियो जी, छेला तिर्थंकर जांण।
तिण खोटो जांण्यो जब छोड़ियो जी, उणरी मूल न राखी कांण॥च०॥४६
पछे गुरु किया भगवान ने जी, कियो गोशाला ने दूर।
ए सातमां अंग में कह्यो जी, ते निश्चय में जांणो कूड़ ॥ च० ॥ ४७ ॥
पछे गोशालो सुण आयो तिहां जी, सकडाल ने फेरवा काम।
सकडाल गोशाले ने देख ने जी, बेठ्यो रह्यो एकण ठाम ॥ च० ॥ ४८ ॥
तिणने आदर सन्मान दियो नहीं जी, बले मीट न मेली ताम।
जब गोशाले कपटी थके जी, किया भगवन्तरा गुण ग्राम ॥ च० ॥ ४९ ॥

हाट दीवी उतरवा तेहने' जी, पिण माम पाड़ी तिण ठांम ।
कह्यो तो ने ओ दान दियो तिको जी, म्हारे नहीं धर्म रो काम ॥च०॥५०
अंगाल मरदन साधरे जी, चेला पांच सौ मुनिराय ।
गुरु तो अभवी जीव छै जी, पिण चेला ने खबर न काय ॥ च० ॥ ५१ ॥
एक भंड सुरो आगे चले जी, तिण रे पांचसौ हस्ती लार ।
एहवो सुपनो राय देखनें जी, परभाते करै विचार ॥ च० ॥ ५२ ॥
इतरा मांहि आविया जी, अंगाल मरदन अणगार ।
राजा देखे शंसय पड्यो जी, पछे खबर करी उण वार ॥ च० ॥ ५३ ॥
पछे चेला पण गुरु ने जांणियो जी एह तिरण तारण नवि कोय ।
दया रहित जांणे छोडियो जी, पिण मोह न आण्यो कोय ॥ च० ॥ ५४॥
एठाणांग रा अर्थ में जी, वले कह्यो कथा रे मांय ।
खोटा गुरु ने छोड़नो कह्यो जी, ते निश्चय सूत्र रो न्याय ॥ च०॥ ५५ ॥
हुं कही कही कित रो कहुं जी, गुरु छोडन रा नाम ।
ते सूत्र में छे अति घणां जी, आं कही वा नगी ताम ॥ च० ॥ ५६ ॥
इत्यादिक साध ने साधवी जी, कुगुरु ने छोड़ तिरिया अनेक ।
जे करणी कर मुक्ति गया जी, त्यांरा गुण गाया भगवन्त ॥ ५७ ॥
गुरु २ गहला कर रह्या जी, पिण गुरु री खबर न काय ।
जो हीणाचारी ने गुरु करे जी, तो चहुंगत गोता खाय ॥ च० ॥ ५८ ॥
जो कुगुरु छोड़ सत गुरु करै जी, वले पाले व्रत अभंग ।
ते तिरिया तरसी घणां जी, सत गुरु रे परसंग ॥च०॥५९॥
गुरु ने ढीला जांण छोड़िया जी, त्यांरी कही सूत्र में वात ।
हिवे परम परा गुरु छोड़िया जी, तिण ने जोइज्यो विख्यात ॥च०॥६०॥
लुंके शाह गुरु ने छोड़ ने जी, किधी आपरी थाप ।
जो गुरु छोड्यां में दोष छै जी, तो इण मोटो कियो पाप ॥ च० ॥६१॥

त्यां मां सु' निकल्या ढू'ढिया जी, लू'का गुरु ने छोड़ ।
जो गुरु छोड्या में दोष छै जी, तो थांमे मोटी खोड़ ॥च०॥६२॥
लू'का ने ढीला जांण छोड़िया जी, समेव चारित्र लीध ।
साधु बाज्या तिण दिवस थी जी, ओर गुरु कोई माथे ने कीध ॥च०॥६३॥
जो गुर नहिं मांथे केहने जी, तिण में बतावे दोष ।
तो धुर सु नुगुरा ढू'ढिया जी, इण लेखे ओहि मत फोक ॥ च० ॥ ६४ ॥
कोई कहे गुरु मांथे कियां बिना जी, नहिं उतरे भव पार ।
तो इण लेखे सगलाही ढू'ढिया जी, नुगुरां रो परिवार ॥ च० ॥ ६५ ॥
जो गुरु छोड'यां रो दोष छैजी, बले गुरु नहिं करियां रो दोष ।
ए दोनू' ही दोष ढू'ढियां में जी, ते किण विध जासी मोक्ष ॥ च०॥ ६६ ॥
बले मांहो मांहि ढू'ढिया जी, गुरु छोड़े ताम ।
बले ओर करे गुरु जाय नें जी, तिणरो धरावे नाम ॥ च० ॥ ६७ ॥
कई सम्वेगी रा श्रावक श्राविकांजी, त्यां गुरु कियां ढू'ढिया ताम ।
जो दोष हुवे गुरु छोडियां जी, ए खोटो हुवो काम ॥ च० ॥ ६८ ॥
ढू'ढियां में गुरु छोड'या घणां जी, त्यांरो कुण २ रो कहु' नाम ।
जो दोष हुवे गुरु छोड़ियां जी, तो इये सब डूब्या बेकाम ॥ च० ॥ ६९ ॥
बले भगत सन्यासी सेवड़ा जी, कई गुरु छोड'या ऊभा आय ।
जे ओ ढू'ढिया भणीजी, तुरन्त मु'डेले मांय ॥ च० ॥ ७० ॥
इणरा आगल गुरु छोड़ने जी, आप हुवा गुरु तांण ।
तो दोष कहे गुरु छोड़ियां जी, तो काय बोया त्यांने जांण ॥ ७१ ॥
थारे सरधा रे लेखे इम बोलणो जी, गुरु मत छोड़ो कोय ।
आगला गुरु ने सेवतां जी, थांने शुद्ध गति बेगी होय ॥ च० ॥ ७२ ॥
इम कहणी आवे नहीं जी, जब वोल्यां सुधी बांण ।
खोटा जांण गुरु छोड़ना जी, करना उत्तम गुरु जांण ॥ च० ॥७३॥

तो क्यूं कहो गुरु नहिं छोड़ना जी, क्यूं ढिकाय करो बकवाय।
इण विधि लीध्यां सांकड़ जी, जब कोई एक बोले नांहि ॥ च० ॥ ७४ ॥
कुगुरु छोड़नी सिजा करी जी, रियां गांम मंजार।
समत अठारह तेतीस में जी, आसाढ सुदी ३ ने सोमवार ॥ च० ॥ ७५ ॥

॥ इति श्री भिक्षु कृत कुगुरु छोड़नी ॥

॥ दोहा ॥

भारी करमां जीव संसार में, ते भूल्या अज्ञानी भर्म।
त्यांने गुरु पिण मूढ मूरख मिल्या, ते किण विध पांमे जिण धर्म ॥ १ ॥
शुद्ध साधांरी निन्दा करे, चले दे दे अणहुन्तो आल।
त्यांरे बोल्यांरी समझ त्यांने नही, तिणरो कुण काढे निकाल ॥२॥
त्यांने ठीक नहीं धर्म अधर्म, गुरु कुगुरु री खबर न काय।
चले साधु तणा आचार नी, समझे नहिं मन मांय ॥ ३ ॥
डाकण ने चढवा जरख मिले, जब डाकण हरषित थाय।
ज्यूं भारी करमां ने कुगुरु मिले, जांणे पाछे रहे न काय ॥ ४ ॥
त्यांने कुबुद्धि सिखाय ने, क्लेश करावे दिन रात।
ते कुगुरां सहित जाय कुगति में, तियां मार अनन्ती खाय ॥ ५ ॥

॥ ढाल चौदहमीं ॥

(एक २ तणां दूषण ढांके रे—ए देशी)

अनादी रो जीव गोता खाय, समकित पंथ हाथ नहिं आवे।
मिथ्यात में मांहि कलिया, करम जोग गुरु माठा मिलिया ॥ १ ॥

उशव उदय सुं संवलो नवि सूझे, वले भाव सहित कुगुरां ने पूजे।
ते मुक्ति मार्ग सुं परे टलिया ॥ क० ॥ २ ॥
ते कुगुरां तणे पड़िया पाने, ते सुगुरां तणा गुण नहिं माने।
मिथ्यात में माठा धूलिया ॥ क० ॥ ३ ॥
भारी दोष लगावता नहिं शंके, वलि पंचमे आरे रै सिर न्हाके।
ज्यां सु व्रत नवि जाय पाल्या ॥ क० ॥ ४ ॥
सूत्र रो न्याय नहीं जाणे, कुगुरां री पक्ष काठी तांणे।
ऊंधा २ बोले करमां सुं ब.लया ॥ क० ॥ ५ ॥
भांति २ साधु समझावे, पापी जीव रे मन नवि भावे।
त्यांरी मांठी गतिरा टांका झलिया ॥ क० ॥ ६ ॥
त्यांरा उशव करम तणा जोरा, केवलया थकां रह गया कोरा।
त्यांरा पिण बाला नहिं बलिया ॥ क० ॥ ७ ॥
मेला जीव मारग नहिं आवे, त्यांने उपदेश दियो अहलो जावे।
ते मोह करम सुं माठा कलिया ॥ क० ॥ ८ ॥
भारी कर्मा जीव मूढ मिथ्याती, शुद्ध साधु ने ठीठां बले छाती।
वले ओगण बोलण उघलया ॥ क० ॥ ६ ॥
साधु काजे बांधे ताटा ताटी, विकलारी गति होसी माठी।
वले भींत चुने कर भेला डलिया ॥ क० ॥ १० ॥
साधु काजे पड़दा आंणा बांधे, जिण धर्म नहीं जांण्यो आंधे।
वले छान निपने हलफलिया ॥ क० ॥ ११ ॥
श्रावक ने जिमावे धर्म जांणी, छकाया रो कर रहा घमसाणो।
ते जिन मारग सुं जावक टलिया ॥ क० ॥ १२ ॥
कुगुरु रा दोष जावक ढांके, साधु ने आल देता नवि संके।
त्यांरा लौकिक में पिण गुण गलिया ॥ क० ॥ १३ ॥

त्यांरे कुगुरां रा डंक भारी लाग्या, कजिया राड़ करवा आघ्या ।
वचन बोले अलिया ॥ क० ॥ १४ ॥
न्याय तणी चरचा करतां त्यां, विकला ने वार नहीं लड़तां ।
ऊंधा बोले क्रोध मांहि बलिया ॥ क० ॥ १५ ॥
जिन आज्ञा में न्याय देवे ठेली, अणमतिया उठाय करे बेली बेली ।
पाखंड्यां में जाय मिलिया ॥ क० ॥ १६ ॥
गुणवंत सांधारा कई गुण गावे, ते दुष्टी जीवां रे मन नहिं भावे ।
ते रात दिवस रहे पर जलिया ॥ क० ॥ १७ ॥
जीवादिक नव तत्वरो नहिं निरणो, बले क्रोध तणो लीध्यो शरणो ।
त्यां ने मोह करम अजगर गिलियां ॥ क० ॥ १८ ॥
न मिटयो चारूं गति में आणो जांणो, चोरासी में लागे वेजा ताणो ।
जिन आज्ञा में साम्हां फिर रहा नलिया ॥ क० ॥ १९ ॥
देव गुरु धर्म तणो काजे, जीवां ने हंणता नवि लाजे ।
त्यांने कुमति करी कुगुरु छलिया ॥ क० ॥ २० ॥
आचार री वात लागे खोटी, त्यांमे सुध बुध अकल जावे नाठी ।
आंधे पुरुष मोती दलियां ॥ क० ॥ २१ ॥
आधा कर्मी थानक सेवण लाग्या, ते चरित्र विहुणा छै नागा ।
त्यांने बांधे पूजे माने मन रलिया ॥ क० ॥ २२ ॥
सामायक पोसा में भागला नें वांधे, ते कर्मा रा पुंज भारी बांधे ।
त्यांरा समकित सहित व्रत गलिया ॥ क० ॥ २३ ॥
भागलां ने बांधे जोड़ी हांथ, ते पाप क्रम बांधे साथ ।
उलटा करमां रीयो मिलिया ॥ क० ॥ २४ ॥
हरिया जब देखी ने मृगचर, चावर मांडि में जाय पडे ।
मृग ज्युं शुद्ध मार्ग जावन हिलिया ॥ क० ॥ २५ ॥

आपरा गुरु रा किरतब देखे, तो ऊंचे स्वर बोले किण लेखे।
न्याय बिना बोले सिक टलिया ॥ क० ॥ २६ ॥
त्यांरा कुगुरां रो डंक लाग्यो भारी, ज्यानें आचार री वात लागे खारी।
ते अणाचारी सुं हिल मिलिया ॥ क० ॥ २७ ॥
पंच महाव्रतां री चरचा छेड़े, ते तुरन्त झूठा नो रंग फिरे।
अन्तरंग में आंधणज्यूं ठग लिया ॥ क० ॥ २८ ॥
जो वरतां री चरचा करे त्यां आगे, ते तो क्रोध करी लड़वा लागे।
जांणो भाड़ में से चिणा उछलिया ॥ क० ॥ २६ ॥
जो साधु रो आचार कहे तिण आगे, तो रोम २ में लाय लागे।
मुंह विकलां रे क्रोधे बालिया ॥ क० ॥ ३० ॥
त्यांरे कुगुरां रो डंक लाग्यो जांणो, त्यांरी बोली में नहिं थोड़ ठिकाणो।
कहि २ ने तुरन्त जाय वदल्या ॥ क० ॥ ३१ ॥
जोड़ कीधी कोठारे गाम, समत अठारह से वरस तियालिस ताम।
कातिक सुद ८ ने सोमवार, उत्तम गुरु सेवो नर नार ॥ क० ॥ ३२ ॥

॥ दोहा ॥

साध साधवी ने दान अशुद्ध दे, जांणने अशुद्ध ले साध।
तो दोनुं डूब्या बापड़ा, श्री जिन वचन विराध ॥१॥
अशुद्ध देवाल ने लेवाल नें, कडुआ फल लागे आंण।
ते जथा तथा प्रगट करुं, ते सुणज्यो चरित्र सुजांण ॥ २ ॥

॥ ढाल पन्द्रहवीं ॥

(गोतम स्वामी में गुण घणां—ए देशी)

तीन बोलां कर जीव रे जी, अल्प आउखो बंधाय।
हिंसा करे प्राणी जीवरी, वले बोले मूसा वाय जी।

साधां ने अशुद्ध बहराये जी, हिंसा करे चोखी जाग्यां बंणाये जी।
साधां ने उतारे तिण मांहि जी, त्यांरे अशुभ करम बंधाये जी,
तीजे ठांणे कह्यो जिन राय जी। वले सूत्र भगवती मांय जी।
श्री वीर कहे सुण गोयमा॥ १॥

दड़ लीपे साधां रे कारणे, कई छपरा छावे आये।
केलू पिण फेरता थकां जमीया, जाला उंखाले तांय जी।
नीलण फूलण मारी जाय जी। अनन्ता जीव छै तिण मांहि जी।
वले और हणें छै काय जी। त्यां री दया न आंणी काय जी।
त्यांरो पिण अल्प आउखो बंधाए जी॥ श्री०॥ २॥

वले नीम दिरावे ठेठ सु जी, वले टांकी वजावे ताय जी।
मेला करे भाठा चूना। तिण बहुत मारी छै काय जी।
अणन्त जीव हणिया जाय जी। ते पूरा केम कहाय जी।
साधां ने रेहवारी मन लाय जी। तिण मोटो कियो अन्याय जी,
तिण रे पिण अल्प आउखो बंधाय जी॥ श्री०॥ ३॥

जिण अर्थ दियो थानक करायवा जी, तिण पिण मराई छै काय,
किण ही मोल भाड़ भोगलाविया, किण ही थाप्या राख्या छै ताय जी,
इत्यादिक दोपीला कराये जी, पिण खोद समो कियो जाय जी,
निदर सु मारी छ कायं जी, त्यांरे पिण अल्प आउखो बंधाए जी॥४॥
आहार शय्या वस्त्र पात्रा जी, इत्यादिक द्रव्य अनेक,
अशुद्ध बहरावे साधने ते, डूब्या बिना विवेक जी,
त्यां झाली कुगुरां री टेक जी, त्यांरे करमां तणी काली रेख जी।
त्यां ने शीख न लागे एक जी, गुरु ने भ्रष्ट किया विशेष जी,
शंका हुवे तो सूत्र ज्यो देख जी॥ श्री०॥ ५॥

पाप उदय हुवे तेहने जी, जब पड़े निगोद में जाय,
उत्कृष्टा अनन्ता भव करे, तियां मार अनन्ती खाय जी;
रहे घणी संकड़ाई मांहि जी, जक नहीं छे निगोद में ताय जी,
वले मरण वेगो २ थाय जी, उपजे न विललाय जी,
तिण रो लेखो सुणो चित लाय जी ॥ श्री० ॥ ६ ॥

सत्तर भव जाझा करे, एक सांस उसवास मांहि,
एकण मुहूर्त में भव करे, साढे पैंसठ हजार जी,
वले छतीस अधिक बिचार जी, एहवी जन्म मरण री धार जी,
मरण पांमे अनन्ती वार जी, अनन्ता काल चक्र मंझार जी,
तिणरो वेगो न पांमे पार जी, ए फल पावे निगोद मंझार जी,
अशुद्ध दान तणो दातार जी ॥ श्री० ॥ ७ ॥

कहां पहिलां बन्द पड़े नरक नो जी, तो पडे नरक में जाय,
तिहां षेत्र वेदना छै अति घणी, परमा धामी मारे वतलाये जी ।
तियां मार अनन्ती खाय जी, उठे कुण छुडाये आयजी,
भूख तिरखा अनन्ती ताय जी, दुख मे दुख उपजे आय जी,
अशुद्ध दियां रोये फल थाय जी ॥ श्री० ॥ ८ ॥

दुख भोगता नरक में जी, शेष बाकी रह्या पाप,
ते उपजे तिरजंच में, जठे पिण घणो सोग संताप जी ।
ते छूटे नहीं कीध्यां विलाप जी, वले न्हाखे निगोद में आप जी ।
आड़ो न आवे गुरु न मा बाप जी । दुख भोगवे आपो आप जी,
अशुद्ध दांन दियां धरम थाप जी, ते कुगुरां तणो परताप जी ॥श्री०॥६॥

आधा करमी साधू भोगवे जी, ते बांधे चीकना कर्म,
ते भ्रष्ट थया आचार थी, तिण छोड़ दियो जिण धर्म जी ।

निकल गयो त्यांरो भर्म जी छोडीं लज्जा ने शर्म जी,
त्यां विगोय दियो निज भर्म जी, दुख पावे उत्कृष्टा प्रेम जी ॥श्री०॥१०॥
अशुद्ध जांण ने भोगवे जी, त्यां भांगी जिनवर पाल,
ते भ्रमण करसी संसार में, उत्कृष्टो अनन्तो काल जी,
नरक में जासी तोंको झाल जी, तिण ने मार देसी नरक पाल जी,
लीध्या कर्म संभाल जी, रोसी किरतव सामो निहाल जी,
भगवती पहिलो शतक निकाल जी, लीजो नवमों उद्देशो संभाल जी ॥११॥
साधू रे काजे हणे छे काय ने जी, ते वार अणन्ती हणाय,
जे साधु जांण ने भोगवे, ते पण अनन्ती मरण करे ताय जी।
ए तो दोनु' दुखिया थाय जी, अनन्ता भव मार्‌या जाय जी।
एक वार मारी छै काय जी, त्यां तो दुख भोग वलिया ताय जी,
पिण यां रो पार वेगो नवि आय जी ॥ श्री० ॥ १२ ॥
छ कायरा अशुभ उदै हुवा, तां तो पांमी एकण वार घात जी।
पिण साधू पड्‌यो नरक निगोद में, श्रावकां ने पिण लीध्या साथ जी,
त्यां मानी कुगुरां री वात जी, कीध्या त्रस थावर नी घात जी,
अनन्तो काल दुख में जात जी, वले मरण वेगो २ थाय जी,
त्यांने कुगुरां डुवोया साक्षात जी ॥ श्री० ॥ १३ ॥
गुरु ने डुवोया श्रावकां जी, श्रावकां ने डूवोया साध,
ते दोनु' पड्‌या नरक निगोद में, ते श्री जिनधर्म विराध जी,
डूवा संसार समुद्र अगाघ जी, ते किण विध पांमे समाध जी,
जिण धर्म री रेस न लाध जी ॥ श्री० ॥ १४ ॥
अशुद्ध दान दियो तिण साधने जी, तिण साधू ने लूट्‌यो ताय,
तिणरे पाप उदय हुवो इण विधे, तो दरिद्र धसे घर मांय जी,
रिद्ध संपत जाय बिलाय जी, वले दुख मांहि दिन जाय जी,

कदा न पुन्य भारी हुवे ताय जी, तो इन भव में दुखने पाय जी,
तो पर भव में शंका न काय जी ॥ श्री० ॥ १५ ॥
इम सांभल नर नारियां जी, कोई कीजै मन में विचार,
शुद्ध साधू ने जांण ने जी, अशुद्ध मत दीज्यो किण वार जी,
अशुद्ध में नहिं धर्म लिगार जी, शुद्ध देने लाहो लीज्यो सार जी,
उतर जावो भव पार जी, ओ मिनख जमांरो सार जी ॥ श्री० ॥ १६ ॥

॥ दोहा ॥

इण दुःखम आरे पांचमें, बिगड्यो साधूरो भेष।
शंका हुवे तो पूंछ निर्णय करो, वले अरू बरूल्यो देख ॥ १ ॥
साधु मारग छै सांकड़ो, करड़ो छे त्यांरो आचार।
ते जिण तिण सेती किम पले, जाव जीव रहणो एकण धार ॥२॥
कई सांग पहर साधु हुवा, त्यांरे घट में नवि विवेक।
त्यां साधपणो नवि ओलख्यो, तिणसु सेवे छे दोष अनेक ॥३॥
दोष सेव्यां भांगे साधु पणो, त्यांहने तो पिण खबर न काय।
त्यांने श्रावक पिण तैसा हिज मिल्या, त्यांने समझ पले नहिं मन मांय ॥४॥
जो आचार बतावे साधु रो, तो तुरन्त जागे त्यांने द्वेष।
जांणे निंदा करेछे म्हारा गुरु तणी, घट में नहि शुद्ध विवेक ॥ ५ ॥
आचार बतायां साधरो, तिण में निन्दा सरधे छे मूढ।
ते विवेक विकल सुध बुध बिना, त्यां झाली मिथ्यात री रूढ ॥ ६ ॥
सांची ने झूठी कहे, ते तो निन्दा होय।
सांची बात कहे समझाइवा, ते निन्दा में जाणो कोय ॥ ७ ॥
जे भारी कर्मा जीवरा, त्यांने न गमें आचार री बात।
ते भूल्या छे भरम अनादरा, त्यांरे घट में घोर मिथ्यात ॥ ८ ॥
पिण भव जीवां ने समझायवा, थोड़ी सी कहूं अल्प बात।
ते सुण २ ने नर नारियां, छोड़ो कुगुरां तणी पचपात ॥ ९ ॥

॥ ढाल सोलहवीं ॥

(आधा कर्मी उद्देशी (ए देशी)

कोई साध पणां रो नाम धरावे, पूरो पलै नहीं आचारो ।
त्यांरा श्रावक दोष सेवावण सामल, यां दोयां रे घट में अंधारो रे ।
भवियण जोवो रे हृदय विचारी रे । छोड दो कुगुरां रो लारो रे ।
भवियण कुगुरु छे हीण आचारी रे ॥ १ ॥

आंधा ने आंधिया आय मिलिया, जब कुण बतावे बाटो ।
ज्यों कुगुरु ने विकल श्रावक मिलिया, दोयां रे अकल आड़े पाटो रे । २ ।
त्यांरा श्रावक जीव हणें त्यांरे काजे, त्यांरा श्रावकां ने तो वरजे नाहिं ।
ते तो दोनु हरषे छे जीव हणियां थी, त्यारे दया नहीं घट मांयो रे । ३ ।
कई साधां रे काजे नीलो उखाड़ ने, वर्सतां में मूर्ड जा न्हाके ।
अनन्ता जीवां रो घमसाण करंता, पापी जीव मूल न शंके रे ॥ भ० ॥ ४ ॥
मोटी तिथी आठम ने चौदश, तिण दिन पिण नहीं करे टालो ।
आप डूबा भ्रष्ट करे गुरां ने, आत्मा नें लगावे कालो रे ॥ भ० ॥ ५ ॥
साधां काजे जाग्यां खोदी ने करे विषम जाग्यां ने सूधी ।
नीलण फूलण नीला अंकुरा मारे, त्यांरी अकल घणी छे ऊंधी रे ॥ ६ ॥
वले कसी सुं खोद समी जाग्यां करतां, किड़ी मकोड़ादिक देवे डाटी ।
वले तिण हिज में धर्म जांणे छे भोला,
त्यांरें आई आभ्यन्तर पाटी रे ॥ भ० ॥ ७ ॥

वले साधां रे काजे केलू करावे, जमियां उखेड़े जालो ।
वले नीलण फूलण रो जीवा नें मारी,
तस जीवां रो पिण करे खंगातो रे ॥भ०॥८॥

घणो खात कचरादिक पड़ियो हुवे जाग्यां में, बुहार भेलो करे साधु काजे ।
पछे ओढ़ि २ करें नखावे, तोपिण निरलज्जा मूल न लाजे रे ॥६॥

साधु काजे दड़ लीपे छपरा छावे, चन्द्रवान तातादिक बांधे ।
बले विभद पणो घात करे जीवांरी,
जिण धर्म न ओलख्यो आंधे रे ॥ भ० ॥ १० ॥
एहिवा किरतब करे साधां रे कारण, त्यांने साध निखेदे जो नांहि ।
बले आप मतलब जांण ने राजी हुवे,
त्यांने गिनीज्यो मति सांधां मांहि रे ॥भ०॥११॥
एहिवा किरतब करवावे आसना करने, आपरे सुख साता रे काजे ।
बले पहरण सांग साधू रो छो त्यांरो,
पिण निरलज्जा मूल न लाजे रे ॥ भ० ॥ १२ ॥
जीवांरी घात करने जाग्यां करे चोखी, तठे रहिवा नहिं जाग्यां त्यांरी ।
ते तो प्रत्यक्ष असाध उघाड़ा दोषी,
त्यांने वीर कह्या भेष धारी रे ॥ भ० ॥ १३ ॥
कई साधां रे कारण नींच दिराये, नवि करावे जाग्यां ।
तिण जाग्यां में साध रहे तो, व्रत विहूणा नागा रे ॥ भ० ॥ १४ ॥
कई साधां रे कारण मोल ले जाग्यां, कोई साधां रे काजे ले भाड़े ।
तिण मांहि रहे तो अणाचारी निश्चय,
शुद्ध साधु तणी पाँत बाहरै रे ॥ भ० ॥ १५ ॥
साधू काजे दड़ लीपे गार घालनें, ते पिण क्रम बांधे बूढा ।
साधु पिण तिण ठाम रहे तो,
चहुं गति मांहि दीससी भूंडा रे ॥ भ० ॥ १६ ॥
ए थानक तणां छै दोष अनेक, ते तो पूरा केम कुहाय ।
अशुद्ध थानक भोगवे भेष धारी, ते भोला ने खबर न काय रे ॥भ॥१७॥
नाटकियो सांग सांग सांधांरो आंणे, ते पिण सांग तणी बरग खुवा ।
भेष धारयां सुं तो साधु रो भेष लाज्यो,
श्वान ज्यूं पकड़ रह्यां हाड़ा रें ॥ भ० ॥१८ ॥

अजुण काल में पांचमें आरे, घणी हीण पड़ी छै बुद्धि ।
एहिवा अणाचारी ने साध सरधे,
त्यां में कोई नहीं दीसे शुद्ध रे ॥ भ० ॥ १९ ॥
एहिवा भाव सुणे भारी कर्मा, पामें नही चमत्कार ।
कर्म जोगे त्यां ने कुगुरु मिलिया,
तिणरो किण विध मिटै अंधारो रे ॥ भ० ॥ २० ॥
त्यांरा थानक में कोई दोष बतावे तो, बोले घणां आल पंपालो ।
पाछो जबाब न आवे जब, क्रोध करने देवे अणहुंतो आलो रे ॥भ०॥२१॥
शुद्ध साधु तो शुद्ध थानक में रहे छै, त्या में दोष बतावे अनाखी ।
झूंठ बोले छै आप सरीसा करण ने,
त्यांरा झूंठा बोल्या छै साखी रे ॥ भ० ॥ २२ ॥
शुद्ध साधू रे आल देतां नहीं शंकै, आपरा दोष ढांके निशंकै ।
दोनुं प्रकारे बूड़ गया छै, आप रो नवि सूझै वंक रे ॥ भ० ॥ २३ ॥
परभाते आहार वहरयो तिण घर रो, आथण रो बहरे दाल न रोटी ।
कारण विना दोनुं टंक बहर ने ल्यावें, आ पिण चलगत खोटी रे ॥२४॥
परभाते आहार लियो तिण घर रो, दोपांरे घूघरियादिक आणे ।
आथण रो ल्यावे ऊंना दाल न रोटा,
शंका पिण किण री न आणे रे ॥ भ० ॥ २५ ॥
त्यां रा श्रावक पिण विवेक रा विकल, त्यांरे मूल पड़े नहिं शंका ।
जैसे को तैसा आय मिल्या हिव, कुण काढ़े त्यांरो वंक रे ॥ भ० ॥ २६ ॥
देवकी रे घरे आया तीन सिंघाड़ा, तिण रे तो तुरंत पड़ गई शंका ।
तिण तो पूंछ निर्णय कियो, रुडी रीत शंका काड़ हुई निशंक रे २७ ॥
त्यांरा श्रावक रे घरे वहरन जावे, ए दिन में वार अनेक ।
तो पिण संका पड़े नहीं त्यारे, ज्यां में तो शुद्ध नहीं छे विवेक रे ॥२७॥

कारण बिना ऊनो आहार ल्यावे आथण रो,
नहीं गेरडो गिलाण विशेष, घालीयो ऊनी दाल न रोटा।
रेस के तिण छे ढीला ज्यां लग भेष रे ॥ भा० ॥ २६ ॥

कोई राखड़यादिक तिव्हार आथण रो, जब तो पहला करे गाला गोलो।
पीछे रस गिरधी फिर आथण रो, त्यां जा घर जा संभालो रे ॥ ३० ॥

छतो आहार मिले परभात रो, त्यां ने तो पिण गिरधी थको वहरे नांहि।
जांणे आथण रो लेस्युं तिह्वार रो जीमण,
तार्यां बीजा लागा तिण मांहि रे ॥ भ० ॥ ३१ ॥

इम आरत ध्यान करता दिन काढे, सिंझारा ल्यावे सेवा ने कसा।
वरते घृत खांड रा करे चबोला, इण विध पूजे तिह्वार रे ॥ भ० ॥ ३२ ॥

इण विध तिह्वार पूजे रस गिरधी, ते पिण नाम धरावे साधू।
ताजा आहार तूंटा परे पापी,
त्यांरे किण विध होसी समाध रे ॥ भ० ॥ ३३ ॥

ताजा आहार तिह्वार रो सरस जाणे, तो चांप २ खावे भरपूर एहिवा।
विकलाई करे छे तिण रा, पड़ी साध पणों में धूल रे ॥ भ० ॥ ३४ ॥

एहिवा रस गिरधी जीभांरा लंपटी, त्यां रो विगड़ गयो भेष।
त्यां ने साध सरधे बांधे पूज अज्ञानी,
ते पिण डूब्या विना विवेक रे ॥ भ० ॥ ३५ ॥

कोई कारण पड़ियां जाय आथण रा, जब दोष नहीं छै लिगार।
विना कारण जाय तिह्वार जांणी,
त्यां ने छै तीन धिक्कार रे ॥ भ० ॥ ३६ ॥

कोई गृहस्थ घरसुं बोलावण आयो, म्हारे घर बहरण पधारो।
तेड़िया तिण रे घर जाय जांण नें, किम कहिजे अणगारो रे ॥ ३७ ॥

तेड़न आयो छ काया भार देतां, तिणरा हांथ सु' पिण नहीं करे टालो ।
तेडिया गया में दोष न सरधे, त्यांरे आयो अन्तर जालो रे ॥ ३८ ॥
कदा करम ज्ञोगे साधू तेड़ियो जावे, तो प्रायश्चित ले हुवै शुद्धो ।
पिण सदा तेड़िया जाय, तिणरा भ्रष्ट हुवै छै बुद्धो रे ॥ भ० ॥ ३६ ॥
जो सहज ही गृहस्थ आयो छै थानक में, ते कहे म्हारी कानी दसां पधारो ।
तिण भाव भेद न आंएयो सांधांरो, जव गया नहीं दोष लिगारो रे ॥४०॥
तेड़िया जाय ने अण दीय्यो लेवे, ते ने मांहि निश्चय भिष्टी ।
एहिवा भागल भ्रष्ट हुवे छे त्यांने, साध सरधे नहीं समदृष्टि रे ॥ ४१ ॥
कहि भेष धारी गृहस्थ ने देवे, पूठा पाना परत विशेष ।
लोट पातरा ने ओघो पूंजनी देवे, तो भ्रष्ट हुवा लेहि भेष रे ॥भ० ॥४२॥
कोई भोला गृहस्थ तो इम जांणे, म्हासु' दीसे स्वामी जी री माया ।
पूंझनी काढ दीनी छै म्हानै, तिणसु' म्हे पालां छै दया रे ॥भ० ॥४३॥
गृहस्थ ने साधू पूंजणी दीय्यां, भोला तो जांणे दोष न लागे ।
पिण निशीथ सूत्र में श्री जिन भाष्यो,

तिण रो चोमासी चारित्र भांगे रे ॥ भ० ॥ ४४ ॥
गृहस्थ ने साधु पूंजणी देवे, ते नेमें निश्चय छै भिष्टी ।
पिण भोलां रे भावे ते तेहिज साधू ,

तिण ने असाधु सरधे समदृष्टि रे ॥ भ० ॥ ४५ ॥
कई कहे पूंजनी सु' तो दया पाले छै, तिण ने साधू पूंजणी देवे ।
साधु तिण लेखे तो मुह पत्री पिण देणी, इणसु' दया पालसी बांध रे ।४६।
वले धोवणादिक पिण देणों गृहस्थ ने, तिणसे काचा पाणी तणो हुवे टालो ।
आपिण दया पाले इणलेखे, पूंजणी रो न्याय संभालो रे ॥भ० ॥ ४७ ॥
पूंजणी देणी तो रोटी पिण देणी, तिणसु' टाले चूल्हारो आरम्भ ।
पूंजणी देवे रोटी नहिं देवे, इयांरी सरधा रो वड़ो अचंभोरे ॥भ० ॥४८॥

कोई काचा पांणी सु' कपड़ादिक धोवे, वाटादिक में घाले काचो पांणी।
तिणरो धोवणादिक देणो दया पलावणी,
पू'जनी देवांरा लेखे जांणी रे ॥ भ० ॥ ४६ ॥
पूजनी सु' तो गिणचा जीवा पू'जी, जे ते पणथोड़ा सा अल्प मात।
ऊनो पांणी धोवणादिक दीध्यां, टाले अणन्त जीवां रा घात रे ॥ ५० ॥
गृहस्थ ने एक पू'जणी देणी, तिण लेखे तो देणी वस्तु अनेक।
थोड़ी सी वस्तु साधु देवे गृहस्थ नें, आखो व्रत रहे नहिं एक रे ॥ ५१ ॥
गृहस्थ ने साधु हाथ पकड़नें, राग करनें हेठो बसाणे।
इये भागल भेष धारी छै त्यांने, डावा हुवे ते साध ने जांणे रे ॥ ५२ ॥
सम्मत अठारह इक्यावन वरसै, सावण सुद तीज ने बुधवार।
भेष धारयां ने ओलखाण काजे, जोड़ कीधी सिरियारी मंझार रे ॥ ५३ ॥

॥ दोहा ॥

इम दुःखम आरे पांचमे, गुण विना वधियो भेष।
ते समकित व्रत विना फिरे, भूल्या सरव विशेष ॥ १ ॥
ते सार भी ते संपरग्री, वले करे अकार्य अनेक।
ते साधू नाम धरावतां, त्यां झाली मिथ्यात री टेक ॥ २ ॥
त्यां जुवा २ गच्छ बांधिया, मांहो मांहि करे कजिया राड़।
त्यांरी सरधा चलगत जुई २, वले जुई २ भाषे आचार ॥ ३ ॥
जब साधां सु' चरचा करे, जब सगला एक होय जाय।
कहे सगलाई साध छां, एहिवी बोलें अज्ञानी वाय ॥ ४ ॥
सावज काम करतां ने करावतां, शंका आंणे नवि मन मांहि।
हिव कुण २ अकार्य कर रहया, ते सुणज्यो चित लाय ॥ ५ ॥

॥ ढाल सत्रहमीं ॥

(भवियण जोवो रे हृदय विचारी– ए देशी)

साधां रे कारण थानक करावे छे, छ कायां रो कर धमसाण ।
तिण थानक मां रहिवा लाग्या, त्यां छोड़ी छै श्री जिन आणों रे ।
भवियण जोवो रे हृदय विचारी, थे छोड़ द्यो कुगुरां रो लारो रे ।
भवियण जे तूं उतरो भव पारो रे ॥ १ ॥
सांप्रती एहिवा थानक भोगवे, वले झूंठा बोले ठाम २ ।
कहे थानक म्हारे काजे न कीध्या,
श्रावकां रे कामें कियो तांम रे ॥ भ० ॥ २ ॥
तिणरा श्रावकां ने कहे न इम बोले,
थानक ने कहे धर्मशालो,
ज्यूं थारी मारी आछी लागे लोकां में,
म्हाने तो दूषण सुं टालो रे ॥ भ० ॥ ३ ॥
त्यां ने श्रावक पिण तेहिवा ही मिलिया,
त्यां ने ज्यूं सिखावे ज्यूं बोल कहे ।
धर्मशाला म्हारे काजे कराई,
झूंठ बोलै बाजते ढोलै रे ॥ भ० ॥ ४ ॥
श्रावक त्यांसुं रीझ रह्या छै,
जांणे बोले पढाया सूला ।
त्यां में जाण पणा री युक्ति न दीसे,
ते तो निन्दक साधां रा कह्या रे ॥भ० ॥५ ॥
वेपारियां नें ठगावे सीसा, उजाड़ में धतूरो खवायो ।
ते लोभ भमियां करे ताम, आऊ उजाड़ रे मांहि रे ॥ भ० ॥ ६ ॥

ज्यूं भेषधारी लोकां ने वेसाखी, भूंठ बोलनो त्यांने सिखायो।
इण थानक ने कहे धर्मशाला, ते धर्मशाला कहितां मरसी ताह्यों रे ॥७॥
साधां रे काजे थानक कीध्यो चोड़ें, छकायां री कर खंगालो।
ते थानक प्रत्यक्ष छै पापशाला, तिणरो नाम दियौ धर्मशाला रे ॥ ८ ॥
तिण थानक में साध रहे काजे, मन गमती राखे बारी।
तिण हिंसा थकी साधनें श्रावकांरी, भव २ में होसी खुवारी रे ॥ ६ ॥
सारा श्रावक मूढ मति छै, जांण २ गुरु रो दोष ढांकै।
आधा कर्मी थानक ने कहे धमशाला, भूंठ बोलतां मूल न शंके ॥ १० ॥
एहिवा भूंठ बोल्यां ने पूछा कीजे, थे तो धर्मशाला करावण काजे ।
थे रुपिया कठां थी आंण कराई, जब पाछो जबाब देतां लाजे रे ॥११॥
मिनष आतरयो घूड़ रे के जूत्यो, तें धन उदके थानक कामें।
ते दान लेई धर्मशाला करावे, एहिवा दान लेता कुण नवि लाजे रे ॥१२॥
बले धर्मशाला करावण काजे, लेवे अउंतरो मालो।
ओ निर्मायल माल लोकांरो लेवै, ओतो खांपण वालो प्यालो रे ॥१३॥
कोई अन्तकाल समय धन उदके, रंक गरीब भिखारी त्यांही।
ते धन लेई धर्मशाला करावो, तिणमें करो पोसा समाई रे ॥ १४ ॥
बले गावां सुं पर गावां सुं मांगणी करणे, करायो छौ धर्मशालो।
थे भिक्षा मांगो नीचो हांथ मांडो, थांरे कुल सामों क्यों नहीं निहालो रे।
थे मोटका मिनख भाजो लोकां में, वेड़ा २ करो छो किरिया। बरकांजो
थे धर्मशाला कराई, अयोग्य दांन ले थे छोड़दी धर्म न लाजो रे ॥१६॥
थे निर्माल्य दान मुरदारो लेई ने, थे धर्मशाला करवाई।
ते दान तणो लेवाल छे, कुंण २ तिणरो थे नाम बतावोरे ॥ १७ ॥
अठे तो धर्म जांणी दांन दे अन्त काले, तिणरो लेवाल किणने थाप्यो।
थे पहलां रे बदले भूंठ बोलने, कांई विगोवो आपो रे ॥ १८ ॥

दातार तो दान दे इम जांणी, सांधारी जाग्या बधांवण ताईं ।
इण रुपियां साटे चोखो थानक करासी, तो साध उतरसी तिणमांहि रे ॥१९
ज्यूं जांणे धन उदके आतरये, तिके वल साधां रे कामे ।
वे कहो इसो दान साध कांने ले, किसो श्रावक लियो छे तामें रे ॥२०॥
ओ तो दान साध श्रावक कियो छे, तो तीजो न दीसे कोई ।
इण दान तणो झेलू हुवे तिणरो, चौड़े नाम बताय द्यो सोई रे ॥ २१ ॥
जो साधां रो नाम बताय चोड़े, ते साध सहित श्रावक सर्व भूंड़ा ।
जो श्रावक दान लियो कहते, न्यात जात में दीसे भूंडा रे ॥ २२ ॥
त्यां में कई एक तो पापकर्म सूं डरता, कई एक लौकिक सूं डरता ।
ते तो कहदे थानक साधां रे कारज कीध्यो,
सूधा बोले छे लाजां मरता रे ॥ भ० ॥ २३ ॥
कई कहे थानक म्हारे काजे कियो छे, वद २ ने कहे बारंबार ।
त्या इसणां २ कई झूठा बोला छे,
त्यांरे घर में घोर अंधारो रे ॥ भ० ॥ २४ ॥
त्यां झूंठा बोलां ने पाछो इम कहणो, तो थे लिया अंतरया रो दान ।
इण दान थकी जानें न्यात लोकां में,
थे होस्यो घणा हैरान रे ॥ भ० ॥ २५ ॥
मिनप आतरयो ने धुरड़ को जूत्यो, तिण दान रा थे लेवालो रे ।
दाने लेई धर्मशाला करे, जब थे कुल में लगायो कालो रे ॥ भ० ॥ २६ ॥
निर्माल्य दान मुरदां रो लेई ने, जाग्यां कराये हरखो ।
तिण देखी तिण जाग्या मांहि करो,
पोसा समायक तो उड़ गयो जाबक सेखी रे ॥ भ० ॥ २७ ॥
थे सांप्रत मुरदा रो दान लेई ने, सांधा काजे थानक कावे ।
थे कहो थानक म्हारे काजे कीध्यो,
ओ तो झूंठ कुगुरां री सिखायो ॥ २८ ॥

आप २ तणा थानक री ममता, घर पीढ्यां लग लागी छै।
थारी मर्जी विना अनेरा टोलां रा,
कुण धंसे तिण मांहिरे ॥ भ० ॥ २६ ॥
मठ बांधी मठ धार्यां ज्यूं बैठा, ओरां ने उतरण दे नांहि।
कदा उतरण दे तो धणियांपो थांरो, उतारे खोज मांडण तांई रे ॥ ३० ॥
आपरे तणा थानक मांण बैठा, औरां ने उतरण दे नांहिं।
कदा उतरण देतो धणीआपो थां रो उतारे खोज मांडण ताई रे ॥ ३१ ॥
थानक निमित अर्थ लागे ते, करे सामग्री ही ने मेलो।
और सामग्री तणां नहीं देवे, थांरे नांहि छे मांहो माहिलो रे ॥ ३२ ॥
वले ग्राम पर ग्राम सुं अर्थ मंगावे, ते पण सामग्री मांहि।
कोई शरमा शरमी देवे अनेरे, ते तो लाखां में नांहि रे ॥ भ० ३३ ॥
गछ वासी ज्यूं गच्छ मांहि बैठा, आप २ तणा थानक ठहराया।
ते पण साधू वाजे लोकां में, ते पण भोलाने खवर न कायो रे ॥ ३४ ॥
मुरदां रो दान ले थानक करावे, ते थानक नहिं छे श्रेष्ठ।
तिण थानक मांहि साध रहे छे, ते तो नेमाई निश्चय भ्रष्ट रे ॥ ३५ ॥
मुरदां रो दान ले थानक करायो, त्यांरी भ्रष्ट हुई छे बुद्धि।
तिण थानक में करे पोषा समाई, ते पण श्रावक नहिं छे शुद्ध रे ॥ ३६ ॥
कोई मांदो आतयों ने घुरड़ो जूत्यो, ते तो धन्य उदके थानक काजे।
ते आतर्यादिकरो दान लेई ने, लोकां में वधारा वेठा रे ॥ ३७ ॥
इण दान रो लेवाल किण ने ठहरावे, किण रो ठेका वधै छै राज्यो।
ओ किण २ रो बध्यो छे परिग्री, ओ किण २ रे आवसी काजो रे ।३८।
इण मुरदां रो दान ले थानक करायो, त्यांरी मति घणी छै मांठी।
तिण थानक में करे पोसा समाई, त्यांरी अकल आड़ी आई पाटी रे ।३९।

ए तो निर्माल्य मुर्दां रो माल, ते रांक भिखारी ले भोगवै।
तेरा चार तीर्थ उत्तम एहिवा, दान ने हाथ घाले रे ॥ ४० ॥
एहिवो फितूर खानो मांड रह्यो लोकां में, त्यां मति मांहि मोटी भोलो।
बुद्धिवन्त विन कुण काढे निकालो, चहुं मांडी रह्या गांगी रोलो रे ।४१।
त्यांरा थानक रो काई काढे निकालो, जब बोले घणा आल पंपालो।
शुद्ध साधू रहे निर्दोषित जाग्यां में,
त्यांरे उलटा देवे साधां ने आलो रे ॥ ४२ ॥
आधा कर्मादिक थानक छे दोषीला, तिण ने दियो छै निर्दोष थापी।
निर्दोष जाग्या में साध रहे छे, तिणमें दोष कहे छे पापी रे ॥ ४३ ॥
एहिवी अयोग्य जाग्यां में रहसी, त्यां में अकल पिण एहवी आवे।
त्यांरो अशुद्ध उपदेश मुहड़ा री वांणी,
ए भव जीवां ने किम समझावे रे ॥ ४४ ॥
जांण २ ने एहिवी जाग्यां सेवे, वले अशुद्ध लेवे अन्न पांणी।
ते प्रत्यक्ष जैन तणां विगड़ायल, त्यांरी खोटी बखांण री वांणी रे ।४५।
वीर विक्रमादित्य रे सिंहासन बैठॉ, लोक कहे आछी बुद्धि आवे।
त्यूं निर्दोष जाग्यां भोगवे, त्यांरे आछी २ अकल बुद्धि आवे रे॥ ४६ ॥
माहों मॉहि कहे सगलाही सांथ, मांहि मां सगलां री बन्दना छुड़ावै।
वले मांहो मांह सरधा कहे त्यांरी खोटी,
माहो मांह दोष अनेक बतावै ॥ ४७ ॥
मांहो मांह आप २ तणा श्रावक ने, साधू कहे त्यांस्र भिड़कावे।
ते समाथक पोसा न करे त्यांरे पासे,
वले वखाण सुनने नवि जावै रे ॥ भ० ॥ ४८ ॥
माहों मांप साध करें त्यांरी वन्दणा छुड़ा, त्यां विकलां री किसी परतीत।
कपटी थकां भूंठा बोलें अज्ञानी, त्यांनै साध तणी नही रीत रे ॥ ४९ ॥

साथ सरधे त्यांरी बन्दणा छुड़ावे, त्यांरी सरधा घणो विपरीत ।
साध कहे त्यांने बांधा धर्म न सरधे, ते भव २ में होसी फजीत रे । ५० ।
मांहो मांह भेला हुवा करें नहिं, वन्दना सातां पण गुण छै नांहि ।
आवो पधारो छै नहीं मांहो मांह, नहीं उतारें थानक मांहि रे ॥ ५१ ॥
आमना जंणाय गृहस्थ ने, मांहो मांहि दे वन्दना छुड़ाय ।
बलें साध मांहो मांह कहे किण लेखे,
ओपण अंधकार त्यांरा मत मांहि रे ॥ ५२ ॥
जग में दोय कोड़ साध भाझेरा, उत्कृष्टा नव सहस्र कोड़ ।
त्यां साधां ने थे वान्दो बन्दावो, शीश नवावे वे कर जोड़ रे ॥ ५३ ॥
त्यांरे वन्दना छोड्यो त्यां साधां ने, काढा साध तणी पांत वारो ।
त्यांनें बलें तेहिज साध सरधे, ओपण विकलां रो नहीं छै विचारो रे ।५४।
ज्यां साधांरी बन्दना छुड़ावै, त्यांने साध कहे किण लेखे ।
आभ्यन्तर आंख हियां री फूटी, ते सूत्र सामो नहिं देखे रे ॥भ०॥५५॥
साध सरध त्यांरी बन्दना छुड़ावै, ते डूब गया काली धारो ।
ते भारी कर्मी छै मूढ मिथ्याती, त्यांरा घट मांहि घोर अन्धारो रे ॥५६॥
मांहो मांहि साध कहे मुहड़ा सुं, त्या पिण करे अन्तरंग द्वेष ।
बले ईसको खेदो करे छै मांहो मांह, त्यां पहर बिगाड़ो भेष रे ॥५७॥
जांन कह दे तो कहे साध छां, कामे तान कदेक कहे देता असाध ।
फिरवां भाषा बोले अज्ञानी, त्यांरी किण विध होसी समाध रे ॥५८॥
एहिवा भेष धार्‌यां रा बखाण सुणे छै,
त्यां रे दिन २ होवै जाड़ो मिथ्यात ।
ते क्लेश कदागरो करे साधांसुं, छेड़े विवाद करे ऊंधी बात रे ॥५९॥
सम्मत अठारह बावन वर्षे, भाद्रवा वद सातम शुकवार ।
जोड़ कीधी कुगुरां रो कपट उलखावण, पाली शहर मंझारो रे ॥६०॥

॥ दोहा ॥

भेष धारी भागल कुटिल हुवा, त्यांसू पले नवि आचार ।
दोष सेवे छे जाँण ने, पूंछया सांच न बोलें लिगार ॥१॥
त्यांरे पोथ्यां तणो गंज देखने, कोई प्रश्न पूंछियो एम ।
ओ पोथ्यां रो गंज पड्यो तेहने, पडिलेहणा करो छो केम ॥२॥
जब भारी कर्मा जीवां थकी, सांच बोल्यो नहिं जाय ।
निज दोष काढण ने पापिया, बोलें छे मिरथा वाय ॥३॥
कहे पोथ्यां पडिलेहणी, चाली नहीं किण ही सूत्र रे मांह ।
तिण सूं नहिं पडिलें हां पोथियां, थे शंका में राखो काय ॥४॥
पोथ्या नें नवि पडिलेंहियां, तिण रो नहि मां ने दोष न पाप ।
म्हाने हिंसा पिण मूल लागे नहीं, एहिवी किदी लोकां में थाप॥५॥
कपड़ा वा पाट वा बाजोटम्हे भोगवां, त्यांरी करणी पडिलेहण जोय ।
नहिं भोग वेव्यां कपड़ादिक तेहणा, नहि पडिलेहा दोष न कोय ॥६॥
एहिवा झूंठ बोल दोष काढ ने, ते भोला ने खबर न काय ।
हिवे कूड़ कपट त्यांरो सुणो, एका एक चित्त लगाय ॥७॥

—○—
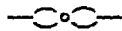
॥ ढाल अठारहवीं ॥

(एक अंकूरा वनस्पती में—ए देशी)

कहे पोथ्यां री पडिलेहणा नवि चाली, तिणरी भापे छे एकन्त झूंठी रे ।
सूत्र अर्थ सवला नहि सूझै, तिणरी हियां डियांरी फूटी रै ।
झूंठ बोला रो संग न कीजें ॥ १ ॥
जो थोड़ा पण उपद नहीं पड़लेंहे, तिण ने मासिक दंड बतायां है ।
शंका हुवे तो निशीथ मांहि जोवो, दूजें उद्देश्ये मांहि रै ॥ झू० ॥ २ ॥

वलें आवश्यक दशवैकालिक आदि देई, घणां सूत्र री साख रै।
नित पडिलेहण करणी साध ने, श्री वीर गया छै भाप रै ॥झू०॥३॥
राखे रेत पोथी ने आखो थानक पड़ा री पिण वावरी, थान उपध छेह रै
मांही रे त्यांने न एक वार तो अवश्य पड़िलेहे।
बिन पड़िलेहे न राखी कोई रै ॥ झू० ॥ ४ ॥
भेष धारी कहे पोथ्यां नहिं उपध में, तिण सूं पोथ्यां पडिलेहॉण नाहीं रै।
एतो ज्ञान तेणी ने सराय छै, तिण सूं नहीं पड़िलेहां दोष न कोई रै॥५॥
झूठ बोल पोथी री पड़िलेहण उथापे, तिणने भारी करमा जीव जांणो रै।
तिण रो न्याय सुणो भव जीवा, पिण झूंठा रो पक्ष मत ताना रै ॥६॥
पोथ्यां रो गंज बिन पड़िलेह्यां राखे, तिण में जमे जीव रा जालो रै।
नीलण फूलण चोमासा मांहि आवे,
घणां जीवारो हुवै खंगाल रै ॥ झू० ॥ ७ ॥
किड़ियां कंथवादिक जीवां रा समूहे, उपज २ मरोतण ठाम रै।
बिन पड़िलेह्यां पोथ्यारा गंज में, त्यांरी भारी मच्यो संग्रामों रें ॥८॥
बिन पड़िलेह्यां पोथ्यां रा गंज में, अणन्त जीवां तणी होवे घातो रै।
तिणरो पाप दोष लागे नहिं सरधे, त्यांरी विकल माने छै बातो रै ॥९॥
पोथ्यां रा गंज ने बिन पड़िलेह्यां राखे, अनन्त जीवां रा होवें धमासाणों रे।
तिण ने हिंसा तणो पाप किणने लागे, चोड़े कहतां शंका मत आंणो रे।१०
जो पोथ्यां री हिंसारी पाप लाग्यो हुवे, तो पोथ्यां रो नाम बतावो रे।
नाम परनाम पापरो झेलू बतायो, थांरी सरधाने मतिए छिपायोरे ॥११॥
जों किण ही ने पाप न लागी हुवे तो, ओपिण कहो निशंको रे।
जैसी हुवे तैसी कही बतावो, छोड़ो हियारो बंको रे ॥ झू० ॥ १२ ॥
त्यांरे प्रश्न पूंछारो जवाब न आवे, जब कूड़ा २ कुहेत लगावै रै।
आल पंपाल बोले बिना बिचार्‌यां, गाल्यां रो गोलो मुखसुं चलावै रे।१३

पोथ्यां रो गंज विन पड़िलेहां राखो, त्यांने पाप लागे भरपूरो रे।
पोथ्यां विन पडिलह्याँ रो पाप न सरधै, त्यांरो तो मत जाचक कूड़ो रे।१४
पोथ्यांरा गंज विन पडिलेह्या' राखे, त्यांरी सदा रहे असमाधो रे।
पोथ्यां रा गंजसु' जीव मरे अनन्ता, त्यांने निश्चय ही जांणो असाध रे १५
कहे पोथ्यां ने कवही नहि पड़लेहां, तिणरा दोप न लागे कोई रे।
गृहस्थरे घरे पोथ्यां ने मेल्यां, ओ पिण दोप छै नाहिं रे॥ भू० ॥ १६ ॥
पोथ्यां नहि पड़िलेहरो दोप न लाग्या,

तो गाडां में मेल्या रो दोप छै नाहिं रे।

वले वैठिया पोठी पांच ल्यावे, ओ पण दोप न लागी कांई रे॥भू० ॥१७॥
जो पोथ्यां नहिं पड़िलेहा रो दोप न लागे,

तो मोल लीध्या वहरावे दोख नांहिं रें।

दीस्यादिक दोप सेवे पोथ्यां रें तांई, त्यांरें लेखे तो दोप न काय रें।१८।
पोथ्यां नहिं पड़िलें हे छै त्यांरें लेख, मेलना गृहस्था रें घर मांयो रें।
ओवरा वखारी में पिण मेलणी,

पोथ्यां ने विण पड़लेह्यां राखे, तिण न्यायो रें॥भू० ॥ १६ ॥

कहे पोथ्यां री पड़लेहण करणी, ते नहिं छै सूत्र रे मांहो रे।
तो गृहस्थ रें घरें पोथ्यां मेलण रो ओ पिण नहीं छै निकाल त्यांहोरें।२०।
पोथ्यांरी पड़िलेहणा सूत्र में नहिं चाली, पोथ्यां ने गिणे उपधरें मांहि रें।
इम कहर अज्ञानी पड़िलेहणा छोड़ी, ओतो चौड़े कपट चलायो रै॥२१॥
पाट वाजोट कपट करिया राखे, इत्यादिक उपध विशेप रे।
त्यॉ ने उपध जाँण पड़लेहवा नहीं, आ दोप किण लेखे रै॥भू०॥२२॥
आखा थानक ने विन पड़िलेहां राखे, नवि पड़िलेह पीछो पड़ी सिवाड़ी रै।
वले पड़िलेहा विन उपध राखे अनेक,

त्यां खोई संयम रूपी नियमों रे॥ भू०॥ २३ ॥

कपड़ा नें पोथ्यां नें आलां मांय घाले, उपर गारो लीपे काठो रे।
जबं पूरी पडलेहणां त्यांरी, चारित्र घट मांह सुं नाठा रे ॥ झू०॥२४॥

मास छ मास तांई न खोलै, आलो जब जमें जीवां रो जालो रे।
त्यों में जीव अनेक उपजै नेप पछै, एहिवा गुरु छै विकलां वाला रे ॥२५॥

थानक आड़ा परदा बांधे छै ते, साध हाथां सूं खोल नं बांधे रे।
तिण रे साध पणो न पलतो लाग्यो, ओ दोष म जांणे बांधे रे ॥२६॥

तिण पड़दे रे नीलण फूलण आवे, आड़ा दियो छै ताला रे।
तिण हिंसा तणो पाप साधु ने हुवे छै,
तिण सूं पहलो महाव्रत भाँगे रे ॥ झू० ॥ २७ ॥

जो तीसरा खण पड़दो हेठो करे छै, जब तो पड़दो भोगविया साधो रे।
तिण ने देव तणो परिग्रह लागो, जिण चारित्र दियो विराधो रे ॥२८॥

जब कहे गृहस्थ रो आज्ञा लेने, म्हे पड़त मेल्यां ठिकाने रे।
तिण लेखे तो गृहस्थ नी आज्ञा लेने,
सिरख राखणी शीत ढांकण सारू रे ॥ झू० ॥२९॥

साधू रे कारण पडदा बांधे छे, ते कर्म बांधे हुवे भारी रे।
तिण पड़दाँ में रहे साध जांण ने,
तिण री पण घणी खुवारी रे ॥ झू० ॥ ३० ॥

कारण विना पण महीने सुं अधिका रहे छें,
त्यां भांग्यो कल्प लोपी मर्यादो रे।
तिण दोष तणो प्रायश्चित तहिं लेवे,
बले पूछयां करे बकवादो रे ॥ झू० ॥ ३१ ॥

कई चोमासो उतर गयां पछे, कारण बिना रहिवा लाग्यो रे।
खांवा पीवां कपड़ादिक कांजे, त्यांसूं छूटे नहीं सदी आंगां रे ॥ ३२ ॥

चोमासो करे तिण गांम नगर में, नही करे चोमासो दोरो रे।
तथा पहली चोमासो करे तिण गामें,
तिण चारित्र चोड़ विगोयो रे ॥ झू० ॥ ३३ ॥
छती शक्ति छै पगां चालण री तोही, ले छै कारण रो नामो रे।
कारण कहे छे दोप रो खोज भांगण ने रे,
पिण रहे छें मतलब कांमों रे ॥ झू० ॥ ३४ ॥
त्यां में कोई मतलब खाधा रे काजे,
कोई चेला मतलब काजे रे ॥ झू० ॥ ३५ ॥
कोई रहे कपड़ादिक काजे, तिण सूं झूठ बोलो नवि लाजे रे ॥ ३६ ॥
कोई जणावे म्हारा श्रावक फिर जासी, तिम तमां पड़ंसी अधारो रे।
फिरता २ कदा सर्व फिरे तो, इयां थी छुट जासी पग म्हारा रे॥ ३७ ॥
जो श्रावक म्हारा फिर जाए म्हारा थी,
तो पछे कारी न लागे कायो रे।
भगवन्त बांधी मर्यादा भांग ने, देवे चौंमासो ठहरायो रे ॥झू०॥३८॥
कल्प मर्यादा लोपतां शंक न आंणें, ताम साध तणी नहीं रीतो रे।
ते तो इयह लोकांरा अर्थ छै अज्ञानी,
ते चहुंगत में होसी फजीतो रे ॥ झू० ॥ ३९ ॥
साध एक मास रह्यो तिण गांमें, तो विमणा दिन काढना बारै रे।
तठा पहली पण तंहां आय रहे छै, ते विटल हुवा वेकारो रे ॥झू०॥४०॥
कल्प भांग ने करे चोमासो, कल्प भांगने करे शेपे कालो रे।
अणहुंतो अज्ञानी कारण बतावे, त्यां सुं झूंठ तणो नहिं टालो रे ॥४१॥
कल्प भांगने करे चोमासो, कल्प भांगने रहे शेपे कालो रे।
तिणं नें साधु पिण जांणे पूजे अज्ञानी,
त्यांरे आयो आभ्यन्तर जालो रे ॥ झू० ॥ ४२ ॥

जैसा ही पूज्य ने जैसा ही चेला, जैसा ही परिवार छे दूजो रे ।
कल्प मांगने करें चौमासो, ते पूज्य छे पूरो अबूझो रे ॥ झू० ॥ ४३ ॥
दोष सेव्यां रो प्रायश्चित न लेवे अज्ञानी, सुधी नहिं पाले मर्यादो रे ।
ए विधि ग्राम बस्ती में रहे, तिण गच्छ में भगवन्त रा नहिं साध रे ॥४४॥
थानक मांहि पांणी बचे, जिम ठाम ठामड़ा झेल पांणी रे ।
तिणं हिंसा लागे छै त्रस थावर री,
तिणरो दोष न जांणे आयाणा रे ॥ ४५ ॥

काचो पांणी ले पोते जाय ठोलें, तिणने दया घट में सूं नाठी रे ।
एहिवा साधु पिण बाजें लोकां में, त्यांरी चौड़े चलगत मांठी रे ॥ ४६ ॥
त्यांरा गहस्थणी थानक आय लीपै, जब आर्या धोवण गारां में घालै रे ।
कई आर्यां हाथां सूं दड़ लीपे छे, कई गारा पीड़ा हांथा झाले रे ॥४७॥
कई आर्यां थानक तणी छै, जाग्यां पड़ी हुवे तो थानक मांहि आणे रे ।
त्यां छे जां स्थाने आपणी कर जांणे रे,
तिणसूं मेलदे एकन्त आण ठिकाणे रे ॥ ४८ ॥

औषधादिक अधकी आणे बधै छे, ते बेसी राखे रातो रे ।
त्यांने पूछ्या कहे ए तो गृहस्थ री छै,
तिणरी फेर आज्ञा ले प्रभाते रे ॥ ४९ ॥

आपरी वस्तु थानक में बासी राखे ते, गृहस्थरी थापी किण न्याय रे ।
बले गृहस्थ रो आज्ञा लेवे किण लेखे,
त्यां में आ पिण अकल न कायो रे ॥ ५० ॥

मुवां गया रा पातरा अधिका, हुवे तो त्यांरी पिण ममता रुके नहीं रे ।
त्याने पड़िलेह्यां राखे बिन, पडिलेह्यां आपरा थानक मांहि रे ॥५१॥
लोट पातरा थानक में पड़िया देखीने, कोई प्रश्न पूछे छे आमो रे ।

ऐ तो लोट पातरा सांवठा किणरा,

जब तो कहे गृहस्थरा ठामों रे ॥ ५२ ॥

लोट पातरा गृहस्थरा कहिने, आप न्यारो होय जावे रे ।

एहिवा एहिवा झूंठ जांण ने बोले,

त्यां मे साधू रो खेरो न पावे रे ॥ ५३ ॥

गृहस्थ रा लोट पातरा क्यांने चाहिजे, ते थानक में मेले क्याने रें ।

आपरा पात्रा ने कहे गृहस्थरा, साध नहिं कहिजे त्याने रें ॥ ५४ ॥

जो आपरे चाहिजें पात्रा लोट, तो लेवे छे तिण मांसुं तामों रे ।

वले मूयां गयां रा वधे लोट पात्रा, ते मेल देवे तिण ठामो रे ॥ ५५ ॥

ए तो कोठ्यार ज्यूं छै लोट ने पात्रा, ते तो निश्चय त्यांरा जांणो रे ।

भेप धारी कहे ए तो गृहस्थ रा छै,

त्यां विकलांरी करज्यो पिछानों रें ॥ ५६ ॥

विन पडलेहां राखे पहलो व्रत भांगो, वीजो व्रत भांगो झूठ भाषे रें ।

तीजो व्रत भांगे जिण आज्ञा लोप्यां रे,

पांचवो व्रत भांगै अधिको राखे रे ॥ ५७ ॥

आचार कुशीलीया तिण लेखे तो, चोथो न छठो व्रत भांगे रे ।

विन पड़िलेहियां पात्रा अधिका राखे, ते व्रत विहूणा नागो रे ॥ ५ ॥

लोट पात्रा ने उपध अधिका राखे, त्यांमे छै मोटी खोड़ो रे ।

अधिका राखे नवि पड़लेहां, ते तो निश्चय भगवान रा चोरो रें ॥ ५६ ॥

कुगुरां ने ओलखावण जोड़ करी छै, सोजत शहर मंझारो रे ।

समत अठारह बरस तिरपने, आसोज सुद सातम थावर वारो रे ॥ ६० ॥

॥ दोहा ॥

कई भेष धारी भूला थका, कर रह्या ऊंधी तांण ।
अव्रत बतावे साधरे, ते सूत्र अर्थ अजांण ॥ १ ॥
त्यां साधपणो नहिं ओलख्यो, भूल्या भ्रम गिंवार।
सर्व सावजरा त्याग मुख से कहे, बले पापरो कहे आगार ॥ २ ॥
आहार पांणी कपड़ा ऊपरें, रह्या सदा मुरझाय ।
ए भेष धारयां रे अव्रत खरी, पिण साधां रे अव्रत नहिं काय ।३।
च्यार गुण ठाणां अव्रत सही, त्यां नहीं व्रत लिगार ।
देस व्रत गुण ठाणों पांचमों, आगे सर्व बरती अणगार ॥ ४ ॥
जो साधां रे अव्रत हुवे तो, सर्व व्रती कुण होय ।
त्यांरा भाव भेद प्रकट करूं, ते सांभलज्यो सब कोय ॥ ५ ॥

॥ ढाल उगणींसमीं ॥

(आ अणु कम्पा जिण आज्ञा में—ए देशी)

चोवीसमां श्री वीर जिनेश्वर, निर्दोष आहार आणी ने खायो ।
शुद्ध परिणामां उदर में उतारयो, तिणमांही मूर्ख पाप बतायो ।
इण पाखण्ड मत रो निर्णय कीजे ॥ ई० ॥ १ ॥
अणन्त चौबीसी मुक्त गई ते, आहार ल्याया था दूषण टालो ।
तिण मांहीं पाप बतावे अज्ञानी, त्यां सगलां रे शिर दीध्यो आलो ॥२॥
सर्व सावद्य योगां रा त्याग करि नें, सर्व व्रती शुद्ध साध कहावे ।
तरण तारण पुरुषां रे अज्ञानी, अव्रत रो आगार बतावे ॥ ई० ॥ ३ ॥
गोतम आदि दे साध अनन्ता, साधवियां रो छेह न पारो ।
सगलां रो आहार अधर्म मांही घाल्यो,
तिण आंख मिची ने कीध्यो अंधारो ॥ ई० ॥ ४ ॥

साधूरो जन्म हुवो जिण दिन थी, कल्पै ते वस्तु वहरी ने लावे ।
ते पिण अरिहन्त नी आज्ञा सूं, तिण मांही मूरख पाप बतावे ॥ ई० ॥५॥
वस्त्र पात्रा रजो हरणादिक, साधूरा उपध सूत्र मांही चाल्या ।
अरिहन्त री आज्ञा सुं राख्या, अधर्म मांहिं अज्ञानी घाल्या ॥ ई० ॥ ६ ॥
दशवैकालिक ठाणांग अंग में, प्रश्न व्याकरण उववाई मांह्यो ।
धर्म उपध साधू व्रत में, तिण मांही दुष्टी पाप बतायो ॥ ई० ॥ ७ ॥
किण ही गृहस्थ लीलोतरी नें त्यागी, जीवे त्यांलग आण वैरागो ।
साध पणो लेई अव्रत सरधे, तो विवेक विकल खाइवा काइ लागो ॥ ८ ॥
अधर्म जाणे लीलोतरी खाध्यां, तो पचखांण भांग्यो किण लेखे ।
घर में थकां जाव जीव त्यागी थी, इण साहमो मूरख क्यूँ नहिं देखे ॥९॥
किण ही गृहस्थ जें जें वस्तु त्यागी थी, तो अधर्म रो मूल अव्रत जांणो ।
साध पणों लेई सेववा लाग्यो, ते क्यों न पाले लिया पचखांणो ॥ई०॥ १०॥
अव्रत सरधने सूंस न पाले, तिण भागलां रे छे भारी कर्मों ।
मार्ग छोड़ ने उजाड़ पड़िया, साध आहार कियां में सरधे अधर्मो ॥ई॥११॥
करे वियावच चेला गुरु री, करम तणी कोड़ तेह खपावे ।
तिर्थंकर गोत्र बधे उत्कृष्टो, पिण गुरु ने मूर्ख पाप बतावे ॥ई०॥१२॥
दश बीस चेला परिक्कमणो करने, गुरू री व्यावच करवाने आवे ।
तो गुरू ने पाप लगाय अज्ञानी, दुर्गति माहिं काय पहुंचावै ॥ई०॥१३॥
गुरू ने पाप लागे वियावच करायां, सूत्र मांही कठे ही ने चाल्यो ।
मूढ मति जीव भारी कर्मी, ओ पिण घोंचो कुगुरां रो घाल्यो ॥ई०॥१४॥
गुरु ने पाप सुं भेला किया में, चेलां रा कर्म कटे किण लेखे ।
आभ्यन्तर फूटी ने अन्ध थया ते, सूत्र सामो मूढ मूल न देखे ॥ई०॥१५॥
साध मांहों-मांहि देवे न लेवे, वस्त्र पात्र आहार न पांणी ।
ते पिण लीध्यां में पाप बतावे, एहिवी कुपात्र बोले वांणी ॥ ई० ॥ १६ ॥

दातार ने धर्म साधां ने वहरायां, पिण साध वहरी हुवा पाप सूं भारो।
दातार तिरिया साध डूब्या, आ पिण सरधा कहे भेषधारी ॥ ई० ॥१७॥
जो पाप लागे साधू आहार कियां में, तिण रे पाप रो साभ दियो दातारो।
तिण री आशा राखे किण लेखे, भूल्या रे भूल्या थे मूढ गिंवारो ॥ई०॥१८॥
साधां तो पाप अठारह ही त्याग्या, चोखी छे त्यांरी सुमति न गुप्ति।
दातार खने शुद्धजांच लिया में, पाप कठे सुं लाग्यो कुमति ॥ ई० ॥१९॥
गुरू दीक्षा देई शिष्य शिष्यनी करे ते, निर्जरा रा भेद मांहि चाल्या।
मोह मिथ्यात सूं भारी कर्मा, इये पिण परिग्रह मांहि घाल्या ॥ई०॥२०॥
छठे गुण ठांणे परमाद कहि ने, साधां रे अव्रत थापे खुवारी।
पूंछे तो कहे म्हे सरब बरती छां, ओ पिण झूंठ बोले भेषधारी ॥२१॥
छठे गुण ठांणे परमाद कह्यो ते, किण हिक वेलां लागतो जाणो।
विशेष कषाय अशुभ योग आयां, पिण मूढमति करे ऊंधी तांणो ॥ई०॥२२॥
परमाद व्रत कहे आहार उपध सूंकर रह्या, कुबुद्धि कूडी बकवादो।
आहार उपध केवली पिण आंणे, तठे गयो त्यांरो परमादो ॥ ई० ॥२३॥
अप्रमादीनी क्रिया सात में गुण ठांणे, प्रमाद नहीं तिण गुण ठाणा आगे।
आहार उपध हुवे पिण भोगवतां, त्यो सांधां ने प्रमाद क्यूं नहिं लागे ॥२४॥
केवलि आचरियो छदमस्त आचरियो, केवली त्यागो ते छदमस्त त्यागो।
आहार औषध केवली ज्यूं भोगवियां, तिण साधांने प्रमाद किण विधलागे।२५॥
साध आहार करतां चारित्र कुशले, शुद्ध परिणामां सुं कटे आगला कर्मो।
जद ऊंध मति कोई आंवलो बोले, घणो खावो ज्यूं घणो हुवे धर्मो ॥२६॥
पोहर रात तांई साधु ऊँचे शब्दे, धर्म कथा कहे मोटे मंडाणे।
उण ऊंध मति री सरधा रे लेखे, आखी रात में करणो बखांणो ॥ई०॥२७॥
जेणां सुं साधु करे परलेहणा, काटवा कर्म आत्मा ने उतरणी।
उण अंधमतिरी सरधा रे लेखे, आखो ही दिन परलेहण करणी ॥ २८ ॥

मर्यादा सु' आहार साधां नें करणो, मर्यादा सु' करणो बखाणो ।
मर्यादा सु' परलेहणा करणी, समझो रे समझो थे मूढ अयाणो ॥ई०॥२९॥
छ कारण आहार सांधां ने करणो, घणो २ खासी किण लेखे ।
छाईसमां उत्तराध्ययन में छे, बले छठो ठांणो मूढ क्यू' नहि देखे ॥३०॥
कहे धर्म हुवे साधू आहार किया में, तो क्यां ने करे आहार रा पचकाणो ।
पाप जांणी ने त्याग करे छे, उल्ट बुद्धि बोले एहवि बांणो ॥ ई० ॥ ३१ ॥
साधू काउ संग में त्याग्यो हालवो चालवो, बले मुखसु' न बोले निरवद्य बांणो,
उण उलट बुद्धि री सरधा रे लेखे, ए पिण पाप तणा पचकांणो ॥ ३२ ॥
कोई साध बोलण रा त्याग करी मौन साधे,
धर्म कथा मांड़ी ने करे बखांणो ।
उण उलट बुद्धि री सरधा रे लेखे, इये पिण पाप तणा पचकांणो ॥ ३३ ॥
कोई साधू साधां ने आहार देवण रा, त्याग करे मन उछरंग आंणो ।
उण उलट बुद्धि री सरधा रे लेखे, इये पिण पाप तणा पचकाणो ॥ ३४ ॥
कई साधू साधां री न करे बियावच, त्याग करे मन उचरंग आणो ।
उण उलट बुद्धि री सरधा रे लेखे, इये पिण पाप तणा पचकाणो ॥ ३५ ॥
साधा मूल गुण में सर्व सावद्य त्यागो, तिण सु'नवा पाप न लागे जांणो ।
आगला कर्म काटण साधां रे, उतर गुण छे दश विध पचकाणो ॥
आ सरधा श्री जिनवर भाषी ॥ ए आंकड़ी ॥ ३६ ॥
कोई वास बेलादिक करे संथारो, कोई साध करे नित रो नित आहरो ॥
पापरा त्याग दोयां रे सरीखा, पिण तप तणो छे भदेज न्यारो ॥आ०॥३७॥
जेणा सु' चाल्या जेणा सु' उभ्या, जेणा सु' बैठ्या जेणा सु' सुवता ।
जेणा सु' भोजन कियां, जेणा सु' बोल्या,
तिण साधू ने पाप न कह्यो भगवन्ता ॥ अ० ॥ ३८ ॥

दशवैकालिक चौथे अध्ययनें, आठमीं गाथा अरिहन्त भाषी।
छ बोल साधू जेणा सुं क्रियां में, पाप कहे भारी कर्मा अनाखी ॥ ३९ ॥
निरवद्य गोचरी रिषीश्वरां री, मोक्षरी साधन भगवन्त भाषी ॥
दशवैकालिक पांचमें अध्ययने, बांणवी गाथा बोले साखी ॥आ० ॥४० ॥
शुद्ध आहार कियां साधू शुद्ध गति जावे, निर्दोष दियां जावे शुद्ध गति दाता।
दशवैकालिक पांचमें अध्ययनें, पहिला उद्देशा री छेहली गाथा ॥ ४१ ॥
सात कर्म साधू ढीला पाड़े, सूझतो आहार करे तिण कालो।
भगवती सूत्र पहिले श्रुतस्कन्धे, नवमों उद्देशो जोय संभालो ॥आ०॥४२॥
आहार करे गुरु री आज्ञा सुं; तिण साधू ने वीर कह्यो छे मोखो।
अठारमो अध्ययन ज्ञाता रो जेई, संशय काटो मेटो मन रो धोखो ॥४३॥
शब्द रूप गंध रस स्पर्श री, साधां रे अव्रत मूल न कायो।
सुगडायंग अध्ययन अठारहमें, और उववाई सूत्र मांयो ॥ अ० ॥ ४४ ॥
साधां रे अव्रत कहे पाखण्डी, तिण कुमती री संगत दूर निवारो।
इम सांभल ने उत्तम नर नारी, सर्व व्रती गुरु माथे धारो ॥ अ० ॥ ४५ ॥

—○—

॥ ढाल बीसमों ॥

आधा कर्मी उदेसी भोगवे तिण ने, निश्चय कह्या अणाचारी।
दशवैकालिक रे तीजे अध्ययने,
शंका में जाणो लिगारी, भवियण जोयज्यो हृदय विमासी ॥१॥
आधा कर्मी उदेसी भोगवे, तिणने भ्रष्ट कह्यो भगवान्।
दशवैकालिक रे छठे अध्ययने, निर्णय करो बुद्धिमान् रे ॥ भवि० ॥ २ ॥
आधा कर्मी उदेसी भोगवे तिणने, नरक गामी कह्या भगवान् रे।
उत्तराध्ययन रे बीसमें अध्ययने, निर्णय करो बुद्धिमान् रे ॥ भवि० ॥३॥

आधा कर्मी उदेसी भोगवे तिणना, छहुं व्रत भांग्या जाण ।
आचारांग रे दूजे अध्ययने, जोई करो पिछांण रे । ॥ भवि०॥४॥
आधा कर्मी उदेशिक भोगवे, तिण में छे मोटी खोड़ रे ।
आचारांग पहले श्रुतस्कन्धे, कह दियो भगवन्त चोर रे ॥भवि०॥५॥
आधा कर्मी उदेशिक भोगवे अधिगत जीव,
बलि कह्या छे अनन्त संसारी ।
भगवती रे पहिले शतक रे नवमों उदेशे,
तियां बहुत कियो विस्तार रे ॥ भवि० ॥ ॥ ६ ॥
आधाकर्मी उदेशिक भोगवे, तिण ने कह्या गृही ने भेष धारी ।
दो अपछरा सेवणहार कह्या छै,
सुयगड़ांग दूजे श्रुतस्कंध मंझारी रे ॥ भवि० ॥७ ॥
आधा कर्मी उदेशिक एक वार भोगवे, तिणने चोमासी प्रायश्चित देणो ।
सदा नितरो नित तठे सुं भोगवे, तिण ने प्रायश्चित रो कांई करणो रे ॥८॥
आधा कर्मी उदेसी भोगवे, तिण ने सबलो दूषण लागे ।
सदां नितरो नित तठे सुं भोगवे, तिण ने प्रायाश्चित रो कांई थागे ॥९॥
साधू काजे दड़ लीपे जठे, कीड़ी मकोड़ी देवे दाटी ।
अनेक त्रस जीवां ने मारे, त्यांरी विकलां री गत होसी माठी रे ॥१०॥
अनेक त्रस जीवां ने मारे, अनेकां पर देवे दाटी ।
कुगुरु काजे जीव इण विध मारे, त्यांरी अकलां आड़ी आई पाटी ॥११॥
स्वास ऊश्वास रूंधी जो मारे, महा मोहणी कर्म बंधे ।
ए कह्यो दशा श्रुतस्कंध सूत्र में, ते पिण विकलां ने खबर न क्राये रे ॥१२॥
चोगठ रो तिण खोणा है जठे, किड़ी आला खांग में आवे ।
घर लीपे दड़ रूंघे जठे, कीड़ियां लाखां गमें मर जावे ॥भवि॥१३॥
पोती क्रम दोष सेवे तिणने, कह्या गृहस्थी ने भेष धारी ।

दो अपचरा सेवणहार कह्‌यां छै,
सुयगड़ांग दूजा श्रुतस्कंध मंझारो रे ॥भवि०॥१४॥
पोती क्रम दोष में आधा कर्मी दोष विशेष छै भारी ।
सदा नित रो नित आधा कर्मी दोष सेवे छे,
ते निश्चय नहीं अणगारी ॥ भ० ॥ १५ ॥
आधा कर्मी स्थानक सेवै उघाड़ो, वलि साधू बाजे अनाखी ।
महा मोहणी कर्म बांधे छे, दशा श्रुतस्कंध सूत्र छै साखी ॥भवि०॥१६॥
आधा कर्मी स्थानक सेवे उघाड़े, पूछ्‌यां थी पाधरो बोलणो नहीं आवे ।
मिश्र बोल्यांथी महा मोहणी कर्म बंधाये,
कूड़ कपट थी काम चलावे ॥ भवि० ॥ १७ ॥
आधा कर्मी स्थानक सेवे उघाड़े, पूछयां थी बोले कूड़ ।
त्यांरा श्रावक त्यांरी साख भरै छै, ते गया वहती रे पूर रे ॥भवि०॥१८॥
आधा कर्मी स्थानक सेवे, उघाड़े वले झूंठ बोले जांण २ ।
त्यांरा जैसा ही स्वामी तैसाही सेवक, निकल गयो जावक घांण ॥ १९ ॥
कोईक श्रावक त्यांरा भारी कर्मा, झूंठ बोलतां न डरे लिगार ।
आधा कर्मी ने निर्दोष कहे छै, ते डूब गया काली धार रे ॥भवि० ॥ २०॥
आधा कर्मी उदेसी भोगवे, तिण ने साध सरधे ते मिथ्याती ।
ठाणाँग मे दशमें ठाणे कहयो छे अर्थ,
मूंढे तणी मति जाणों वातो रे ॥ भवि० ॥ २१ ॥
आधा कर्मी उदेसी भोगवे ते छे,
भारी कर्मा सुध बुध बाहिरा जीव अज्ञानी,
क्यां मे पामें श्री जिन धर्मा रे ॥ भवि० ॥ २२ ॥
आधाकर्मी दोष सूत्र सुं बतायो, सूत्र में दोष अनेक ।
मोल रो लियो दोष कहुं छुं, ते सुणज्यो आण विवेक ॥भवि०॥२३॥

मोल रो लियो भोगवे तिण ने२, निश्चय कह्या अणाचारी ।
दशवैकालिक रे तीजे अध्ययने, शंका में जांणो लिगारी ॥भवि०॥२४॥
मोल रो लियो भोगवे तिण नें, भ्रष्ट कह्या भगवाने ।
दशवैकालिक रे छठे अध्ययने, निर्णय करो बुद्धि माने रे ॥भवि०॥२५॥
मोल रो लियो भोगवे तिणने, नरक गांमी कह्या भगवाने ।
उत्तराध्ययन रे बीसमें अध्ययनें, निर्णय करो बुद्धिमान रे ॥२६॥
मोल रो लियो भोगवे, तिण में छे मोटी खोड़ ।
आचारांग सूत्र पहिले श्रुत स्कन्धे, कह दिया भगवन्त चोर रे ॥ २७ ॥
मोल रो लियो भोगवे तिणरा, सुमति गुप्ति महाव्रत भांगा ।
निशीथ रे उगणीस में उद्देशे, कह्या व्रत विहुणा नागा रे ॥ २८ ॥
मोलरो लियो एक वार भोगवे, तिण ने चोमासी प्रायश्चित देणो ।
सदा नितरो नित ठेठ सुं भोगवे,
तिण नें प्रायश्चित रो कांई करणो रे ॥ भवि० ॥ २६ ॥
मोल रो लियो भोगवे, तिण ने सबलो दूषण लागे ।
सदा नितरो नित ठेठ सुं भोगवे, तिण ने प्रायश्चित रो कांई थागे ॥३०॥
मोल रो लियो दोष सूत्र सुं बताऊं, सूत्र में दोष अनेक ।
नित पिंड रो दोष कहुं छुं, सुणज्यो आण विवेक ॥ भवि०॥३१॥
नितरो नित एकण घर को बहरे, तिणनें निश्चय कह्या अणाचारी ।
दशवैकालिक रे तीजे अध्ययने, शंका में जांणो लिगारी रे ॥ भवि॥३२॥
नितरो नित एकण घर को बहरे, तिण ने भ्रष्ट कह्या भगवाने ।
दशवैकालिक रे छठे अध्ययने, जोई करो पिछांण रे ॥भवि० ॥३३॥
नितरो नित एकण घर को बहरे, तिणनें नरक गांमी कह्यो छे भगवान ।
दशवैकालिक रे छठे अध्ययने, निर्णय करो बुद्धिमान रे ॥भवि०॥३४॥

नितरो नित एकण घर को बहरे, तिण में छे मोटी खोड़।
आचारांग पहले श्रुतस्कन्धे, कह दिया भगवन्त चोर रे ॥भवि०॥३५॥
नितरो नित एकण घर को बहरे,
एक बार तिण ने चोमासी प्रायश्चित देणो।
सदा .नतरो नित ठेठ सु' बहरे, तिण ने प्रायश्चित रो कांई करणो रे ॥३६॥
नित रो नित एकण घर को बहरे, तिण ने सबलो दूषण लागे।
सदा नितरो नित ठेठ सु' बहरे, तिण ने प्रायश्चित रो कांई थागे ॥३७॥
भागल भेषधारी नितरो नित बहरे, एकण घर को आहार।
पू'छ्याथी पाधरो नहीं बोले, झू'ठ बोले विविध प्रकार रे ॥भवि०॥३८॥
भागल भेष धारी नितरो नित बहरे, एकण घर को आहार पांणी।
पूछ्यां थकी पाधरो नहीं बोले, झू'ठ बोले जांण जांणी रे ॥ ३९ ॥
आहार तणो संभोग न तोड़ो, ते पिण खावा न काजे।
एक मांडले रा आहार जुवा जुवा, करे छे निरलज्जा मूल न लाजे रे ॥४०॥

॥ ढाल इक्बीसमीं ॥

आधा कर्मी स्थानक मांहे साध रहवे, तो पहलो इम व्रत भांग्यो।
दया रहित कह्यो सूत्र भगवती में, अणन्ता जन्म मरण करसी आगो रे।
मुनिवर जीव दया व्रत पालो रे॥ १ ॥
सर्व सावद्य रा त्याग कहे तो, दूजो इम महाव्रत भांग्यो।
जे उहे कहवे स्थानक हमारे काज न कीध्यो,
तो कपट सहित झू'ठ लागे रे॥ २ ॥
जे जीव मुवां त्यांरो शरीर न आपे तो, अदत्त उण जीवां री लागे।
आज्ञा लोपी श्री अरिहन्त देव नी,
तिण सु' तीजो महाव्रत गयो भांगी रे॥ ३ ॥

थानक ने आपणो करी राखे, ममता रहे नित लागी ।
मठ वासी मठ मांहे वसे ज्यूं, पांचमो महाव्रत गयो भांगी रे ॥ ४ ॥
चोथो ने छठो ते तो किण विध भांग्या, आचार कुशीलियां ने लेखे ।
हिवे भागल फिरे साधने भेष में, तिण ने बुद्धिवन्त ज्ञान सूं पेखे रे ॥५॥
एक करण सुं उत्कृष्टे भांगे, हिंसा छ कायां री लागी ।
एक व्रत भांग्यां सुं उत्कृष्ट भांगे, व्रत छहुं गया भांगी ॥ ६ ॥
इण सुं तो दोष मोटा २ सेवे, साधां रा भेष मंझारो ।
ते चतुर विचक्षण जांण हो सेवे, त्यांने केम सरधे अणगारो ॥ ७ ॥
दोष वियालीस कह्या सूत्र मां, बावन कह्या अणाचार ।
ए दोष सेव्यां सेवायां, महाव्रत में पड़सी विगाड़ो रे ॥ ८ ॥
आचारांग रे बीजे अध्ययनें, छठो उदेशो निकालो ।
बचन सुण २ ने हिवे विमासो, मत करो आल पंपालो रे ॥ ९ ॥
कोई स्थानक निमित्त अर्थ देवे, तिणनें मुखसुं मति सरावो ।
आपस में छ काय जीवां ने सानी करी, जींव ने कांई मरावो रे ॥ १० ॥
स्थानक करावतां ने धर्म कहिने, भोला ने मत भरमावो ।
आप रहवा ने जाग्यां करणी, जीवां ने कांई मरावो ॥ ११ ॥
साधू काजे जीव हणे ते, आरे होसे भूंडा सुं भूंडो ।
जे साधु उण जाग्यां में रहसी, तो साधुपणो तिणरो डूब्यो ॥ १२ ॥
जिन स्थानक निमित्त अर्थ दियो तिणने, उतस्या जीवां रो उणने पापो ।
धर्म जांणो तो पाप अठारमों, होसी घणो संतापो ॥ १३ ॥
साधू काजे दड़ लीपे छपरा छावे, जीव अनेक विधी मारे ।
आप डूबे वलि बधे जीवां सुं, गुरां रो जन्म बिगाड़े ॥ १४ ॥
थे धर्म ठिकाणो जीव हणे तो, दया किसी थोड़ पालो ।
कुगुरां रा भरमाविया थे, आत्म ने कांई लगावो कालो ॥ १५ ॥

रात अंधारी ने जीव न सूझे, तो आंड़ा मत जड़ो किंवाड़ो।
छ कायारा पीयर वाजो तो, हांथ सुं जीव मत मारो ॥ १६ ॥
जो थांने सांची सीख न लागे तो, मत लेवो साधवियां रो शरणो।
साधां नें रहणो द्वार उघाड़े, साधवियां ने चाल्यो छे जड़नो ॥ १७ ॥
गृहस्थ साथे मेल्यो संदेसो, जब मारी जावे छे कायो रे।
उजोयां बिना वेहवे मारग में, एवो मत करो अन्यायो ॥ १८ ॥
ए साध पणो थांसुं पलतो न दीसे, तो श्रावक नाम धरावो।
शक्ति सारू व्रत चोखा पालो, दूषण मति लगावो ॥ १६ ॥
आचार थांसूं पलतो न दीसे तो, आरा रे माथे मति न्हाखो।
भगवन्त ना केड़ायत वाजो, तो झूंठ बोलतां कियां न शंको ॥ २० ॥
व्रत विहूणा साधु बाजो, होय रही लोकां में पूजा।
खाली बादल ज्यूं थोथा वाजो, ओ मोने अचरज आवे ॥ २१ ॥
इत्यादिक आचार मांहिने, पूरा केम कुहाओ।
हिंसा मांहि जो धर्म थापो, ते पिण खबर न कायो ॥ २२ ॥
तेलो करे तिण ने तीन दिन, कोई ऊंना पानी कर पावे।
तिण ने तो आगलां री सरधारे लेखे, एकन्त पाप बतावे ॥ २३ ॥
चोथे दिन आरम्भ करीने, छ काया हणी ने जिमावो।
तिण में मिश्र धर्म प्ररूप्यो, तो ओ किण विध मिल से न्यायो ॥ २४ ॥
तेला करे तिण नें ऊना पांणी प्याया, एकन्त पाप बतावे।
चोथे दिन आरंभ करीने जिमावे, तिण में मिश्र कियां थी थावे ॥ २५ ॥
मिश्र मांहि धर्म कहवे, तिणरी सरधा रे लेखे।
ओ घणो सल कहवायो। हिंसा मांहि धर्म स्थापो तो,
सूत्र सामो जाओ रे ॥ २६ ॥

अर्थ अनर्थ रे धर्म न काजे, जीव हणें मंदबुद्धि ।
धर्म काजे जीव हणे, त्यांरी सरधा ऊंधी सुं ऊंधी ॥ २७ ॥
समूचे आचार साधूरो बतायो, तिणमें राग द्वेष मति आंणो ।
इये वचन सुण सुण हिये विमासो, मत करो खांचा तांणो ॥ २८ ॥
प्रीत पुरांणी थांसु पहली, तिण सुं भिन्न भिन्न कर समझाऊं ।
जे थारे मन शंका हुवे तो, सूत्र काढ बताऊं ॥ २९ ॥
सम्मत अठारह बरस तैतीसे, मेड़ता शहर मंझारो ।
वैसाख वद दशमी दिन थांने, सीख दीनी हित कारो ॥ ३० ॥

॥ ढाल बाईसमीं ॥

(वियालीस दोषां की लिखी छै)

तीजी सुमति छै एखणा आहार तणां अधिकारो ए ।
सांचंउणी शुद्ध साध ने नीग्रथी तिरे संसारा है ।
साधू ने लेणो सूझतो ॥ १ ॥
द्रव्य क्षेत्र काल भावो ए सांचे मन शुद्ध पालिज्यो,
जो होवे मुक्ति री चाहो रे ॥ २ ॥
साधु अर्थे जो कियो आधा कर्मी आहारो ए ।
उदेसीक नहिं भोगवे जो देवे भेपियो तयारो ए ॥ ३ ॥
पोती क्रम सीतल मलो, ते छै आहार अशुद्धो ए ।
मिश्र सुं मन नहिं करे त्यारी, निर्मल ल्हेस्यां ने बुद्धो ए ॥ ४ ॥
थापी राख्यो साधू कारणे, पावणो करे आगो पाछो ए ।
अंधारा सुं करे चानणो, एहिवा मुनि ने लेवे वहरे त्यांरो ए ॥ ५ ॥
मोल लेई ने ते दिया, उधारो जांचे जांणी ए ।
बदला भेलावे भेलो कोई, आंणे सामो आंणी ए ॥ ६ ॥

सारा किंवाड़ खोली देवे, ऊंची अब को ठांमो ए ।
निवल आगे कीसी न एक, सीरी आपें तामों ए ॥ ७ ॥
आंधण में डरे घणां, दोष हुवा छे सोला ए ।
लगावे शुद्ध साधने कोई, गृहस्थी होवे भोलो ए ॥ ८ ॥
ऊभी सती दातार नी, रमावे छे बालो ए ।
जाणींक आहार देसी भलो, वांधे पटेनी पोलो ए ।
यो मारग नहीं साधरो ॥ ९ ॥
बेटा बेटी मा बाप, री स्त्री ने भरतारो ए ।
सासु बहु सगा तणा कहे छे समाचारो ए ॥ १० ॥
जातो जंणावे आपणी, दीन दयावन थावे रे ।
आहार आयो नहीं मारो ए, मुंढो दे कुमलायो हे ॥ ११ ॥
लाभ अलाभ भाषे भलो, आहार छै सखरो एं ।
आपो बिन उलखायां बिना, इसड़ो साधुने न होयो होयो ॥ सा० ॥१२॥
औषध भेषज करे क्रोधी देवे आपो ए ।
लड़ें झगड़ें देवे गालियां, ज्ञानी कह्यो यो पापो हे ॥ सा० ॥ १३ ॥
मान माया लोभे करी, दूषण हुवा दसों ए ।
आगे पाछे दातार नो करे, घणां जसो हे ॥ यो० ॥ १४ ॥
भोज किया बिड़दावली, बोले चारण भाटो ए ।
अण दिष्या ओगण करे, एहिवो उघट घाटो ए ॥ यो० ॥ १५ ॥
विघा फोड़वे कामणादिक करे, मन्तर तन्तर वेचूनो ए ।
संजोग मेले सामठा, ईसड़ो करे खूनो ए ॥ यो० ॥ १६ ॥
उपकरण रा दोष ते कह्या, गलावे ते गर्भो यो ।
उत्तम ते नही आदरे, साधू टाले सरब ए ॥ यो० ॥ १७ ॥

साधू ने शंक ऊपजे, अथवा उपजे दातारो।
हाथ खरड़ा ना होवे सचित सुं नहीं लेवे अणगारो ए॥ यो० ॥ १८॥
सचित उपर अशनादिक धरियो, सचित ढांकण रो ताही ए।
दातार आंधो ने पांगलो, मिश्र भेलो थायो ए॥ यो० ॥ १९॥
पूरो सस्त्र ताहि पर गम्मो, नीलो आंगण होयो ए।
ल्यावे तड़का पाड़तो, दोष दश जोयो हे॥ यो० ॥ २०॥
खेत्र थकी दोय कोस थी, आधो ले जावे खांची हे।
काल थको तीजो पहर उलंग दे मांढलारा भेद पांचो हे॥ यो० ॥ २१॥
जिह्वा रो लोलुप थकी, मेले आहार संजोगो हे।
भलो मिल्यां राजी हुवे, भूंडो मिल्यां सोगो हे॥ यो० ॥ २२॥
ताकी ताकी जावे गोचरी, ल्यावे ताजा मालो ए।
निरस ऊपर निजर नहीं, कुंदो वांणी रह्यो लालो ए॥ यो० ॥ २३॥
मारी आहार भली करे, खावे ठाड़ो ठूंडी ए।
अण मिलियां बकतो फिरे, सांचलोयां भांडो ए॥ यो० ॥ २४॥
वेसकर भलो घालियो, भलो दियो बघारो ए।
तीवण में ताजी तरकारियां, वखाणे छिम कारो ए॥ यो० ॥ २४॥
ताजा आहार भली तरे, सराहि २ खायो ए।
भगवती सूत्र मे इम कह्यो, चारित्र कोयला थायो ए॥ यो० ॥ २६॥
निरस आहार तरकारी तेहमें, नहीं मिरचा ने लूणों ए।
चारित्र में निकले धूवो खाय, माथा धूणों ए होयो॥ यो० ॥ २७॥
छ कारण छोड़ आहार ने, छ कारण ले आहारो ए।
हर्ष शोक आणे नहीं, पाले संयम भारो हे॥ यो० ॥ २८॥
वस्त्र पात्र सेज्या वले, लेवे थोड़ा सो आहारो हे।
साधू ते शुद्ध भोगवे, धन २ ते अणगारो ए॥ यो० ॥ २९॥

पांय सुमति आराधे जो, तीन गुप्ति आराधे ए ।
जो सुख पांमे सासतां, वरते सदा समाधों ए । यो मारग छे साधांरो ॥३०॥

॥ ढाल तेइसवीं ॥

देव तणो आचार न जांणे, गुरु की खबर न कांई रे,
धर्म तणो मर्म न जांणे, रांखे घणी तस कांई रे ।
प्राणी समकित किण विध आई रे ॥ १ ॥

नव तत्व रा तो ने भेद न आवे, कूड़ी करे लपराई रे ।
धर्म तणो धोरी होय बैठ्यो, तो में दीसे घणी भोलाई रे ।
प्राणी समकित ॥ २ ॥

जीव न जांणे अजीव न जांणे, पुन की खबर न कांई रे ।
पापतणीं प्रकृति नहिं धारी, तूं कीधी घणी लड़ाई रे ॥ प्राणी ॥ ३ ॥

आ सर्व नाला छूटयां दखे, सम्बर समता ने आइ रे ।
निर्जरा तणो तूं निर्णय न कीध्यो, थारी कठे गई चतुराई रे ॥प्राणी ॥४॥

वंध मोक्ष नो बीउ नो जोड़ो, तिणरी खबर न कांईं रे ।
समदृष्टि तूं नाम धरावे, तूंने कुगुरां दियो भरमाई रे ॥ प्राणी ॥ ५ ॥

हांथ जोड़ी ने समकित लेवे, कुगुरां रा पासे जाई रे ।
अजाण पणे मीट्यो नहीं अन्तर, मिथ्या दे वोसराई रे ॥ प्राणी॥ ६ ॥

सांग धारयां ने साधज सरधे, पड़े पगां में जाई रे ।
तिखुत्ता सुं करे छे वन्दना, मन मे हर्षज थाई रे ॥प्राणी० ॥ ७ ॥

सावज करणी सुं पापज लागे, तिणरी खवर न कांई ।
निर्वद्य करणी धर्मज पुन्य, तेपण अटक न आई रे ॥ प्राणी ॥ ८ ॥

पोथी पाना काढ ने बैठो, भोला ने भरमाई ।
कूड कपट कर फ़ंद में न्हाखे, माड़ी छै पेट भराई रे ॥ प्राणी ॥ ९ ॥

सारां में तूं वड़को वाजै, मनमे मगज न माई रे।
न्याय मार्ग थारे किणविध आवे, कुगुरां दियो डंक लगाई रे ॥ १० ॥
पुण्य धर्म रो नहीं निमेड़ा, अकल गई लपराई रे।
जे तूने जाणपणां को निर्णय पूंछे, उलटी मांडे लड़ाई रे ॥ ११ ॥
द्रव्य क्षेत्र काल भाव न धारिया, गुरु बिन वस्तु न काई रे।
चार निखेपां रो निर्णय कीध्यो, मिनष जमारो पाई रे ॥ प्राण॥ १२ ॥
करन जोग भांगा नहिं धारया, व्रतां री खबर न कोई रे।
अव्रत मांहि धर्म प्ररूपे, यो नरक री साई रे ॥ प्राणी ॥ १३ ॥
न्याय वातां थारे किण विध आवे, थोथो करे वड़ाई रे।
आज्ञा वारे धर्म प्ररूपे, खोटा चोच लगाई रे ॥ प्राणी ॥ १४ ॥
सरधा जिनेश्वर भाख्यो धर्म, सूत्र मां दियो जिनाई रे।
चतुर होय तो निर्णय कीज्यो, सत गुरु के संग पाई रे ॥ प्राणी ॥ १५ ॥
जीव अजीव रा छे द्रव्य कीध्या, नव कीध्या न्याय बताई रे।
समदृष्टि ओलखने आभ्यन्तर, जांणे निशंक देवड़ी आई रे।
प्राणी समकित किणविध आई रे ॥ १६ ॥